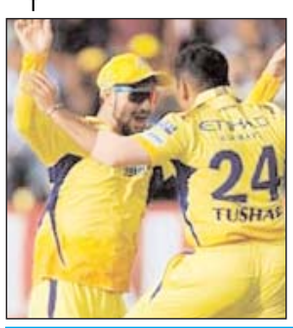

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

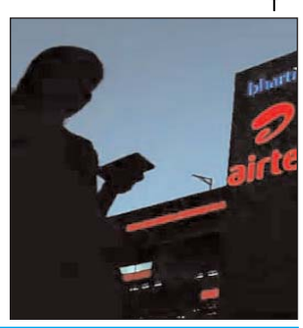

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 | चेन्नई ने पंजाब को 28 रन से हराया | सम्पादकीय | आनंद बक्शी के अनसुने नग्में | एयरटेल की वैल्यू एक हफ्ते में 27,636 करोड़ कम हुई | 5

वर्ष 18 ● अंक 80 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online भोपाल, सोमवार 06 मई 2024 email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com, hindustanexpresshe@Gmail.com मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

रामलला के दर्शन के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया रोड शो

अवध की नौ लोकसभा सीटों को साधा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अयोध्या में भगवान रामलला का दर्शन पूजन करने के बाद सुग्रीव किला से रोड शो की शुरुआत की। प्रधानमंत्री मोदी उत्तर प्रदेश में इटावा और धौरहरा की चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने के बाद शाम को अयोध्या हवाई अड्डे पहुंचे जहां से सड़क मार्ग से भगवान श्रीराम के मंदिर पहुंचे।

मोदी ने अयोध्या से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार व सांसद लल्लू सिंह के समर्थन में फूलों और बैनर से सजे एक खुले वाहन (रथ) पर सवार होकर रोड शो शुरू किया और वाहन पर उनके साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और लल्लू सिंह मौजूद थे। मोदी राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य द्वार के पास सुग्रीव किला से रथ पर सवार हुए। प्रधानमंत्री के अभिनंदन व स्वागत के लिए राम पथ के दोनों तरफ जनता काफी पहले से उनका इंतजार कर रही थी। इस दौरान उनकी सुरक्षा को लेकर व्यापक इंतजाम किये गये हैं।

भाजपा के एक नेता ने बताया कि सुग्रीव किला से लता मंगेशकर चौक तक करीब दो किलोमीटर की दूरी के बीच मोदी के रोड शो के लिए 75 ब्लॉक बनाये गये हैं जहां हर वर्ग के लोग प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए मौजूद हैं। इसके पहले मोदी ने राम मंदिर में भगवान रामलला का दर्शन पूजन किया और पूरी तरह लेटकर आशीर्वाद मांगा। मोदी मंदिर में करीब 15 मिनट रहे और इस दौरान मंत्रोच्चार के बीच उन्होंने पूजन और आरती भी की। रोड शो के लिए मोदी का रथ जैसे ही आगे बढ़ा नारों से वातावरण गूंज उठा। जय राम, हर हर मोदी-घर घर मोदी, फिर से मोदी सरकार-अबकी चार सौ पार जैसे नारों के बीच उमड़ी भीड़ ने मोदी पर फूलों की बारिश कर दी। उनके स्वागत में जगह जगह सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। बाल कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। साधु संत भी सड़क के किनारे खड़े होकर मोदी के स्वागत में उत्साहित दिखे। मोदी के स्वागत में बच्चे, बड़े और महिलाएं भी मौजूद रहीं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में इस वर्ष 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गयी।

तेलुगु की जगह अंग्रेजी को प्राथमिक शिक्षा में लाना चाहती है जगन मोहन सरकार: अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को आंध्र प्रदेश के धर्मावरम में कहा, जगन मोहन रेड्डी की सरकार तेलुगु भाषा को खत्म करना चाहती है। उसकी जगह अंग्रेजी को प्राथमिक शिक्षा में लाना चाहती है। उन्होंने आगे कहा कि हमें अमरावती को फिर से आंध्र प्रदेश की राजधानी बनाना है। जगन मोहन रेड्डी की सरकार वादा खिलाफी की सरकार है। उन्होंने जो भी वादा किया, उसे कभी पूरा नहीं किया। उन्होंने भ्रष्टाचार, लूट और माफियाओं के कारण आंध्र प्रदेश की स्थिति को खराब किया है।शाह ने आगे कहा कि जगन मोहन रेड्डी ने विकास की गाड़ी को पटरी से उतार दिया है। आंध्र प्रदेश में विकास शून्य है, निवेश स्थिर है और बेरोजगारी अपने चरम पर है। बुनियादी परियोजनाएं रुकी हुई हैं, लेकिन भू-माफियाओं का काम जोरों पर चल रहा है। आंध्र प्रदेश की संस्कृति का सम्मान करना और उसे बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य भी है और मिशन भी। हम भगवान तिरूपति बालाजी से जुड़ी हर चीज की पवित्रता बहाल करेंगे।

यह चुनाव श्रीराम विरोधी और सनातनी संस्कृति के बीच में है : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

क्षेत्र से मेरा और मेरे परिवार का आत्मीय संबंध : ज्योतिरादित्य सिंधिया

सागर, गुना, राजगढ़। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में प्रचार के अंतिम दिन सागर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्रीमती लता वानखेड़े के समर्थन में सुरखी विधानसभा के राहतगढ़ में, गुना लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी व केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में मुंगावली विधानसभा में, राजगढ़ लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री रोडमल नगर के समर्थन में राजगढ़, राघौगढ़ और ब्यावरा विधानसभा में रोड शो किया एवं आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि 500 वर्षों तक भगवान श्रीराम टेंट में बैठे रहे। इसके बाद कांग्रेस का राज आया तो इन्होंने भी 70 सालों तक भगवान श्रीराम को टेंट में बैठाए रखा और जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने उनकी प्राण-प्रतिष्ठा का रास्ता खोला और मंदिर बनवाया तो पूरे देश में खुशियां मनाई गईं। लोग अयोध्या पहुंचे और जो अयोध्या नहीं पहुंचे उन्होंने भी अपने घरों में दीपक जलाया, लेकिन कांग्रेस और इसके घमंडिया गठबंधन ने इस दिन भी दुख मनाया। ये हमेशा से श्रीराम मंदिर के निर्माण में अड़ंगा लगाते रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की आंधी में वर्ष 2014 में राहुल गांधी लांच हुए थे, लेकिन वे भी हवा में उड़ गए। कांग्रेस पार्टी को केवल एक ही परिवार नजर आता है, लेकिन भाजपा ''सबका साथ-सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' की बात करती है। इस दौरान मुंगावली में आयोजित जनसभा को केंद्रीय मंत्री व भाजपा प्रत्याशी श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी जनसभा को संबोधित किया।

यह चुनाव श्रीराम विरोधियों को सबक सिखाने का है-

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी 70 सालों तक श्रीराम मंदिर के निर्माण में अड़ंगे लगाती रही। ये सनातन धर्म और सनातन संस्कृति की विरोधी है। इस बार का चुनाव भाजपा और कांग्रेस का चुनाव नहीं है, बल्कि इन राम विरोधियों और सनातन धर्म के बीच का चुनाव है। इस चुनाव में इन राम विरोधियों को सबक सिखाना है। भगवान श्रीराम के उस कालखंड को याद करें तो देखने में आता है कि भगवान ने भी कई परेशानियां उठाई, लेकिन भगवान की चिंताओं को दूर करने के लिए श्री हनुमान जी आए थे। अब देश की सुरक्षा और सनातन धर्म को बचाने के लिए श्री हनुमान भक्त प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी आए हैं। उन्होंने अयोध्या में भगवान श्रीराम को टेंट से निकालकर गर्भगृह में प्राण-प्रतिष्ठा की है। अब भगवान श्रीराम अपने गर्भगृह में मुस्कुरा रहे हैं। कांग्रेस ने हमेशा से श्रीराम के मंदिर में अड़ंगे लगाए अब इनको सबक सिखाने का समय आ गया है।

राजगढ़ का चुनाव एक तरफ और पूरे देश का चुनाव एक तरफ-

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस बार का चुनाव खास है। इसमें राजगढ़ का चुनाव तो सबसे खास है, क्योंकि राजगढ़ का चुनाव एक तरफ और पूरे देश का चुनाव एक तरफ है। इस बार पूरे देश की नजर राजगढ़ के चुनाव पर टिकी हुई है। राजगढ़ में भी मुकाबला श्रीराम विरोधी व आतंकवादियों को सम्मान देने वाले मिस्टर बंटाढार और सनातन की रक्षा, विकास का है। मिस्टर बंटाढार ने 10 साल तक प्रदेश में सरकार चलाई, लेकिन मध्यप्रदेश का पूरी तरह से बट्टा बैठा दिया। उन्होंने मध्यप्रदेश को बर्बाद कर दिया, लेकिन बाद में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने प्रदेश को विकास की राह पर लाकर खड़ा किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जैसे रामायण काल में लक्ष्मण रेखा खीचीं हुई थी, लेकिन इसके बाद भी सीता माता का अपहरण हो गया था। राजगढ़ में भी लक्ष्मण रेखा खीचीं हुई है और यहां पर एक बाबा वेश बदलकर, सनातन धर्म का चोला ओढ़कर, पैदल चलकर, भांति-भांति के रंग बदलकर वोट मांगने आएंगे, लेकिन उनके जाल में नहीं फंसना है। उनकी बातों में नहीं आना है।

मोदीजी की आंधी में लांच हुए थे राहुल गांधी-

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि वर्ष 2014 में जब देश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी की आंधी थी उस समय कांग्रेस ने राहुल गांधी को लांच किया था, लेकिन राहुल गांधी उस आंधी में उड़ गए। इसके बाद उन्हें 2019 में फिर से रिलांच किया गया, लेकिन इस बार भी अमेठी से उड़ गए। अब तो राहुल गांधी वहां से मैदान छोड़कर ही भाग गए और केरल में जाकर रूके, लेकिन अब वहां से भी भागकर वापस रायबरेली आ गए हैं। योद्धा तो वह होता है जो मैदान में डटकर मुकाबला करे। हार-जीत तो होती है, लेकिन हार से पहले ही भागने वाला तो भगोड़ा ही कहलाता है। राहुल गांधी अपनी नादानियों के कारण से अपनी और पार्टी की फजीहत कराते हैं।

शेष पृष्ठ 5 पर.....

क्षेत्र-जाति नहीं राष्ट्र के निर्माण का है लोकसभा चुनाव: नरेन्द्र सिंह तोमर

मप्र विधानसभा अध्यक्ष तोमर ने सुमावली के गलेथा, पोरसा के धनेटा में जन चौपाल कार्यक्रम में कहा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि पंचायत, नगर पालिका और विधानसभा चुनाव क्षेत्र के विकास की दिशा तय करने वाले होते है। जबकि लोकसभा चुनाव राष्ट्र के निर्माण की दिशा को तय करता है। पीएम नरेन्द्र मोदी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से दुनिया में भारत का मान बढ़ाया है।

मप्र विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर, मुरैना संसदीय सीट से भाजपा प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर के समर्थन में रविवार को सुमावली विधानसभा क्षेत्र के गलेथा एवं अंबाह विस के धनेटा गांव में जन चौपाल कार्यक्रमों में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित कर रहे थे। श्री तोमर ने कहा कि कांग्रेस एडजस्टमेंट की राजनीति करती थी। केन्द्र में भाजपा की सरकार बनने के

बाद पीएम नरेन्द्र मोदी ने दुनिया के देशों के सामने यह साबित किया कि वे वही करेंगे जो देशहित में होगा। यही वजह है कि आज दुनिया भर के देश भारत का लोहा मान रहे है। श्री तोमर ने कहा कि कांग्रेस के शासन में आतंकवाद चरम पर था। हालात यह थे कि कश्मीर में तिरंगा नहीं फहरा सकते थे, आतंकी आकर तिरंगा को रौंदते और पाकिस्तान का झण्डा फहराकर चले जाते थे। जिसकी वजह सेना के हाथ बंधे होना था। पीएम नरेन्द्र मोदी ने सेना को खुली छूट देकर एक गोली का जबाव दस गोली से देने कहा। नतीजा आज कश्मीर में तिरंगा फहरा रहा है और आतंकी घुटने टेकने पर मजबूर है। श्री तोमर ने कहा कि किसी भी विजय के पीछे संघर्ष और तपस्या होती है, चुनाव में जितना पसीना बहता है, वो विजय के नाम से परिणाम बनकर निकलता है। जन चौपाल कार्यक्रमों में भाजपा प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर, हरिश्चंद्र सिकरवार, गजेन्द्र परमार, सोबरन सिंह गुर्जा, भानुप्रताप सिंह चिंटू, डॉ. अजब सिंह सिकरवार, अरविंद सिकरवार गुडुआ, मनोज गुर्जा, विजेन्द्र सिंह तोमर, जिला मीडिया प्रभारी नीरज सिंह भदौरिया आदि उपस्थित थे।

रोहित वेमुला मामले में कांग्रेस ने समाज में वैमनस्यता फैलाने का षड्यंत्र रचा : व्ही.डी. शर्मा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने ग्वालियर के तानसेन होटल में पत्रकार-वार्ता को संबोधित किया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने रविवार को ग्वालियर में आयोजित पत्रकार-वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि लोकसभा का यह चुनाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के संकल्प का चुनाव है। ये 2047 के विकसित भारत, विकास और गरीब कल्याण तथा करोड़ों गरीबों के चेहरों पर खुशियां सजाने के संकल्प का चुनाव है। ये भ्रष्टाचार और आतंकवाद से मुक्ति का चुनाव है। ये चुनाव देशद्रोही मानसिकता वालों को संरक्षण देने वाली ताकतों के खिलाफ चुनाव है।

नेता-कार्यकर्ता निराश, मैदान से भाग रहे कांग्रेस प्रत्याशी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि लोकसभा चुनाव के पहले और दूसरे चरण के बारे में जो फीडबैक मिला है, उसके अनुसार मतदान का प्रतिशत कुछ कम रहा है। लेकिन इसकी वजह यह है कि कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता निराशा में हैं। उन्हें लगने लगा है कि सरकार भाजपा की बनेगी

और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। इसलिए वो इतने निराश हैं कि उन्होंने वोट डालना और डलवाना भी उचित नहीं समझा। उनके नेता और कार्यकर्ता निराश हैं तथा प्रत्याशी मैदान छोड़कर भाग रहे हैं। श्री शर्मा ने कहा कि अगले दो चरणों के चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी और अधिक ताकत से यह प्रयास कर रही है कि समाज के सभी वर्गों के लोग अधिक से अधिक मतदान करें। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर ऐतिहासिक बहुमत से जीत हासिल करेगी। हम छिंदवाड़ा भी जीतेंगे और राजगढ़ में मि. बंटाढार की जमानत जब्त होगी।

देश और दलितों से छल के लिए माफी मांगें राहुल गांधी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि रोहित वेमुला के मामले को लेकर कांग्रेस पार्टी और उसके नेता राहुल गांधी ने किस तरह की नौटंकी की थी, पूरा देश जानता है। अब तेलंगाना पुलिस ने जांच के आधार पर यह माना है कि रोहित वेमुला अनुसूचित जाति का व्यक्ति था ही नहीं। इससे साफ हो गया है कि कांग्रेस पार्टी दलितों की भावनाओं से खेलना चाहती है। उन्होंने कहा कि रोहित वेमुला मामले में कांग्रेस ने समाज में वैमनस्यता फैलाने का षड्यंत्र रचा है, इसका खुलासा तेलंगाना पुलिस की जांच में हो चुका है। इस मामले को

शेष पृष्ठ 6 पर...

राहुल गांधी में आग नहीं, लेकिन कांग्रेस हिंदू-मुस्लिमों को बांटने की कोशिश कर आग से जरूर खेल रही है - राजनाथ सिंह

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि राहुल गांधी में कोई आग नहीं है, लेकिन कांग्रेस चुनावी फायदे के लिए हिंदू-मुस्लिम को बांटने की कोशिश करके आग से जरूर खेल रही है। कांग्रेस धार्मिक आधार पर तनाव पैदा करके सामाजिक सौहार्द बिगाड़ रही है। मुस्लिमों को केवल वोट बैंक के रूप में देखती है।

इंटरव्यू में रक्षा मंत्री ने राहुल गांधी और कांग्रेस के अलावा लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत, चीन से सीमा विवाद, पाकिस्तान के आतंकवाद और पीओके पर कब्जे को लेकर भी बात की। उन्होंने दावा किया कि जम्मू कश्मीर में जल्द ही हालात पूरी तरह सामान्य हो जाएंगे, साथ ही वहां विधानसभा चुनाव भी होंगे, हालांकि इसका समय गृह मंत्रालय तय करेगा।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बड़वानी में कहा था कि जिस तरह पूरी दुनिया से डायनासोर विलुप्त हो गए, मुझे लगता है कांग्रेस भी वैसे ही विलुप्त हो जाएगी। सालों बाद बच्चों के सामने इनका नाम लेंगे तो बच्चे भी पूछेंगे कि कौन कांग्रेस। रक्षा मंत्री बड़वानी में खरगोन लोकसभा सीट से बीजेपी प्रत्याशी गजेंद्र सिंह पटेल के समर्थन में सभा करने पहुंचे थे।.

कश्मीर में आतंकी हमले में एयरफोर्स जवान शहीद, पुंछ में सुरक्षाबलों के वाहनों पर 4 आतंकियों ने फायरिंग की

आर.एन.एस.

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में शनिवार शाम (4 मई) एयरफोर्स के जवानों पर हुए आतंकी हमले में एक जवान शहीद हो गया। हमले में पांच जवान घायल हुए थे, जिन्हें एयरलिफ्ट कर उधमपुर के अस्पताल ले जाया गया। इलाज के दौरान एक जवान की मौत हो गई। एक की हालत गंभीर है। हमला पुंछ के शाहसितार इलाके में शनिवार शाम 6 बजकर 15 मिनट पर हुआ। 4 आतंकियों ने सनाई टॉप जा रही सुरक्षाबलों की दो गाड़ियों पर फायरिंग की। इसमें से एक वाहन एयरफोर्स का था। हमले के बाद आतंकवादी जंगल में भाग गए। उनके हाथ में एके असॉल्ट राइफल्स थी। एयरफोर्स की स्पेशल गरुड़ फोर्स, आर्मी और जम्मू-कश्मीर पुलिस सर्च ऑपरेशन कर रही हैं। पुंछ, राजौरी-अनंतनाग लोकसभा सीट में आता है। यहां छठे फेज में 25 मई को वोटिंग है।

भाजपा जनता की सेवा करती है, कांग्रेस अपने लिए अवसर तलाशती है: व्ही.डी. शर्मा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के प्रचार के अंतिम दिन ग्वालियर में पत्रकार-वार्ता को संबोधित करने के साथ डबरा और भिंड में रोड कर मुरैना के ग्राम सुरजनपुर में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित किया

मुरैना/भिण्ड/डबरा। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने मुरैना जिले के ग्राम सुरजनपुर में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बीते दस वर्षों में हर गरीब का जीवन बदलने का कार्य किया है। देश के गांव-गांव तक विकास को सुनिश्चित किया है। भाजपा जनता की सेवा करती है, वहीं कांग्रेस और उसके नेता अपने लिए ही अवसर तलाशते रहते हैं। मुरैना से कांग्रेस के प्रत्याशी का परिवार भी जनता की सेवा नहीं अपने लिए अवसर तलाशता है। कांग्रेस की पूरे देश में ही हालात खराब हैं। कांग्रेस पार्टी ने पहले खजुराहो लोकसभा में मैदान छो?ा, इसके बाद इंदौर प्रत्याशी ने अपना नामांकन वापस ले लिया और अब उ?ासा के पुरी लोकसभा सीट की प्रत्याशी ने भी चुनाव ल?ने से मना कर दिया है।

भाजपा सांसद क्षेत्र में विकास सुनिश्चित करेंगे

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि यह चुनाव कई मायनों में अलग प्रकार का चुनाव है। यह चुनाव किसी प्रत्याशी का नहीं, भाजपा में प्रत्याशी को निमित्त मात्र का होता है। यह चुनाव श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाकर देश को 2047 तक वैश्विक महाशक्ति बनाने का चुनाव है। कांग्रेस पार्टी और उसके नेता जनता की सेवा के लिए राजनीति नहीं करते। भाजपा जनता और देश की सेवा करने के लिए कार्य करती है। हमारे लिए राष्ट्र प्रथम होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को विकसित बनाने के साथ विश्व गुरू बनाने के

शेष पृष्ठ 5 पर....

शिवराज सिंह चौहान की जीत का इतिहास स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगाः राजाराम शिवहरे

भारत को विश्व गुरु बनाने हेतु नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है

विदिशा लोकसभा प्रभारी राजाराम शिवहरे ने लगाया बैठकों का शतक

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

विदिशा। विदिशा संसदीय क्षेत्र की चर्चा मध्यप्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे देश भर में हैं। इसका कारण यहाँ से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान हैं। महिला कल्याण की योजनाओं के साथ मामा के नाम से शिवराज विख्यात हैं। वे मुख्यमंत्री बनने के पूर्व पाँच बार विदिशा संसदीय क्षेत्र का केन्द्र में प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। विदिशा भाजपा के साथ शिवराज जी का भी गढ़ है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि शिवराज सिंह की जीत सुनिश्चित है। भाजपा का संगठन उन्हें रिकार्ड मतों से जिताने प्रयासरत् है। इसी तारतम्य में भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश मंत्री राजाराम शिवहरे ने विदिशा संसदीय क्षेत्र का मोर्चा सम्हालते हुए शिवराज सिंह को 11 लाख से अधिक मतों से विजयी बनाने के लक्ष्य को पूरा करते हुए बैठकों का शतक लगा दिया है। उन्होंने न केवल पिछड़ा वर्ग मोर्चा के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक ली अपितु सभी पिछड़ा वर्ग में सम्मिलित समाज व समाज के मुखियाओं को लेकर लगभग सौ सामाजिक बैठके भी की हैं। राजाराम शिवहरे ने शिवराज सिंह को सर्वाधिक मतों से विजयी बनाने के साथ राष्ट्र व लोकतंत्र की मजबूती के लिए सभी से मतदान अवश्य करने की भी अपील की है। उल्लेखनीय है कि राजाराम शिवहरे विदिशा लोकसभा के साथ-साथ नर्मदापुरम संभाग भाजपा के प्रभारी भी हैं। उन्होंने बताया कि चुनाव अभियान को लेकर संगठन के शीर्ष नेताओं व प्रदेश स्तर पर बनी कार्ययोजना पर कार्य कर रहे हैं। स्थानीय स्तर पर रणनीति तैयार कर प्रत्येक पदाधिकारी को पाँच से दस परिवारों में संपर्क कर पीले चावल देकर मतदान का संकल्प कराया है। जनसंपर्क के दौरान केन्द्र व प्रदेश सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को जनता के सम्मुख रखा जा रहा है। श्री शिवहरे ने कहा कि राष्ट्र एवं सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति की रक्षा के साथ आतंकवादी संगठनों एवं भ्रष्टाचारियों के सफाए के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाना जरूरी है। राजाराम शिवहरे के नेतृत्व में पिछड़ा वर्ग मोर्चा ने चार जिले विदिशा, रायसेन सीहोर और देवास में बैठकों का आयोजन किया है। इस तरह सभी 8 विधानसभा क्षेत्र विदिशा, गंजबासौदा, सांची, सिलवानी, भोजपुर, बुधनी, इछावर, खातेगांव, एवं सभी मण्डल में लगातार संपर्क कर शिवराज सिंह चौहान की जीत को स्वर्ण अक्षरों में लिखवाने के लिए तन, मन, धन से समर्पित होकर 100 प्रतिशत मतदान भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में कराने हेतु अपनी पूरी ताकत लगा रहे हैं उनके साथ पिछड़ा वर्ग मोर्चा के सभी जिला अध्यक्ष बनवीर चंद्रवंशी,निर्पत सिंह कुशवाहा, अजय जाट, जुगनू गोस्वामी एवं जिले के सभी पदाधिकारी मण्डलों के सभी अध्यक्ष एवं मण्डल के सभी पदाधिकारी पूरे समर्पण भाव से कार्य को अंजाम दे रहे हैं। ताकि शिवराज सिंह चौहान जी को 11 लाख से अधिक मतों से विजयी बनाया जा सके।

बैठकों में वक्ता के रूप में भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय, विधायक प्रदीप पटेल, विधायक संदीप जायसवाल, विनय पांडे, भोपाल नगर निगम पूर्व अध्यक्ष सुरजीत सिंह चौहान आदि का विशेष मार्ग-दर्शन प्राप्त हुआ।

प्रमुख बैठकों में श्रीमती साधना सिंह चौहान राष्ट्रीय अध्यक्ष किरार समाज, विदिशा लोकसभा के सहप्रभारी हरिसिंह लोधी, सुरेंद्र सिंह चौहान, नरेश यादव, प्रेम नारायण विश्वकर्मा, सत्यपाल कुशवाहा, रामकिशोर नंदवंशी जिला अध्यक्ष वनवीर चंद्रवंशी, निरस्त सिंह, अजय जाट, जुगनू गोस्वामी, अरविंद चौहान, संतोष लोधी, शिवकुमार चौधरी, होशियार सिंह पटेल, रघुवीर मीणा,मुकेश भावसार, अशोक चौकसे, हरि सिंह लोधी, मुकेश विश्वकर्मा, सत्यपाल कुशवाहा, विनोद नगर, अशोक यादव, प्रेम नारायण विश्वकर्मा, बनवीर सिंह चंद्रवंशी, कमलेश कुशवाहा, रामकृष्ण मीणा, प्रवेश वर्मा, संदीप कुशवाह,केवल सिंह, कीर,दिनेश कुशवाहा, प्रशांत राठौर, अशोक पटेल, नरेश यादव, आकाश बारस्कर, पुष्पेंद्र लोबांसी, रामनिवास पाल ,नेतराम किरार ,जितेंद्र सिंह यादव, लालाराम राय, टीकाराम पाल ,गौरी शंकर,शंकर सिंह कुर्मी ,जीवन सिंह वर्मा, गोपाल चौधरी ,कांता पटेल, अनिल मंडली ,प्रकाश जाट, हरिनारायण लोधी, दिलीप चौकसे ,राजीव नेमा, सुरेश ताकोलिया ,अशोक राठौड़, लखन चक्रवर्ती ,शंभू दयाल धाकड़ ,प्रदीप साहू मोदी, लखनलाल, पंकज विश्वकर्मा, महेश बैरागी, नरेश नगर, निरपत सिंह कुशवाहा, मुकेश चौकसे, विनोद सेन, बलराम लोधी, महेश वर्मा, जय नारायण जालोरेया ,जुगनू गोस्वामी, अजय जाट, बलराम पटेल, सुनील महेश्वरी ,शंकर बटोही ,अमित चौधरी ,देवी सिंह देवड़ा ,विजय सोनी, केवल सिंह कीर,मोहर सिंह, सर्वश्री विनोद चौकसे, नरेश यादव,रामरतन ,रमेश कुमार, यशपाल सिंह ठाकुर, कमलेश कुमार ठाकुर सुरेंद्र सिंह ठाकुर, आनंद ठाकुर, सुरेंद्र सिंह ,राजेश कुमार, खूबचंद पटेल ,विशाल सिंह पटेल ,जालम सिंह पटेल,रघुवीर सिंह ठाकुर, आनंद ठाकुर ,ओमप्रकाश लोधी ,रोहित ठाकुर, दिग्विजय सिंह, राजेश कुमार राघवेंद्र ठाकुर, गोपाल सिंह, सादा राम ठाकुर, लक्ष्मण सिंह हरिराम ठाकुर ,चंदन सिंह ,भैरव सिंह ,आदर्श ठाकुर, रामकुमार ठाकुर, नवीन ठाकुर शालिग्राम, आकाश ठाकुर ,सुधांशु ठाकुर, भगवान सिंह गुलाब सिंह, जसवंत सिंह विनय कुमार ठाकुर, प्रीतम सिंह ,हल्कू सिंह ,भरत सिंह ,धनराज सिंह ,नंदलाल, प्यारेलाल, सुरेश ,शिवकुमार पाल, लखन लाल मीणा, मनीष रजक, सोनू मीणा लक्ष्मी नारायण मीणा ,देवराज सिंह,अनुज चौबे ,विनोद चौधरी ,अवध नारायण चौकसे ,सचिन पटेल, विशाल जाट,जगदीश, अंकित राजपाल ,हरी बाबू धाकड़ ,मुकेश रावत, हंसराय, देवेंद्र शर्मा ,रघुवीर सिंह ठाकुर आनंद ठाकुर, ओम प्रकाश लोधी ,धनीराम धाकड़ ,संतोष कुमार धाकड़, तुलसीराम लोधी, हरि सिंह धाकड़, परमानंद, हरनाम सिंह ,शंकर, बलवीर सिंह धाकड़ ,खुशी लाल पटेल ,कुलदीप धाकड़, प्रवीण लोधी, धर्मेंद्र कुमार धाकड़ ,चंद्र सिंह लोवंशी, हरिराम लोधी ,अमिन सिंह पटेल ,कोमल सिंह, संदीप, दीपक लोधी, पवन ठाकुर, जितेंद्र सिंह, रोहित गौर, विकास पटेल, हर प्रसाद, अंकित ,योगेश ,हरिशंकर, त्रिलोक सिंह कुशवाहा, योगेंद्र सिंह पवार, तुलसीराम लोधी ,प्रेम नारायण कुशवाहा ,बदन सिंह ,भूपेंद्र सिंह यादव, रामलाल शर्मा, रामविलास सिंह, मोहन सिंह यादव, दीपक लोधी ,विकास रजक, मनीष यादव ,लाल सिंह यादव, गजेंद्र सिंह परिहार ,अभिषेक यादव सत्यवान यादव, प्रीतम सिंह, चतर सिंह जगन्नाथ सिंह कुशवाहा, नरेश यादव,राम नंदवंशी, सुरेंद्र सिंह चौहान, विनोद चौकसे,रमेश पवार आनंद मीना ,दीपक विश्वकर्मा, सुभाष विश्वकर्मा, सुरेश माहेश्वरी ,अमर सिंह पवार ,राजेश विश्वकर्मा, भगवान सिंह, राजेश सोलंकी ,कैलाश चंद्र ,माधव सिंह मीणा ,जितेंद्र विश्वकर्मा, विनोद नगर ,हरी सिंह ,सुरेंद्र सिंह चौहान बनवीर चंद्रवंशी ,राकेश मालवीय ,प्रखर कुमार मालवीय ,राहुल मालवीय, मुकेश कुमार ,राम किशोर नंदवंशी ,नरेश यादव ,विनोद चौकसे ,सदा राम, भीम सिंह राजपूत ,राकेश मालवीय, प्रखर नायक ,अरविंद मालवीय, हरगोविंद मालवीय, गोविंदा बघेल, मुकेश मालवीय, दिनेश केवट ,आदर्श मालवीय, दुर्गेश मालवीय, श्री राम मालवीय, अनिल शुक्ला, दिलीप मालवीय, वीरेंद्र मालवीय, हर्ष मालवीय ,भीम सिंह राजपूत, दीपक मालवीय, दीनदयाल मालवीय, सतीश कुमार मालवीय, विपिन यादव, मनोहर यादव, अभिषेक यादव, लोकेश यादव, शुभम यादव, सुदेश यादव ,भूपेंद्र यादव, प्रदीप यादव ,दीपू यादव, नरेश यादव, आयुष यादव, यदुनंदन यादव ,पूरन सिंह, हर्षित यादव ,ओंकार सिंह, चरण सिंह ,अमन सिंह यादव, देशराज यादव, बृजेश यादव ,रिंकू यादव, अंकित यादव, राधेश्याम शिवहरे, अशोक चौकसे दुर्गेश मालवीय ,गोकुल सूर्यवंशी, अजय चौकसे, योगेश चौकसे ,राजेंद्र कुमार मालवीय, दिलीप मानकर, सदा राम, राजेश कुमार राय, बीपी शिवहरे ,उमेश शिवहरे ,जगदीश प्रसाद राय, विनोद मालवीय, महेश राय, चंद्रशेखर चौकसे, विनोद चौकसे, गणपत राय, अनिल राय, गोविंद राय, लक्ष्मन राय, नवल किशोर मालवीय, दशरथ राय, अशोक चौकसे ,सुंदरलाल राय ,पवन कुमार राय ,अजय मालवीय ,श्याम मालवीय ,रवि शंकर राय, राधा विनोद मालवीय, नरेश यादव, निरपत सिंह कुशवाहा, मुकेश चौकसे ,तरबत सिंह कुशवाहा ,रामबल सिंह कुर्मी, धन सिंह कुशवाहा, रघुवीर सिंह कुर्मी, भारत पटेल ,राकेश कुशवाहा, शंकर सिंह कुर्मी ,प्रेम सिंह लोधी ,लालू खां मंसूरी, जसवंत सिंह ठाकुर ,प्रेम नारायण विश्वकर्मा ,निरंजन कुशवाहा, खिलन सिंह कुशवाहा ,मनीराम कुशवाहा, बाबूलाल,सचिन कुशवाहा ,रमेश कुशवाहा, कस्तूरचंद यादव, गोपाल सिंह कुशवाहा, शंकर जायसवाल पटेल, दादा अनार सिंह ग्राम के मुखिया,अशोक चौकसे, रामकृष्ण मीणा मण्डल अध्यक्ष,राजपाल परमार ,योगेंद्र सिंह, यशवंत ठाकुर, गजराज सिंह ,मोती सिंह ,दीपक ठाकुर ,संदीप, बृजेंद्र सिंह, दल्लू सिंह, फतेह सिंह ठाकुर ,महेंद्र ठाकुर ,सचिन विश्वकर्मा, राहुल ठाकुर ,अमन विश्वकर्मा , देवचन्द्र,नाना, देवनारायण ,बबलू ,मुकेश पटेल ,अनार सिंह ,बाबूलाल, हरि किशन,अनिल राय, सुरेंद्र चौहान ,राम नंदवंशी, विदिशा के जिला अध्यक्ष निरपत सिंह कुशवाहा, रायसेन के जिला अध्यक्ष अजय जाट, सीहोर के जिला अध्यक्ष बनवीर चंद्रवंशी, देवास के जिला अध्यक्ष जुगनू गोस्वामी एवं मंडल अध्यक्ष सर्वश्री, सुनील पाल, कमला प्रसाद पटेल ,शिवकुमार चौधरी, मुकेश भावसार, पुष्पेंद्र लोवंशी, केवल सिंह कीर, अशोक राठौर ,टीकाराम पाल, ओमकार सिंह लोधी, राजेंद्र यादव ,कालूराम विश्वकर्मा, निशांत साहू, रामसेवक पटेल ,राजाराम लोधा, हरिनारायण लोधी ,अजब सिंह ,खुशबू चंद कुशवाहा, सुमित चौकसे, महेश गोस्वामी ,नेतराम किरार, जितेंद्र यादव, प्रदीप कुशवाहा, राहुल यादव, बैनी कुशवाहा, तखत सिंह कुशवाहा ,सुभाष पटेल, कैलाश प्रसाद कौर, राजेंद्र सिंह चौहान, पवन चंद्रफेरी, देवी सिंह बेड़ा, अरविंद मंडलोई ,कमलेश मीणा, रामकृष्ण मीणा ,महेश वर्मा, राहुल सांखला, संतोष राठौर, सुनील प्रजापति, कमल मीणा आदि मौजूद थे।

पुलिस और प्रशासन द्वारा रेत के अवैध खनन व भण्डारण तथा परिवहन को लेकर चलाया जाएगा जागरुकता अभियान

एडीजीपी डीसी सागर द्वारा एएसआई महेन्द्र बागरी की हत्या के फरार आरोपी पर 30 हजार रूपये का ईनाम घोषित किया गया

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। सहायक उपनिरीक्षक महेन्द्र बागरी थाना ब्यौहारी जिला शहडोल को अवैध रेत से भरे ट्रेक्टर-ट्रॉली के चालक द्वारा तेज गति से चलाकर जानबूझकर टक्कर मारने और ट्रेक्टर चढ़ाकर मृत्यु कारित करने की घटना पर थाना ब्यौहारी में अपराध क्र. 271/2024 धारा 302, 379, 414, 34 ताहि., 4/21 खान एवं खनिज अधि. दर्ज किया गया है और आरोपी चालक विजय उर्फ राज रावत पिता मोलई कोल और आशुतोष सिंह उर्फ छोटू पिता सुरेन्द्र सिंह बघेल निवासी ग्राम जमोड़ी को गिरफ्तार किया गया है। फरार आरोपी ट्रैक्टर मालिक सुरेन्द्र सिंह पिता शीतला सिंह उर्फ सीमा सिंह बघेल निवासी जमौड़ी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। इसको गिरफ्तार करने में सहयोग प्रदान करने वाले व्यक्ति को रूपये 30,000/- के नगद ईनाम देने की उद्घोषणा एडीजीपी डीसी सागर द्वारा की गई है।

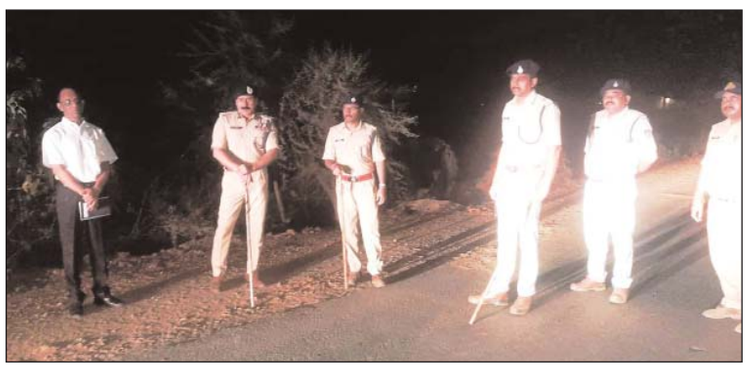

इस घटना की सूचना मिलते ही अतिरिक्त अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, शहडोल जोन डी.सी. सागर पुलिस अधीक्षक शहडोल कुमार प्रतीक के साथ घटना स्थल पहुँचे और घटना स्थल का निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण कर पुलिस अधीक्षक शहडोल एवं अनुसंधान टीम को अपराध के अनुसंधान में वैज्ञानिक, फोरेंसिक, सायबर फोरेंसिक, परिस्थितिजन्य साक्ष्य आदि के आधार पर अग्रिम कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। एफ एस एल अधिकारी अहिरवार भी घटना स्थल पहुंचकर घटना की फोरेंसिक दृष्टि से जांच किए और विवेचक को आवश्यक निर्देश दिए।

दिनांक 04.05.2024 की रात्रि में स्थायी वारंटी तलाश हेतु सहायक उपनिरीक्षक महेन्द्र बागरी, सहायक उपनिरीक्षक गयाप्रसाद कन्नौजे, आरक्षक संजय द्विवेदी के साथ ग्राम सूखा, कल्हारी तरफ दिनांक 04.05.2024 के 23.26 बजे रोजनामचा में रवानगी दर्ज कर रवाना हुए थे। हेलीपैड खड़हली से 100 मीटर पहले पपौंध रोड में रात्रि के 23.40 बजे पहुंचे तो सामने से एक ट्रेक्टर तेज रफ्तार से रोड में लहराते हुए ब्यौहारी की तरफ आ रहा था। ट्रेक्टर की तेज गति को देखकर ट्रेक्टर को रोकने का प्रयास किया गया, किन्तु ट्रेक्टर के चालक ने ट्रेक्टर को सउनि महेन्द्र बागरी की तरफ मोड़ दिया और सउनि महेन्द्र बागरी को टक्कर मारकर गिरा दिया व ट्रेक्टर उसके ऊपर चढ़ा कर रौंद कर निकल गया, टक्कर मारकर चालक चलते ट्रेक्टर से कूदकर भागने लगा तो आरक्षक संजय द्विवेदी ने चालक को पकड़ लिया गया। चलता हुआ ट्रेक्टर नव निर्मित पुलिया पर टक्कर मारकर लटक गया व ट्राली पुलिया से नीचे गिर कर पलट गई। सउनि गया प्रसाद कन्नौजे और आरक्षक संजय द्विवेदी सउनि महेन्द्र बागरी को उठाकर कार में लेटा कर तत्काल सी.एच.सी. ब्यौहारी इलाज के लिये लेकर आये तो डॉक्टर ने सउनि महेन्द्र बागरी को देखकर मृत घोषित कर दिये। ट्रेक्टर चालक विजय उर्फ राज रावत ने बताया कि आशुतोष सिंह उर्फ छोटू पिता सुरेन्द्र सिंह बघेल निवासी जमोड़ी ट्रेक्टर के आगे आगे चलकर पायलेटिंग करता है एवं ट्रैक्टर सुरेन्द्र सिंह पिता शीतला सिंह उर्फ सीमा सिंह बघेल निवासी जमोड़ी के नाम पर रजिस्टर्ड है। ट्रेक्टर एवं ट्राली का और ट्राली में लोड रेत का कोई दस्तावेज नहीं पाया गया। पुलिस एवं प्रशासन द्वारा आरोपी आशुतोष सिंह उर्फ छोटू पिता सुरेन्द्र सिंह बघेल के विरुद्ध थाना ब्यौहारी में पूर्व में 3 से अधिक अपराध दर्ज हैं, इसके जिला बदर की कार्यवाही की जा रही है। साथ ही रेत के अवैध उत्खनन, अवैध परिवहन एवं अवैध भण्डारण न करने लिए लोगों को जागरूक किया जायेगा।

समाजसेवी संस्था ने चलाया मतदाता जागरुकता अभियान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड मुरैना एवं विकासखंड मुरैना की नवांकुर संस्था राधा माधव जनकल्याण एवं मानव उद्यान समिति के द्वारा शासकीय गर्ल्स कॉलेज मुरैना में मुख्यमंत्री सामुदायिक विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं के मध्य मध्य मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विकासखंड मुरैना के समन्वयक अनिल मोदी के द्वारा छात्र-छात्राओं को जहां पर वह निवास कर रहे हैं के आसपास के लोगों को मतदान के लिए जागरूक करने के लिए एवं अधिक संख्या में नागरिक मतदान कर सके इसके लिए प्रेरित किया गया। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य मुरैना जिले के मतदान प्रतिशत को सुधारना है। वह शत प्रतिशत मतदान का लक्ष्य प्राप्त करना ही मुख्य उद्देश्य रहा। कार्यक्रम में मुरैना विकासखंड के परामर्शदाता संजीत खेमरिया, सपना तोमर, सायरा बानो, बृजेश राय एवं एवं मुख्यमंत्री सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लगभग 50 बच्चों ने अपनी सहभागिता की।

कलेक्टर ने एसएसटी टीम गठन हेतु जारी किया संशोधित आदेश

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष वशिष्ठ ने जिले की सीमा से लगे पड़ोसी राज्य में लोकसभा सामान्य निर्वाचन मतदान को दृष्टिगत रखते हुए संसदीय क्षेत्र शहडोल के अनूपपुर जिले के विधानसभा 86 कोतमा एवं 88 पुष्पराजगढ़ में पड़ोसी राज्य से लगी सीमा क्षेत्र में मतदान होने तक एसएसटी टीम के गठन हेतु संशोधित आदेश जारी किया है। जारी आदेश में कलेक्टर ने कहा है कि विधानसभा क्षेत्र 86 कोतमा के रामनगर डोला में प्रातः 6:00 बजे से दोपहर 2:00 तक टीम-1 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में जनपद समन्वयक अधिकारी जनपद पंचायत कोतमा सुखी राम सिंह एवं वीडियोग्राफर राकेश यादव, दोपहर 2:00 बजे से रात 10:00 बजे तक टीम-2 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में उप यंत्री नगर परिषद डोला मान शाह कुंजाम एवं वीडियोग्राफर मुकेश यादव, रात 10:00 बजे से प्रातः 6:00 बजे तक टीम-3 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में उपयंत्री नगर परिषद डूमरकछार शिवराम इडपाचे एवं वीडियोग्राफर नरेंद्र यादव अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

विधानसभा क्षेत्र 86 कोतमा के अंतर्गत बगडुमरा नाका में प्रातः 6:00 से दोपहर 2:00 तक टीम-1 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में पंचायत समन्वयक अधिकारी जनपद पंचायत अनूपपुर यूजिन टोप्पो एवं वीडियोग्राफर अंबिका प्रसाद यादव, दोपहर 2:00 बजे से रात 10:00 तक टीम-2 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में समग्र विस्तार अधिकारी सामाजिक न्याय एवं निःशक्त कल्याण अनूपपुर ईश्वरचंद्र शर्मा एवं वीडियोग्राफर ओम प्रकाश यादव एवं इसी प्रकार रात्रि 10:00 से प्रातः 8:00 बजे तक टीम-3 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में उपयंत्री नगर पालिका परिषद पसान अविनाश मरकाम एवं वीडियोग्राफर नरेंद्र यादव अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे। विधानसभा क्षेत्र 86 कोतमा मझौली छतई में प्रातः 6:00 से दोपहर 2:00 तक टीम-1 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में पंचायत समन्वयक अधिकारी जनपद पंचायत कोतमा गणपत सिंह श्याम एवं वीडियोग्राफर अंकुश यादव, दोपहर 2:00 से रात 10:00 तक टीम-2 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी अनूपपुर रामानुज कुरबंशी एवं वीडियोग्राफर अभय यादव एवं रात 10:00 बजे से प्रातः 6:00 बजे तक टीम-3 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक सहकारिता विभाग अनूपपुर अनुज कुमार ओहदार एवं वीडियोग्राफर दुर्गेश कुमार यादव अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। इसी प्रकार विधानसभा क्षेत्र 88 पुष्पराजगढ़ के धरमपानी में प्रातः 6:00 बजे से दोपहर 2:00 तक टीम-1 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में पंचायत समन्वयक अधिकारी जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ पन्ने सिंह एवं वीडियोग्राफर पीयूष चौधरी, दोपहर 2:00 बजे से रात 10:00 तक टीम-2 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में पंचायत समन्वय अधिकारी जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ भगत राम सारीवान एवं वीडियोग्राफर सुभाष चौधरी एवं इसी प्रकार रात्रि 10:00 बजे से प्रातः 6:00 बजे तक टीम-3 कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में पंचायत समन्वयक अधिकारी जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ उदयनाथ सिंह खैरवार एवं वीडियोग्राफर चंदन चौधरी उपस्थित होकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे।

कलेक्टर ने कहा है कि उक्त समिति भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचरण संहिता के अंतर्गत निर्देशों का पालन करेगी। जांच की पूरी प्रक्रिया की वीडियो ग्राफी अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करेगी, साथ ही टीम अपने समय में साप्ताहिक परिवर्तन करती रहेगी। यह आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

अधिकृत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पदक विजेता प्रतिभावान खिलाडियों से खेलवृत्ति हेतु आवेदन आमंत्रित

अनूपपुर। जिले के ऐसे प्रतिभावान खिलाड़ी जिन्होंने 01 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 के मध्य आयोजित अधिकृत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण, रजत या कांस्य पदक हासिल की हो, वे राज्य स्तरीय खेलवृत्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं। अधिकृत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक विजेता खिलाडियों को 10,000 रुपये, रजत पदक विजेता खिलाड़ी को 8,000 रुपये एवं कास्य पदक विजेता खिलाड़ी को 6,000 रुपये खेलवृत्ति राशि दिए जाने का प्रावधान है। उक्ताशय की जानकारी देते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं प्रभारी जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी मोहम्मद इरशाद मंसूरी ने बताया है कि वर्ष 2024 की खेलवृत्ति हेतु आवेदन 31 मई 2024 तक स्वीकार किए जाएंगे। 31 मई के पश्चात् प्राप्त आवेदन पर विचार नही किया जावेगा। आवेदन कार्यालय जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग अनूपपुर से प्राप्त की जा सकती है। खेलवृत्ति हेतु निर्धारित दिशा-निर्देश व नियमावली विभागीय वेबसाईट www.dsywmp.gov.in पर उपलब्ध है। अधिक जानकारी हेतु जिला मुख्यालय में रामचन्द्र यादव के मो.न. 6265418507, विकासखंड स्तर पर पदस्थ ग्रामीण युवा समन्वयक दिनेश सिंह चंदेल जैतहरी के मो.नं. 9685303796, मिथेलश सिंह नेताम कोतमा के मो.नं. 6261617170 तथा खेलन प्रसाद कोल पुष्पराजगढ़ के मो.नं. 6264043241 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

नि:स्वार्थ कदम का संदेशखाली में नि:शुल्क भोजन वितरण अभियान

भोपाल। निःस्वार्थ कदम एनजीओ नें पं. बंगाल के संदेशखाली में निःशुल्क भोजन वितरण अभियान की शुरूआत की है। जिसके जरिए संदेशखाली के सैकड़ों लोगों को इस मानवता के कार्य का लाभ मिल रहा है। पं. बंगाल का संदेशखाली काफी लंबे समय से राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय मीडिया में सुर्खियों में रहा।

निःस्वार्थ कदम संस्था संदेशखाली में स्किल ट्रेनिंग कैंप का आयोजन करने जा रही है जहां सिलाई, पेंटिंग, काढ़ाई, बुनाई, हैंडीक्राफ्ट आदि जैसे कौशल ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किए जाएँगे। निःस्वार्थ कदम संस्था के संस्थापक प्रमोद राघव ने बताया कि काफी लंबे समय से हमारी संस्था को संदेशखाली के लोगों की तरफ से मदद की अपील की जा रही थी जिसे हमारी टीम नें प्रमुखता से लेकर पं. बंगाल जाकर स्थानीय प्रशासन से मुलाकात कर संस्था द्वारा किए जाने वाले कार्य की चर्चा की, जिसे प्रशासन ने अनुमति दे दी। संदेशखाली में निःस्वार्थ कदम संस्था स्थानीय लोगों की मदद से पिछले कई दिनों से भोजन वितरण कार्यक्रम का आयोजन कर रही है।

निष्पक्ष चुनाव के लिये पुलिस प्रशासन मुस्तैद: जिला निर्वाचन अधिकारी

- कल 16 लाख 40 हजार मतदाता चुनेंगे अपना सांसद

ग्वालियर। लोकसभा चुनावों के तीसरे चरण के लिए रविवार को चुनावी शोरगुल थम गया। अब मतदान को लेकर जिला एवं पुलिस प्रशासन ने अपनी तैयारियों को अंमित रूप दे दिया है। ग्वालियर में आज 6 मई को मतदान दलों को सामग्री देकर मतदान केन्द्रों पर रवाना किया जायेगा। निष्पक्ष चुनाव के लिये पुलिस और एसएसबी की टीमों ने क्रिटिकल केन्द्र सहित सभी मतदान केन्द्रों पर पहरा बैठा दिया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रूचिका सिंह ने रविवार को पत्रकारों से चर्चा करते हुये बताया कि ग्वालियर जिले में लगभग 16 लाख 40 हजार मतदाता 7 मई को होने जा रहे मतदान में अपने मत का उपयोग करेंगे। वहीं मतदान संपन्न कराने के लिए 1680 पोलिंग बूथ बनाये गये हैं। वहीं 1500 से अधिक मतदाता होने पर 21 अतिरिक्त पोलिंग बूथ भी बनाए गए हैं। उन्होंने बताया कि अभी तक 2198 ही 6 दिव्यांग बूथ भी बनाए गये हैं। इनमें विशेष प्रशिक्षण दिया गया है।

ऐसे मतदाताओं से घर पर ही मतदान कराया गया है जो 80 वर्ष से अधिक बुजुर्ग थे। उन्होंने बताया कि जिले में 100 माडल केन्द्र बनाए गए हैं। वहीं महिलाओं के भी 75 पिंक बूथ के साथ उन्होंने बताया कि 471 क्रिटिकल बूथों पर माइक्रो आब्जर्वर भी है जो बेवकास्टिंग पर तीसरी आंख से नजर रख रहे है। मतदान पार्टियों को ले जाने के लिए 650 वाहनों को अधिग्रहण किया गया है। इसमें जीपीएस सिस्टम भी लगाये जा रहे हैं। इस अवसर पर 7000 पुलिसकर्मी और अधिकारी संवेदनशील केन्द्रों से लेकर सामान्य केन्द्रों पर निगाह रखेंगे।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने पत्रकारों को बताया कि मतदान के लिये 7000 पुलिस बल लगाया जा रहा है। वहीं कई स्थानों पर चेकिंग के दौरान साढे 66 लाख की नगदी के अलावा सोना चांदी आदि को बरामद किया है। 35 हजार लीटर शराब को सीज किया गया है। उन्होंने बताया कि 129 आदतन अपराधियों को जिला बदर किया गया हैं। वहीं लगभग 10 हजार को बाउंडओवर किया गया है। पत्रकारवार्ता में उप जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव कुमार जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शियाज केएम भी मौजूद रहे।

बच्चों से लेकर 80 वर्ष तक के बुजुर्ग वैष्णवों ने लिया भाग, दिखाई प्रतिभा

- महाप्रभु वल्लभाचार्य के 547वें प्राकट्य उत्सव का दूसरा दिन

ग्वालियर। अंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद द्वारा मनाए जा रहे जगदुरू महाप्रभु वल्लभाचार्य के 547वें प्राकट्य उत्सव के दूसरे दिन रविवार को गिर्राज धर्मशाला में परिषद द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें हर वर्ग की उम्र के बच्चों एवं 80 वर्ष तक के बुजुर्ग वैष्णवों ने भाग लिया। इसके लिए गुजरात, इन्दौर, नाथद्वारा एवं जतीपुरा से पुस्तकें मंगाई गई एवं लगभग 500 प्रश्नों में से 25 प्रश्नों का चयन कर प्रश्न-पत्र तैयार किया गया था। इस प्रश्नोत्तरी को तैयार करने में मुख्य भूमिका जमुनादास मुखिया, प्रकाश व्यास मुखिया, प्रणय अग्रवाल पप्पू, मोहनदास अग्रवाल, नीलिमा अग्रवाल एवं सीता नाहर की रही। इससे पूर्व प्रातः श्रीनाथजी की हवेली में अंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद द्वारा श्रीनाथजी के पालना

मनोरथ का लाभ लिया गया। वैष्णवाचार्य शरद कुमार द्वारा ठाकुरजी को लाड लड़ाये गए एवं तिलक आरती की गई। इस सुंदर मनोरथ में हवेली के मुखिया यमुनेश नागर एवं गिरराज नागर द्वारा ठाकुरजी का विशेष श्रंगार किया गया। फिर सायंकाल गिर्राज धर्मशाला में महाराजश्री के वचनामृत हुए।

कार्यक्रम में परिषद के कोषाध्यक्ष मुरली मनोहर अग्रवाल, कार्यकारी अध्यक्ष कुम्मन दास अग्रवाल, उपाध्यक्ष परमानन्द अग्रवाल, राजेश सोनी, उदित मंगल, प्रणय सिंहल, अंकित खण्डेलवाल, नवनीत अग्रवाल, राजीव गर्ग, ममता दवे, कुंजलता अग्रवाल, ममता गोयल, शशि किरण मुखिया, लक्ष्मणदास सिंहल, रामनारायण शर्मा, मदनलाल राठी, पुष्पा रस्तोगी, रामनारायण दुबे, रामबाबू अग्रवाल, बृजकिशोर सिंहल, अरुण चौबे ध्रुव उपस्थित रहे।

आज के आयोजन

सोमवार को महाराजश्री की वैष्णवों के यहां पधरावनी होंगी एवं गिर्राज धर्मशाला में ही प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान एवं महाराजश्री द्वारा आशीर्वाद दिया जायेगा। केन्द्र, जिला शाखा के पदाधिकारीगण, परामर्शदाता मण्डल एवं कार्यक्रम में जिन वैष्णवों ने सहयोग किया है उनको स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया जायेगा।

फायरिंग करने वाले रंगबाजों पर दस-दस हजार का इनाम घोषित

ग्वालियर। पुरानी रंजिश पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दहशत फैलाने वाले रंगबाजों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस कप्तान धर्मवीर सिंह यादव ने दस-दस हजार रुपए का इनाम घोषित करने के साथ ही उनकी गिरफ्तारी के लिए चार टीमें लगाई है। जिसमें महाराजपुरा, गोला का मंदिर, पुरानी छावनी और क्राइम ब्रांच की टीमें मुरैना, भिण्ड और ग्वालियर में दबिश दे रही हैं।

रंगबाजों द्वारा बीते रोज दहशत फैलाने के इरादे से फायरिंग करने के बाद रविवार को एसपी धर्मवीर सिंह गोला का मंदिर स्थित पिण्टो पार्क पहुंचे और घटना स्थल का निरीक्षण कर अफसरों को आरोपियों को पकडने के लिए निर्देश दिए। साथ ही अफसरों से हमलावरों के खिलाफकड़ाई से कार्रवाई के निर्देश दिए। हमलावरों को पकडने के साथ ही सभी टीमों की मॉनीटरिंग की जिम्मेदारी एएसपी क्राइम केएम शियाज को सौंपी है। चारों टीमें उन्हें रिपोर्ट करेगी। फायरिंग करने वाले बदमाशों में कुछ बदमाश जमानत पर छूट कर आए हैं और अब पुलिस उनकी जमानत निरस्त कराने की कार्रवाई में जुट गई है, जिससे उनके खिलाफकड़ाई से कार्रवाई की जा सकें। जो बदमाश फायरिंग में शामिल हैं अब उनके संपर्क में रहने वालों का डाटा पुलिस की साइबर सेल खंगाल रही है, जिससे उनके खिलाफकार्रवाई की जा सके। इसके साथ ही उन लोगों की लिस्ट भी पुलिस ने तैयार की है, जो घटना के बाद किसी ना किसी रूप में उनसे जुड़े और मदद की है।

गौरतलब है कि पिण्टो पार्क निवासी सौरभ सिंह तोमर का बीएसएफकॉलोनी निवासी संजीव गुर्जर से पुराना विवाद चल रहा है। शुक्रवार को सौरभ तोमर के घर पर दोनों पक्ष राजीनामा की बातचीत के लिए एकत्रित हुए थे और यहां पर संजीव, दिनेश सिंह ने अपने साथियों के साथ दनादन फायरिंग कर दी। फायरिंग से इलाके में दहशत फैल गई। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और तब तक आरोपी वहां से भाग निकले। पुलिस ने आरोपियों पर हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया था।

सात वर्षीय बालिका से अधेड़ ने की दरिंदगी, आरोपी पकड़ा

ग्वालियर। छत पर खेल रहे छोटे भाई को छत पर बुलाने पहुंची सात वर्षीय बालिका को पचपन वर्षीय अधेड़ मुंह दबाकर अपने कमरे में ले गया और उसके साथ दरिंदगी की। घटना मुरार थाना क्षेत्र के संकट मोचन नगर में शनिवार-रविवार की दरमियानी शाम साढ़े छह बजे की है। घटना का पता उस समय चला जब बालिका रोते हुए मां के पास पहुंची और घटना की जानकारी दी। मामले का पता चलते ही बालिका क परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और अधेड़ को हिरासत में लेकर उसके खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

मुरार थाना क्षेत्र के संकट मोचन नगर निवासी सात वर्षीय बालिका बीती शाम छत पर खेल रहे अपने डेढ़ वर्षीय भाई को छत पर लेने पहुंची तो वहां पर ऊपरी मंजिल पर रहने वाले 57 वर्षीय सुलेमान खान भाई के पास खड़ा हुआ था। जब वह भाई को लेने पहुंची तो सुलेमान खान ने उसे पकड़ लिया और मुंह दबाकर अपने कमरे में ले गया। इसके बाद उसके साथ गलत हरकत की। इसी बीच मौका पाकर बालिका कमरे से भागकर मां के साथ पहुंची और मामले की जानकारी मां को दी। जानकारी मिलते ही परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। बच्ची के साथ घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर आरोपी को हिरासत में ले लिया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

सूरज के तेवर तल्ख, लू चलने का अहसास

- टूटा रिकार्ड, दिन का पारा पहुंचा 41.8 डिग्री सेल्सियस
- 11 मई तक और उपर जायेगा पारा, बढ़ेगी गर्मी

ग्वालियर। मई माह के राहत भरे 4 दिन बीत जाने के बाद रविवार को सूरज के तेवर तल्ख हो गये। दिनभर लू चलने का अहसास हुआ। इसके चलते अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के निकट पहुंच गया। यह इतना अधिक तापमान इस महीने में ही नहीं बल्कि इस साल में पहली बार आंका गया है। इससे पहले 26 अप्रैल को सर्वाधिक तापमान 41.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। उसके बाद से कुछ राहत रही थी लेकिन पुनः रविवार को तापमान ने रिकार्ड तोड़ते हुये दिन का पारा 41.8 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। यह सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज हुआ।

मौसम वैज्ञानिकों की माने तो अभी भीषण गर्मी का प्रकोप हावी रहेगा। 11 मई तक पारा और उपर जायेगा। पारा

43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की संभावना है। शनिवार को सूरज के तेवर सामान्य ही थे। लेकिन रविवार को तो रिकार्ड तोड़ दिया। सुबह से ही रिकार्ड तोड़ गर्मी झुलसाने वाली प्रतीत हुई। देर शाम तक गर्म हवायें चलती रही, जो लू के थपेड़ों से कम नहीं लगा रही थी। रविवार को चढ़ते पारे ने इंसानों के साथ साथ बेजुबानों को भी असहनीय गर्मी का अहसास करा दिया। कई लोगों का तो दम फूल गया। उल्लेखनीय है कि बीते दिन शनिवार को अधिकतम तापमान 41.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ था। जबकि रविवार को 0.7 अंक बढ़कर 41.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इसी तरह बीते दिन न्यूनतम तापमान 23.0 डिग्री सेल्सियस आंका गया था। लेकिन रविवार को 0.9 अंक बढ़कर रात का पारा 23.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। यह सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस मायनस में दर्ज हुआ। रविवार को सुबह की आर्दता 29 प्रतिशत व शाम की आर्दता 19 फीसदी आंकी गई।

फूफा ने किया भतीजी से दुष्कर्म, सात माह की हुई गर्भवती

ग्वालियर। नाबालिग भतीजी से फूफा ने दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया और धमकाकर तीन साल से शोषण कर रहा था, अब जब भतीजी गर्भवती हो गई तो आरोपी फरार हो गया। वारदात गिरवाई थाना क्षेत्र की है। किशोरी के गर्भवती होने का पता चलते ही परिजन उसे लेकर थाने पहुंचे और मामले की शिकायत की। जिस पर पुलिस ने दुष्कर्म का मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

गिरवाई थाना क्षेत्र के सांवरिया धाम उत्तम कॉलोनी निवासी सत्रह वर्षीय किशोरी ने शिकायत की है कि तिघरा में रहने वाला पूरन सिंह रिश्ते में उसका फूफा लगता हैं। पांच साल पहले उसकी बुआ का देहांत हो गया था और उसके फूफा बच्चों के साथ उनके घर पर रह रहे थे। तीन साल पहले उसके माता-पिता व अन्य परिजन बाहर गए थे और उसे अकेला देखकर फूफा ने उसे धमकाकर गलत काम किया था।

वारदात के बाद भी आरोपी ने धमकी दी कि अगर मुंह खोला तो वह उसे जान से मार देगा। इसके बाद वह उसका धमकाकर शोषण कर रहा था और कुछ दिन पहले वह गर्भवती हो गई और इसका पता जब उसे चला तो वह फरार हो गया। अब जब किशोरी के परिजनों को इसका पता चला तो वह उसे लेकर थाने पहुंचे और मामले की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने उनकी शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

मंदिर के ताले तोड़कर चढ़ोत्तरी ले गए चोर

ग्वालियर। आस्था पर चोट करते हुए चोरों ने एक मंदिर पर धावा बोला और दो दान पेटी तोड़कर चढ़ोत्तरी पार कर ले गए। घटना मुरार थाना क्षेत्र के सैनिक कॉलोनी में शनिवार-रविवार की दरमियानी रात की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

मुरार थाना क्षेत्र के सैनिक कॉलोनी निवासी अनिल राजावत पुत्र प्रीतम सिंह राजावत ने शिकायत की है कि कॉलोनी में नर्मदेश्वर महादेव का मंदिर है, जहां पर देखभाल की जिम्मेदारी उन पर है। बीती रात पूजा अर्चना करने के बाद वह मंदिर बंद कर अपने घर चले गए थे और आज सुबह जब वह मंदिर पर पहुंचे तो ताले टूटे पड़े थे और अंदर पहुंचे तो दोनों दान पेटी टूटी पड़ी थी और उसमें रखी चढ़ोत्तरी गायब थी। तुरंत ही मामले की सूचना अन्य श्रद्धालुओं को दी। जानकारी मिलते ही अन्य भक्त मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया है।

मंदिर में चोरी करते चोर पकड़ा

कंपू थाना क्षेत्र के साईं कॉलोनी गुढ़ा-गुढ़ी का नाका निवासी त्रिष्णी राजपूत पुत्र निगम सिंह राजपूत छात्र है और बीती रात दोस्त हर्ष तोमर के साथ खाना खाने के बाद सड़क पर टहल रहा था। तभी एक युवक चोरी से मंदिर में दाखिल हुआ तो उन्हें शक हो गया। वह भी उसके पीछे मंदिर में पहुंचे तो पता चला कि युवक दानपेटी का ताला तोड़ रहा है और उसमें रखी नगदी निकाल कर भागने लगा। मामला समझ में आते ही हर्ष और त्रिष्णी उसके पीछे भागे और उसे दबोच लिया। उसकी तलाशी लेकर उसकी जेब से मंदिर की दानपेटी से चोरी किए गए रुपए बरामद हुए है। उससे पूछताछ की तो उसने अपना नाम आशू खान बताया है। पकड़े गए चोर को पुलिस को सौंपा है। पुलिस ने चोर को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

घर से काम पर गया अधेड़ लापता

ग्वालियर। घर से काम करने के लिए निकला 55 वर्षीय अधेड़ लापता हो गया। घटना जनकगंज थाना क्षेत्र के लक्ष्मीगंज में बीती 29 अप्रैल की है। जब वह वापस नहीं आया तो परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की, लेकिन जब अधेड़ का कोई पता नहीं चल सका तो परिजन थाने पहुंचे और उसके गायब होने की सूचना पुलिस को दी । पुलिस अधेड़ की तलाश कर रही है।

जनकगंज थाना क्षेत्र के लक्ष्मीगंज निवासी 55 वर्षीय जगदीश पुत्र मूलचंद कुशवाह प्राइवेट जॉब करते है। बीती 29 अप्रैल की सुबह वह घर से जॉब पर जाने की बोलकर निकले थे और उसके बाद वह वापस नहीं आए। देर रात तक वह वापस नहीं आए तो परिजनों ने उनकी तलाश की, लेकिन पता नहीं चला तो वह थाने पहुंचे और मामले की शिकायत की। पुलिस ने उनकी शिकायत पर अधेड़ की तलाश शुरू कर दी है।

लापरवाह जिला कोषालय अधिकारी निलंबित

ग्वालियर। संभागीय आयुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने जिला कोषालय अधिकारी अशोकनगर जितेन्द्र कुमार आर्य को निर्वाचन आयोग, शासन एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिए गए निर्देशों पर ध्यान न दिया जाकर निर्वाचन जैसे महत्वपूर्ण कार्य में स्वेच्छाचारिता और लापरवाहीपूर्वक तरीके से कार्य किए जाने पर मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण 1956 के नियम का उल्लंघन और कदाचार की श्रेणी में मानते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। निलंबन अवधि में जिला कोषालय अधिकारी का मुख्यालय मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अशोकनगर रहेगा तथा उन्हें जीवन निर्वाह भत्ते की पात्रता रहेगी।

संभागीय आयुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने जिला कोषालय अधिकारी जितेन्द्र सिंह आर्य को निलंबित करने के फलस्वरूप जिला कोषालय अधिकारी अशोकनगर का प्रभाव आगामी आदेश तक जिला पेंशन अधिकारी अशोकनगर रविन्द्र सूर्यवंशी को सौंप दिया है।

कलेक्टर अशोकनगर के प्रतिवेदन पर संभागीय आयुक्त द्वारा उक्त कार्रवाई की गई है। कलेक्टर अशोकनगर द्वारा अपने प्रतिवेदन में बताया है कि जिला कोषालय अधिकारी अशोकनगर द्वारा निर्वाचन आयोग, शासन एवं वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश की निरंतर अवहेलना की जाकर निर्वाचन कार्य को प्रभावित किया जा रहा था तथा इनके विरूद्ध कार्रवाई हेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया था।

भाजपा प्रत्याशी के महिलाओं पर दिये गये बयान के विरोध में करणी सेना करेगी भाजपा प्रत्याशियों का बहिष्कार

ग्वालियर। गुजरात के राजकोट में भाजपा के उम्मीदवार पुरूषोत्तम रूपाला द्वारा क्षत्रिय समाज को लेकर की गई अमर्यादित टिप्पणी के बाद राजपूत समाज में बबाल मच गया है। भाजपा प्रत्याशी द्वारा दिये गये बयान के बाद करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष महिपाल सिंह मकराना ने कहा है कि पूरे देशभर में करणी सेना भाजपा के लोकसभा प्रत्याशियों का विरोध कर भाजपा प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान नहीं करेगी।

रविवार को अपने ग्वालियर प्रवास के दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुये करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष महिपाल सिंह मकराना ने कहा कि भाजपा प्रत्याशी पुरूषोत्तम रूपाला ने महिलाओं को लेकर जो बयान दिया है वह निंदनीय है। इसलिये उन्होंने भाजपा हाईकमान से उन्हें चुनाव से हटाने की मांग भी की थी, लेकिन भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने ना तो उनकी मांग पर ध्यान दिया और पार्टी ने उनके वक्तव्य पर रूपाला से माफी तक नहीं मंगवाई। जिसके बाद वह देशभर में घूम-घूम कर बीजेपी के प्रत्याशियों का विरोध कर रहे हैं। महिपाल सिंह ने कहा कि भाजपा के निर्माण में क्षत्रिय समाज का भी योगदान रहा है। अभी तक लगभग 90 प्रतिशत क्षत्रिय समाज ने भाजपा को तन मन और धन से मदद की है। लेकिन जब भाजपा के प्रत्याशी द्वारा महिलाओं का अपमान किया गया है तो वह किसी भी कीमत पर भाजपा और उनके उम्मीदवारों को स्वीकार नहीं करेंगे।

एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि भाजपा ने नरेंद्र सिंह तोमर को दिल्ली से मध्यप्रदेश बुलाकर उनका अपमान किया है और उन्हें विधानसभा अध्यक्ष बनाकर लॉलीपाप दे दी है। यह नरेंद्र सिंह तोमर के साथ अन्याय हुआ है। मकराना ने कहा कि नरेंद्र सिंह तोमर को मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया, इसी कारण मुरैना-श्योपुर लोकसभा सीट बीजेपी हार जाएगी। पत्रकार वार्ता में सत्येन्द्र सिंह, जगदीप सिंह राजा चौहान मौजूद थे।

एमसीएमसी की बैठक आयोजित, पेड न्यूज पर रखी जा रही है पैनी नजर

ग्वालियर। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत जिले में पेड न्यूजश्श् पर बारीकी से नजर रखी जा रही है। जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा संभागीय जनसंपर्क कार्यालय में पृथक से मीडिया सेंटर स्थापित किया गया है, जिसके जरिए 24 घण्टे इलेक्ट्रोनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया द्वारा प्रसारित होने वाली खबरों की गहन छानबीन हो रही है। एमसीएमसी द्वारा पेड न्यूज के संबंध में निर्णय लिया जाता है। पेड न्यूज साबित होने पर इसके प्रकाशन पर हुआ खर्चा संबंधित प्रत्याशी के निर्वाचन व्यय में जोड़ा जायेगा।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान की अध्यक्षता में रविवार को मीडिया अनुवीक्षण एवं प्रमाणन समिति (एमसीएमसी) की बैठक आयोजित हुई। विभिन्न समाचार पत्रों और इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर प्रसारित हो रहीं खबरों का विश्लेषण किया गया, जिसमें कोई भी पेड न्यूज साबित नहीं हुई। बैठक में एमसीएमसी के सदस्यगण विनय अग्रवाल, प्रदीप मांढरे, राज दुबे, आकाशवाणी के निदेशक सोहन सिंह, एमसीएमसी के सदस्य सचिव एवं उप संचालक जनसंपर्क मधु सोलापुरकर, सहायक जनसंपर्क अधिकारी हितेन्द्र सिंह भदौरिया व सोशल मीडिया हैण्डलर गौरव जैन मौजूद थे।

रूक जाना नहीं व आ लौट चले योजना की बोर्ड परीक्षायें 21 से

- 10वीं की दोपहर पाली तो कक्षा 12वीं की सुबह के समय होंगी परीक्षायें

ग्वालियर। मप्र राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 10वीं और 12वीं का परीक्षा टाइमटेबल जारी कर दिया है। इसके तहत 10वीं की परीक्षायें 21 मई से और 12वीं की परीक्षायें 20 मई से प्रारंभ होंगी। कक्षा 10वीं के विद्यार्थी दोपहर पाली में दोपहर दो बजे से परीक्षा देंगे। जबकि 12वीं के परीक्षार्थी सुबह की पाली में सुबह 8 बजे से 11 बजे तक समय निर्धारित किया गया है। परीक्षायें 7 जून तक संपन्न हो जायेंगी।

उल्लेखनीय है कि इस योजना के तहत एक मार्च से सितंबर 2023 तक सामान्य योजना के संपूर्ण परीक्षा के लिये आवेदन करने विघार्थी शामिल होंगे। वहीं एक अक्टूबर 2023 से 31 मार्च 2024 तक आवेदन करने वाले क्रेडिट एवं शेष अन्य योजना के तहत विद्यार्थी परीक्षा में भाग ले सकेंगे। टाइम टेबल अनुसार कक्षा 10वीं की परीक्षायें हिन्दी विषय से प्रारंभ होंगी। दूसरा पेपर अंग्रेजी का होगा। फिर विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं संस्कृत विषय की परीक्षा होगी। लेकिन कक्षा 12वीं की परीक्षाओं में पहला प्रश्नपत्र भौतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, एनिमल हस्बैण्ड्री, मिल्क ट्रेड, पोल्ट्री फार्मिंग एवं फिसरीज, विज्ञान के तत्व, भारतीय कला का इतिहास विषयों के साथ शुरूआत होगी।

एमपी बोर्ड की पूरक परीक्षायें 8 जून से

माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल ने भी बीते दिन पूरक परीक्षाओं के लिये समयसारिणी कार्यक्रम घोषित कर दिया है। परीक्षा का समय सुबह 8 बजे से 11 बजे तक निर्धारित किया गया है। कक्षा 12वीं की एक ही दिन 8 जून को संपन्न होगी। जबकि 10वीं की 10 जून से 20 जून तक होगी।

गौशाला में 700 किलो हरे चारे की सेवा

ग्वालियर। बजरंग भक्त मंडल द्वारा प्रति सप्ताह की गौसेवा के क्रम में रविवार को जनकताल स्थित गौशाला में 700 किलो हरे चारे की सेवा की गई। जिसमे 125 किलो हरे चारे की सेवा कौशल अग्रवाल, 100 किलो हरे चारे की सेवा शालिनी त्रिपाठी, 100 किलो हरे चारे की सेवा अनिल गुप्ता डॉम्स वाले, 100 किलो हरे चारे की सेवा गुप्त रूप से, 100 किलो हरे चारे की सेवा गुप्त रुप से, 75 किलो हरे चारे की सेवा मनोज बाथम एवं 50 किलो हरे चारे की सेवा प्रतीक बंसल के सहयोग से की गई। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष आशीष मंगल, सचिव राकेश मंगल, उपाध्यक्ष अमन गर्ग, विशाल अग्रवाल, नमन अवस्थी, रामकिशोर मंगल, पुनेश पाल, संजीव गुप्ता, दीपक भाटिया, अमित मित्तल आदि उपस्थित थे।

मददगार बनकर किया दुष्कर्म, पांच साल से कर रहा था शोषण

ग्वालियर। पति के जेल जाने पर जमानत के लिए परेशान हो रही महिला की मुलाकात एक युवक से हुई और उसने मदद का झांसा दिया, इसके बाद उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। इसके बाद भी वह पिछले चार साल से उसका शोषण कर रहा था। डबरा निवासी 32 वर्षीय महिला थाने पहुंची और पुलिस से शिकायत की है कि वर्ष 2019 में उसके पति पर हत्या के प्रयास का मामला दर्ज हुआ था और जेल हो गई थी। उस समय वह घबरा रही थी और न्यायालय में जमानत के लिए पहुंची थी, तो उसकी मुलाकात गब्बर सिंह शिरोमणी से हुई और उसने उसे मदद का वादा किया और हाईकोर्ट के वकील की मदद से जमानत कराने को बोला। इसके बाद वह उसे वकील से मुलाकात कराने लाया और लौटते समय जौरासी के जंगल में उसके साथ गलत काम किया। इसके बाद वह उसे ब्लैकमेल कर पिछले चार साल से दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दे रहा है। पीडिता जब अपनी बच्ची का उपचार कराने के लिए आई थी तो वह वहां पर पहुंच गया और बच्ची को दूसरे कमरे में बंद कर उसके साथ गलत काम किया। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

आचार संहिता का उल्लंघन करना पड़ा भारी, माध्यमिक शिक्षक निलंबित

ग्वालियर । लोकसभा निर्वाचन के लिये लागू आदर्श आचार संहित का उल्लंघन करना माध्यमिक शिक्षक मानसिंह यादव को भारी पड़ा है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने उन्हें निलंबित कर दिया है। मानसिंह यादव के खिलाफ आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत प्राप्त होने के बाद भितरवार विधानसभा क्षेत्र के सहायक रिटर्निंग अधिकारी से शिकायत की जाँच कराई गई थी। जाँच में शिकायत सही पाई गई और साबित हुआ कियादव द्वारा आचार संहिता का उल्लंघन किया गया है।

लोकतंत्र में मतदान का महत्व विषय पर परिचर्चा हुई

ग्वालियर। सेवार्थ जनकल्याण समिति द्वारा संचालित सेवार्थ पाठशाला में रविवार को लोकतंत्र में मतदान का महत्व विषय पर चर्चा हुई। परिचर्चा में बताया गया कि एक-एक वोट का बहुत महत्व है। इसलिए इसका ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें। कार्यक्रम में सेवार्थ पाठशाला के अध्यक्ष ओपी दीक्षित, सचिव पूर्व सेना अधिकारी मनोज पांडे, प्रदेश समय के संपादक लक्ष्मण सिंह परिहार, राज्य स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान से सेवानिवृत राकेश श्रीवास्तव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में ओपी दीक्षित ने किस तरह से वोटिंग करनी होती है वहां आपको क्या-क्या सामग्री लेकर के जानी है तथा शासन के द्वारा आपके घर पर पर्ची भेजी गई है यदि वह नहीं प्राप्त हुई है तो किन-किन कागजों को लेकर के जाएं और अपने बूथ पर अपने मत का इस्तेमाल करें विषय पर विस्तृत रूप से जानकारी दी। अंत में राष्ट्रगान हुआ।

मतदान जागरूकता के लिये निकाली रैली

ग्वालियर। स्टोन पार्क ग्वालियर इंडस्ट्रियलिस्ट एसोसिएशन पुरानी छावनी ग्वालियर के तत्वावधान में मतदाता जागरूक रैली निकाली गई। रैली में संदेश दिया गया कि मतदान अवश्य करें। इस मौके पर स्टोन पार्क ग्वालियर इंडस्ट्रियलिस्ट एसोसिएशन के संरक्षक महेंद्र कुमार जैन उर्फपप्पू जैन, अध्यक्ष सत्य प्रकाश शुक्ला, वसुंधरा राजे होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज शासी निकाय के अध्यक्ष, चेंबर ऑफकॉमर्स ग्वालियर की सदस्यता उप समिति के सदस्य डॉक्टर उपेंद्र सिंह तोमर आदि उपस्थित थे।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि सेन महाराज की जयंती मनाई

ग्वालियर। वृहतर नवयुवक सेन समाज कल्याण समिति द्वारा नल वाली गली लोहिया बाजार सेन मंदिर में सेन समाज के आराध्य संत शिरोमणि सेन महाराज की 724वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। समाजसेवियो ने संत शिरोमणि सेन महाराज की पूजा अर्चना कर सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया। कार्यक्रम में समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि संत शिरोमणि सेन जी महाराज के जीवन एवं उनकी भक्ति से सभी को अवगत कराया। इसी के साथ श्री श्री 1008 संत शिरोमणि सेन जी महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष मोहन कोटिया एवं आभार महामंत्री सुरेंद्र सेन ने व्यक्त किया। इस अवसर

पर समाज के अध्यक्ष मोहन कोटिया, उपाध्यक्ष ओमकार, कोषाध्यक्ष राधेश्याम सविता, पंचम सेन, बालकृष्ण (बंटी), रामजी सविता, विष्णु धनेलिया, जितेंद्र सिरोहिया, नवनीत श्रीवास महामंत्री संतोष सेन, सुरेंद्र सेन, गब्बर श्रीवास आदि समाज बंधु उपस्थित रहे।

संपादकीय

आनंद बक्शी के अनसुने नग्मे

हिंदी सिनेमा के सबसे लोकप्रिय गीतकारों में से एक आनंद बरुशी ने फिल्मों में 3300 से ज्यादा गाने लिखे। उन्होंने 42 साल लंबे अपने करियर में 96 संगीतकारों और करीब ढाई सौ निर्देशकों के साथ काम किया। फिल्मों में गीत सिचुएशन और कहानी के मुताबिक लिखे जाते हैं। पर फ़िल्म के फाइनल रिलीज होने तक फिल्म की लंबाई कम करने या गाने अधिक होने के कारण बहुत सारे गाने रिकॉर्ड होकर भी फिल्मों में इस्तेमाल नहीं हो पाते हैं। आनंद बख्शी जी के साथ भी ऐसा हुआ। कुछ फिल्में ही अटक गई. कुछ फिल्में पूरी नहीं हो पाई लेकिन उनके गाने लिखे गए और रिकार्ड भी हुए। इन्हीं अनसुने नग्मों को आनंद बख्शी के पुत्र राकेश आनंद बक्शी ने एक किताब में संकलित किया है. जिसका शीर्षक है में जादू हूं चल जाऊंगा। राकेश आनंद बक्शी की इस पुस्तक को पेंगुइन स्वदेश ने हाल ही में प्रकाशित किया है। इसमें आनंद बख्शी द्वारा समय समय पर लिखे 69 ऐसे गीत और कविताएं शामिल है जिनसे पाठक पहली बार रूबरू होते हैं। इनमें तीन वह कविताएं भी हैं जो उनके गीतकार बनने से पहले प्रकाशित हुई। बख्शी साहब की पहली कविता जब वह किशोर थे. रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) से निकलने वाले अखबार कौमी में छपी थी। इसकी शुरू की पंक्तियां थी उनकी दूसरी कविता 25 मार्च 1950 को सेना की प्रतिष्ठित पत्रिका सैनिक समाचार में छपी जिसका शीर्षक था गिरेगी बिजलियां कब तक, जलेंगे आशिया कब तक। पत्रिका के संपादक से उन्होंने अनुरोध किया था कि उनके नाम के साथ उनका रैंक भी छप जाए ताकि वह अपने साथियों और अफसर के बीच अपनी धाक जमा सके। यह कविता एक ऐसे शख्स के गम और उसकी तकलीफ का बया है जो लगातार बदकिस्मती के थपेड़े सहते-सहते परेशान हो गया है।

इस कविता के प्रकाशन से उन्हें भरोसा हुआ की वह अच्छा लिख सकते हैं क्योंकि इसके लिए उन्हें अपने साथियों और अफसरों से काफी तारीफे मिली थी। इसकी अगली लाइन थी- खिलाफ अहल ए चमन के तू रहेगा आसमान कब तका इसमें वह कविता भी संकलित है जब 1956 में वे दूसरी बार मुंबई में बतौर गीतकार अपनी किस्मत आजमाने आए थे। तब उन्होंने यह कविता खुद को प्रेरित करने के लिए लिखी थी। इसकी पंक्तियां थी। संकलन में गौतों के अलावा उनकी बहुत सारी कविताएं और शायरी भी शामिल है जो उन्होंने खाली समय में अपने लिए लिखी थी। वह यह सब अपनी डायरी में लिखा करते थे। बख्शी साहब ने इसके बारे में अपने पुत्र राकेश को बताते हुए कहा था कि जब मैं दुनिया से चला जाऊंगा तो भी इस डायरी को बहुत संभाल कर रखना। यही नहीं तुम फिल्मकारों को यह कह सकते हो कि अगर उनकी कहानी के मुताबिक कोई कविता नजर आती है तो वह उसका इस्तेमाल अपनी फिल्मों में कर सकते हैं। राकेश आनंद बक्शी ने केवल एक फिल्मकार को इस डायरी से कविता लेने की इजाजत दी और वह थे असीम शक्ति सामंत। उन्होंने अपनी फिल्म ये जो मोहब्बत है (2012) के लिए दो रोमांटिक गाने रिकॉर्ड किए थे जिसका संगीत अनु मलिक ने दिया था। प्रस्तावना के तौर पर 21 जुलाई 1998 को लीला होटकर में आनंद बक्शी के जन्मदिन पर निर्देशक सुभाष घई के द्वारा आयोजित समारोह में बक्शी साहब के बारे में जावेद अख्तर दद्वारा गया दिया गया वक्तव्य शामिल है जिसमें वह कहते हैं जज्बात का कौन-सा मोड है वह एहसास की कौन-सी मंजिल है वह धड़कनों की कौन-सी स्त है वो मोहब्बत का कौन-सा मौसम है, वो जिंदगी का कौन-सा मुकाम है जहां सुरों के बादलों से आनंद बख्शी के चांद झलकते न हो। आनद बख्शी आज के लोक कवि हैं। आनद बख्शी आज के समाज के शायर है।

हालांकि उनके प्रयोग ने समय के रहस्य के समाधान के बजाय उसे और उलझा दिया है। हम हर चीज पर संदेह कर सकते हैं, लेकिन अपने जन्म, जीवन और मृत्यु पर संदेह नहीं कर सकते। इस यात्रा में उम्र के कई पड़ाव भी हम पार करते हैं, जिन्हें समय की समझ के बगैर नहीं समझा जा सकता। लेकिन भौतिक विज्ञानियों में यह संदेह है कि जिस तरह हम समय का अनुभव करते हैं, वह मौजूद है भी या नहीं? अल्बर्ट आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत कहता है कि समय निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है। इसे एक उदाहरण से समझें। दिल्ली से लखनऊ के बीच की करीब साढ़े पांच सौ किलोमीटर की दूरी अगर सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तय करें, तो हमें लखनऊ पहुंचने में साढ़े पांच घंटे लगते हैं।

सौ साल बाद भी समय को लेकर उठे सवाल का आज भी नहीं मिला जवाब, क्या वक्त एक धोखा है?

हम हर चीज पर संदेह कर सकते हैं, लेकिन अपने जन्म, जीवन और मृत्यु पर संदेह नहीं कर सकते। इस यात्रा में उम्र के कई पड़ाव भी हम पार करते हैं, जिन्हें समय की समझ के बगैर नहीं समझा जा सकता। लेकिन भौतिक विज्ञानियों में यह संदेह है कि जिस तरह हम समय का अनुभव करते हैं, वह मौजूद है भी या नहीं? अंग्रेज तर्कशास्त्री मैक्टेगार्ट ताश के पत्तों के प्रयोग से एक तर्क गढ़ते हैं कि वक्त दरअसल कुछ है ही नहीं। यह एक भ्रम है। हालांकि उनके प्रयोग ने समय के रहस्य के समाधान के बजाय उसे और उलझा दिया है। हम हर चीज पर संदेह कर सकते हैं, लेकिन अपने जन्म, जीवन और मृत्यु पर संदेह नहीं कर सकते। इस यात्रा में उम्र के कई पड़ाव भी हम पार करते हैं, जिन्हें समय की समझ के बगैर नहीं समझा जा सकता। लेकिन भौतिक विज्ञानियों में यह संदेह है कि जिस तरह हम समय का अनुभव करते हैं, वह मौजूद है भी या नहीं? अल्बर्ट आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत कहता है कि समय निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है। इसे एक उदाहरण से समझें। दिल्ली से लखनऊ के बीच की करीब साढ़े पांच सौ किलोमीटर की दूरी अगर सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तय करें, तो हमें लखनऊ पहुंचने में साढ़े पांच घंटे लगते हैं। लेकिन अगर यही दूरी इससे ज्यादा तेज गति से तय की जाए, तो यात्रा में लगने वाला समय कम हो जाता है। जाहिर है कि आप कितनी तेजी से यात्रा कर रहे हैं, इसके आधार पर यह तेज या धीमा हो सकता है। इस आधार पर ही आधुनिक भौतिकी कहती है कि समय एक भ्रम भी हो सकता है। वैज्ञानिक लंबे समय से मानते आ रहे हैं कि समय पूर्ण और सार्वभौमिक है, जो हर किसी के लिए एक समान, हर जगह और स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में है। आइंस्टीन के सिद्धांतों के अनुसार, ब्रह्मांड एक स्थिर, चार आयामी ब्लॉक है, जिसमें सभी देश व काल एक साथ अस्तित्व में हैं और जिसमें किसी खास वर्तमान क्षण जैसी कोई चीज नहीं है। किसी के लिए जो अतीत है, वही दूसरे के लिए भविष्य हो सकता है। इसका अर्थ यह भी है कि समय अतीत से भविष्य की ओर यात्रा नहीं करता, जैसा अमूमन समझा जाता है। भौतिक विज्ञान के विभिन्न हिस्सों में जैसे क्वांटम यांत्रिकी में समय के विचार को लेकर एक टकराव दिखता है। तो क्या वाकई समय एक भ्रम है, यह पता लगाने का एक ही तरीका है कि तर्क का उपयोग कर यह साबित किया जाए कि समय अवास्तविक है। 1908 में, एक अंग्रेज दार्शनिक जे.एम. ई. मैक्टेगार्ट ने तर्क दिया कि हम केवल तार्किक सोच का उपयोग करके समय के भ्रम को समझ सकते हैं। मान लीजिए, किसी ने आपको ताश के पत्तों का एक बॉक्स दिया है, जिनमें से प्रत्येक कार्ड एक घटना का प्रतिनिधित्व करता है। एक पत्ता वर्ष 2024 का, दूसरा महारानी विक्टोरिया की मृत्यु का, और तीसरा 2026 में सूर्य ग्रहण को दर्शाता हो। ताश के इन पत्तों को मिला दिया गया है। आपको इन पत्तों को इस तरह से व्यवस्थित करने के लिए कहा गया है, जो समय का प्रतिनिधित्व करे। आप यह कैसे करेंगे? मैक्टेगार्ट इसका पहला तरीका बताते हैं, बी-श्रृंखला। इसमें आप पहला पत्ता चुनते हैं और उसे जमीन पर रख देते हैं। अब आप दूसरा पत्ता चुनते हैं और उसकी तुलना पहले से जमीन पर रखे पत्ते से करते हैं। अगर दूसरा पत्ता उससे पहले की घटना है, तो इसे जमीन पर रखे पत्ते के बाईं ओर रख देते हैं और अगर बाद की घटना है, तो दाईं ओर रख देते हैं। आप देखेंगे कि रानी विक्टोरिया की मृत्यु वाला पत्ता 2026 के सूर्य ग्रहण वाले पत्ते के बाईं ओर रखा जाएगा। 2024 वाला पत्ता 2026 के सूर्य ग्रहण वाले पत्ते के बाईं ओर, लेकिन रानी विक्टोरिया की मृत्यु वाले पत्ते के दाईं ओर रखा जाएगा। आप यह प्रक्रिया तब तक दोहराते रहें, जब तक कि आप एक क्रम में पत्ते न पा लें। लेकिन जब आप एक क्रम में पत्ते पा लेते हैं, तब आपको किसी कमी का एहसास होता है। अब पत्तों की पंक्ति स्थिर है, अब उनमें किसी बदलाव की जरूरत नहीं। अब आप कैसे कह सकेंगे कि समय बदलाव को दिखाता है? आखिर भौतिक विज्ञान भी तो यही कहता है कि समय बदलाव को मापने का जरिया है। कोई भी उपकरण जो समय को मापता है, वह बदलाव पर ही निर्भर होता है। जैसे घड़ी अपनी सुइयों की गति पर। याद कीजिए, आपका मूल काम पत्तों को इस क्रम में व्यवस्थित करना था, जो समय का सही ढंग से प्रतिनिधित्व करता हो। लेकिन अंत में आप वहां पहुंच गए, जो नहीं बदलता।

अब इस आधार पर यह कहना कि समय नहीं बदलता, तो अजीब होगा। जाहिर है कि बी-श्रृंखला समय को कैप्चर नहीं करती। एक और भी विकल्प है। आप फिर से शुरू कर सकते हैं। इसे मैक्टेगार्ट 'ए-श्रृंखला' कहते हैं, जिसका उपयोग करके आप फिर से ताश के पत्तों को व्यवस्थित कर सकते हैं और समय को भी समझ सकते हैं। आप पत्तों के तीन ढेर बनाएं। बाईं ओर की ढेरी अतीत में घटी घटनाओं को दर्शाती है, जैसे रानी विक्टोरिया की मृत्यु। बीच में वे घटनाएं, जो वर्तमान में घटित हो रही हैं, जैसे वर्ष 2024 और दाईं ओर, वे जो भविष्य में घटित होंगी, जैसे-2026 का सूर्य ग्रहण। बी-श्रृंखला के विपरीत, यह व्यवस्था स्थिर नहीं है। जैसे-जैसे समय बीतता है, आपको पत्तों को दाएं (भविष्य) से मध्य (वर्तमान) और फिर बाएं (अतीत) ढेर में लाना होगा। क्या इसका मतलब यह कि ए-श्रृंखला समय का वर्णन करती है? मैक्टेगार्ट के अनुसार, ए-श्रृंखला गोलाकार है। आपके हाथ द्वारा पत्तों को बाएं ढेर से मध्य और फिर दाएं ढेर में ले जाना एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समय में पहले ही हो चुकी है और आप उसका अनुकरण भर कर रहे हैं। इस व्यवस्था को चलाने के लिए आपको केवल समय पर रहना होगा। लेकिन समय को पकड़ने के लिए आपको समय से पहले होना होगा। जाहिर है कि बी-श्रृंखला समय को विश्लेषित नहीं कर सकती, क्योंकि उसमें बदलाव नहीं है। ए-श्रृंखला भी नहीं कर सकती, क्योंकि यह बदलाव तो करती है, लेकिन यह वृत्ताकार है, जिसमें पहले चीजें समय में घटती हैं, और आप सिर्फ अनुकरण करते हैं। इस आधार पर मैक्टेगार्ट इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि समय वास्तविक नहीं है, यह एक भ्रम है। सौ साल से भी ज्यादा वक्त बीतने के बाद भी समय को लेकर उठा सवाल आज भी अनुत्तरित है। ए और बी श्रृंखलाओं की सीमाओं के बाद एक सी-श्रृंखला की बात की जाने लगी, जिसके सिद्धांतकार कहते हैं, पत्तों की अतीत या भविष्य जैसी कोई दिशा नहीं होती। वर्ष 2024, रानी विक्टोरिया की मृत्यु और 2026 के सूर्य ग्रहण के बीच आता है। लेकिन सी-सिद्धांत के अनुसार ऐसा कोई क्रम नहीं है, यह केवल एक मानसिक आदत है। यह दीवार पर चित्र उकेरने जैसा है। आप कितने ही चित्र उकेर लें, दीवार की अपनी कोई दिशा नहीं होती। ए, बी या सी कौन-सी श्रृंखला सही है, या कोई भी सही नहीं है, यह तो समय ही बताएगा। महत्वपूर्ण यह है कि मैक्टेगार्ट ने बगैर किसी वैज्ञानिक निष्कर्ष का सहारा लिए समय की समस्या के समाधान के तर्क को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

सचेत करता है रूस और जर्मनी का इतिहास

विज्ञान को धर्म के अंतर्गत लाने की कोशिश खतरनाक है। जिस तरह बहुत पहले रूस में राजनीतिक हठधर्मिता ने रूसी विज्ञान को दशकों पीछे धकेल दिया और नाजियों की कट्टरता ने जर्मन विज्ञान को नष्ट कर दिया था, ऐसी स्थिति भारत में नहीं होनी चाहिए। वर्ष 2009 में दो प्रसिद्ध शिक्षाविदों एवं शीर्ष वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्रों के निदेशकों ने मुझे बताया था कि उन्हें विदेश में रहने वाले भारतीय शोधकर्ताओं से नौकरियों के लिए सबसे अच्छे आवेदन मिल रहे थे। यह दिलचस्प था, वे भारतीय वैज्ञानिकों के विदेश में नौकरी करने वाले स्वभाव से कहीं अधिक परिचित थे। दरअसल, वैज्ञानिकों की प्रतिभा एक बड़ी संख्या में पश्चिम देशों से वापस भारत की ओर लौट रही थी। प्रतिभा पलायन के इस आंशिक उलटफेर के कई कारण थे। वैश्विक वित्तीय संकट के कारण पश्चिमी विश्वविद्यालय धन की कमी का सामना कर रहे थे, वहीं भारत अनुसंधान और छात्रवृत्ति पर अधिक खर्च कर रहा था। केंद्र सरकार ने उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान केंद्रों की एक श्रृंखला स्थापित की, जिन्हें भारतीय वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा कई नए आईआईटी भी खुले। इन सभी ने अपने संकाय में शामिल होने के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तियों को आकर्षित किया। 1940-50 के दशकों में विदेशों से पीएचडी किए कुछ विद्वान भारत लौट आए थे, जिनमें ई.के.जानकी अम्मल, होमी भाभा, एम.एस. स्वामीनाथन, सतीश धवन और ओबैद सिद्दीकी जैसे विश्व स्तरीय वैज्ञानिक शामिल थे। उनके भारत लौटने की पहली वजह थी, अपनी मातृभूमि से प्रेम। ये सभी उस समय बड़े हुए थे, जब यहां राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था। जब भारत स्वतंत्र हो गया तो वे इसके भविष्य को आकार देने में मदद करने के लिए अपनी मातृभूमि में लौटना चाहते थे। हालांकि बाद के दशकों में जिन लोगों ने विदेश में पीएचडी की, काम करने के लिए उनके वहीं रहने की संभावना अधिक थी। वजह यह कि अधिकांश वैज्ञानिक अनुसंधान करने की स्वतंत्रता और अच्छा जीवन जीने के लिए बेहतर सामाजिक वातावरण चाहते हैं, जिसमें वे परिवार का पालन-पोषण कर सकें। अगर अपने देश में भी इसी तरह के मानदंड हों तो वे यहां भी काम करना चाहेंगे। 2009 में जब बेंगलुरु में मैंने बात की थी, भारतीय वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र हाल के दिनों की तुलना में अधिक आशाजनक लग रहा था। अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही थी, जिससे शैक्षणिक वेतन में वृद्धि हुई। समाज भी पिछले दशकों की तुलना में अधिक सहिष्णु और अधिक मिलनसार दिखाई दिया। ऐसा लगता है कि 1990 और 2000 के दशकों की शुरुआत में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण समाप्त हो गया था। स्वतंत्र अनुसंधान करने की इच्छा रखने वाले युवा वैज्ञानिक के लिए 1999, 1989 या 1979 की तुलना में 2009 भारत में नौकरी की तलाश करने के लिए कहीं बेहतर समय था। पंद्रह सालों के बाद क्या विदेश से पीएचडी करके भारत लौटने के इच्छुक युवा वैज्ञानिकों के लिए स्थिति अब भी उतनी ही आकर्षक होगी? मुझे इस पर भारी संदेह है। इसका मुख्य कारण यह है कि मोदी के नेतृत्व वाली वर्तमान सरकार, डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार की तुलना में वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति कहीं अधिक प्रतिकूल है। प्रधानमंत्री मोदी हार्वर्ड में पढ़ने वालों की तुलना में कड़ी मेहनत को प्राथमिकता देते हैं। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सोच बिल्कुल स्पष्ट थी। उन्होंने आईआईटी की स्थापना की और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च का पुरजोर समर्थन किया था। डॉ. मनमोहन सिंह ने भी आईआईएसईआर की स्थापना में मदद की। नेहरू से लेकर डॉ. सिंह के बीच के सभी प्रधानमंत्रियों ने इसी तरह बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा दिया। लेकिन 2014 के बाद से ये सब बदल गया है। एक तो वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान को बढ़ावा देने में नरेंद्र मोदी की रुचि बहुत कम है, दूसरे उन्होंने हिंदुत्व विचारकों को आईआईटी के कामकाज में हस्तक्षेप करने की अनुमति दे रखी है। पहले इन संस्थानों के निदेशकों को उनके अकादमिक साथियों द्वारा चुना जाता था, लेकिन अब इन संस्थानों के निदेशकों के नामों की दक्षिणपंथी विशेषज्ञों द्वारा जांच की जाती है और उनकी विचारधारा का पालन करने वालों को ही चुना जाता है। कुछ?समय पहले विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव द्वारा जारी किए गए नौ ट्वीट्स की एक श्रृंखला में भारतीय विज्ञान में हिंदुत्व की वैचारिक पैठ को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया। इन्होंने बेंगलुरु के भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की एक ऐसी प्रणाली तैयार करने के लिए प्रशंसा की, जिससे राम नवमी पर अयोध्या के नए मंदिर में भगवान की मूर्ति पर सूरज की रोशनी पड़ सके। उनके ट्वीट को लेकर सोशल मीडिया पर तीखी टिप्पणियां हुईं। कुछ आलोचक तो यहां तक कहने लगे कि सचिव महोदय जिस बात की भारतीय विज्ञान में महान योगदान के रूप में प्रशंसा कर रहे थे, वह कार्य हाईस्कूल के किसी तेज छात्र द्वारा भी किया जा सकता था।

मैं इस मामले को लेकर अपने उस दोस्त के पास गया, जिसने अमेरिकी विश्वविद्यालय से भौतिकी में पीएचडी की थी। उन्होंने धैर्यपूर्वक मुझे समझाया कि किस तरह से लेंस और दर्पणों को कलात्मक रूप से डिजाइन करके और उन्हें रणनीतिक रूप से सही जगहों पर रखकर सौर और चंद्र चक्रों के बीच विच्छेदन/संयोजन की गणना करके अयोध्या में मूर्ति पर सूर्य के प्रकाश को चमकाया गया था। इस तरह से विज्ञान को थोड़ा परिष्कृत किया गया था, लेकिन यह अभूतपूर्व तो किसी भी तरह से नहीं था। यह संभव है कि डीएसटी सचिव कट्टर हिंदू हों, फिर भी वह यह तो निश्चित रूप से जानते हैं कि प्रधानमंत्री द्वारा राम मंदिर का उद्घाटन आम चुनाव से कुछ दिन पहले आध्यात्मिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से किया गया था। उन्होंने स्वयं को इसके सर्जक और प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बावजूद डीएसटी सचिव ने इस बात को उजागर करना उचित समझा कि किसी प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा अब तक किया गया सबसे कमजोर वैज्ञानिक कार्य क्या हो सकता है। यह मामला पीएम की पसंदीदा राजनीतिक परियोजना से संबंधित है और चुनाव शुरू होने से कुछ ही दिन पहले हुआ, यह संयोग नहीं है। यह अत्यंत दुखद है कि प्रेस पर मोदी सरकार के हमले, सिविल सेवाओं और राजनयिक कोर का राजनीतिकरण, सशस्त्र बलों को धर्मनिरपेक्ष न रहने देने की कोशिश और स्वतंत्र नियामक संस्थानों को अपने अधीन करने का प्रयास किया गया है। इस बात की किसी को चिंता नहीं कि यह भारत में विज्ञान के अध्ययन को कमजोर कर रहा है। नाजियों के नस्ल सिद्धांत ने जर्मन विज्ञान को नष्ट कर दिया था। मार्क्सवाद की राजनीतिक हठधर्मिता ने रूसी विज्ञान को दशकों पीछे धकेल दिया। अब हमारे देश में सर्वोत्तम संस्थानों के शोधकर्ताओं के काम को हिंदुत्व और नरेंद्र मोदी की महिमा के अनुरूप ढालने की कोशिश हो रही है। इसका भारत में वैज्ञानिकों के मनोबल पर क्या प्रभाव पड़ेगा? जब विज्ञान पूरी तरह धर्म और राजनीति के हितों के अधीन है तो यहां काम करने वाले कौन से प्रतिभाशाली शोधकर्ता विदेशों से आने वाले आकर्षक प्रस्तावों का विरोध करेंगे और इस स्थिति में विदेशों में प्रशिक्षित किन वैज्ञानिकों के अपने देश में काम पर लौटने की संभावना है?

यूपी में भाजपा और सपा की अग्नि परीक्षा

हालांकि सबसे बड़े यादव महासभा को अपने पाले में कर भाजपा यादव वोटो में सेंध लगाने का लगातार प्रयास करती रही है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहनयादव उत्तर प्रदेश के पिछड़ों को पार्टी के पक्ष में करनेके लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। दूसरी तरफ सपा संस्थापकमुलायम सिंह यादव की अनुपस्थिति में पहला लोकसभा चुनाव लड़रहे पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव खुद चुनाव मैदान में उतरकर समाजवादी पार्टी की खोई हुई प्रतिष्ठा को पाने के लिए पूरी ताकत के साथ जुटे हुए हैं। सपा के लिए यह चुनावकरो या मरो जैसा बन चुका है।

उत्तर प्रदेश से बड़ी आस लगाए बैठी भारतीय जनता पार्टी के सामने तीसरे चरण के चुनाव में सबसे बड़ी चुनौती समाजवादी चक्रव्यूह को तोड़ते हुए 2019 में जीती हुई सीटों को बचाए रखने की है। तीसरे चरण में यादव बहुल जिन 10 लोकसभा सीटों पर 7मई को मतदान होना है,वहां 2019 मेंभाजपा ने आठ सीटें जीती थी। पहले के दो चरणों में 16सीटों पर हुए मतदान में रालोद का साथ मिला जबकि तीसरे चरण के इन क्षेत्रों में भाजपा का कोई सहयोगी दल नहीं है। हालांकि सबसे बड़े यादव महासभा को अपने पाले में कर भाजपा यादव वोटो में सेंध लगाने का लगातार प्रयास करती रही है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहनयादव उत्तर प्रदेश के पिछड़ों को पार्टी के पक्ष में करनेके लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। दूसरी तरफ सपा संस्थापकमुलायम सिंह यादव की अनुपस्थिति में पहला लोकसभा चुनाव लड़रहे पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव खुद चुनाव मैदान में उतरकर समाजवादी पार्टी की खोई हुई प्रतिष्ठा को पाने के लिए पूरी ताकत के साथ जुटे हुए हैं। सपा के लिए यह चुनावकरो या मरो जैसा बन चुका है। भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश की 80सीटों में से 75 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। 2014में भाजपा को 71सीटें मिली थी,लेकिन 2019 मेंसीटों की संख्या घटकर 62 रह गई थी। दिल्ली की गद्दी पर तीसरी बार काबिज होने के लिए भाजपा ने उत्तर प्रदेश और बिहार पर अच्छी खासी मेहनतकी है और पुराने एनडीए के सहयोगियों को एक बार फिर से जोड़ा है। उत्तर प्रदेश में परचम लहराने के लिए भाजपा ने अपना दल,ओमप्रकाश राजभर,संजय निषाद की पार्टी से गठबंधनकिया है, वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाट मतदाताओं को पाले में करनेके लिए रालोद को वापस एनडीए में लाई है। तीसरे चरण मेंप्रदेश की जिन दस लोकसभा सीटों पर मतदान होना है। उनमें संभल, हाथरस, आगरा, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा, बदायूं, आंवला और बरेली शामिल हैं। इनमें भाजपा ने 2014 में 10 में से 7सीटेंजीती जबकि 2019 में उत्तर प्रदेश के बाकी क्षेत्रों से भाजपा की सीटें कम हुई। लेकिन यादव बहुल इन क्षेत्रों में भाजपा ने अपनी साख मजबूत करतेहुए 10 में से 8 सीटें जीतने में कामयाबी हासिल की थी समाजवादी पार्टी केवल दोसीटों संभल और मैनपुरी तक सिमट कर रह गई थी। संभल सीट पर 2014में भाजपा को जीत मिली थी लेकिनमैनपुरी सीट 1996 से ही समाजवादी पार्टी के पास है। तीसरे चरण वाले क्षेत्र में ओबीसीका बोलबाला है, इनमें यादव, लोध,काछी, शाक्य,मुराव समुदाय के लोग शामिल हैं। इसकेअलावा यहां मुस्लिम मतदाता भी बड़ी संख्या में दखल रखते हैं। एटा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, बदायूं और संभल जैसी लोकसभा सीटों पर यादव मतदाता निर्णायकस्थिति में है।

यहां मुस्लिम वोट मिलने पर सपा उम्मीदवारमजबूत स्थिति में आ जाते हैं। संभल,बरेली, आंवला,बदायूं, फिरोजाबाद की सीट पर भी मुसलमान मतदाता अच्छी खासी पकड़ बनाए हुए हैं। एटा में लोध मतदाता निर्णायक हैं, जबकि काछी,शाक्य और मुरई समुदाय का एटा,बदायूं और मैनपुरी में प्रभाव है समाजवादी पार्टी पहली बार लोकसभा चुनावोंमें बिना मुलायम सिंह के चुनाव मैदान में है। शायद इसलिए भी अखिलेश यादव के लिए यह कड़ी परीक्षा है। सपा के गठन के बादसे अब तक जितने भी चुनाव हुए, उसमें मुलायम की बड़ी भूमिका रहती थी। यूपी में विपक्षी गठबंधनको अखिलेश लीड कर रहे हैं। पिछले दो लोकसभा चुनावों और विधानसभाचुनावों में सपा कुछ खास नहीं कर पाई है। जमीन से जुड़े नेता होने के कारण ही मुलायम को धरती पुत्र कहा जाता रहा है।वह पार्टी को यादवों की पार्टी बनाने के साथ ही पिछड़े वर्ग की पार्टी भी बनाए रख सके।

यह इसलिए संभव हो सका कि पिछड़ेवर्ग के नेताओं से उनका सामंजस्य बेहतर रहा। इटावा,मैनपुरी, कन्नौजमें यादव बहुल सीट पर मजबूत एमवाई समीकरण के कारण वह हमेशामैदान में बाजी मारते रहे। यादव के आलवा दूसरी प्रभावशालीपिछड़ी जातियों पर पकड़ से वह हमेशा आगे रहे। अखिलेश कीराजनीति में कभी कभी ऐसा लगता है कि पार्टी के कोर वोटर्सयादव और मुसलमान भी कहीं उनका साथ न छोड़ दें। आज अखिलेश केसाथ आजम खान कितना हैं, ये भी समझ में नहीं आता।

समाज, महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति करे जागरूक

अपने दैनिक घरेलू कार्यों को नियमित रूप से स्वयं ही करना चाहिए जिससे शारीरिक व मानसिक श्रम होगा व सेहत अच्छी बनी रहेगी। बाजार व डिब्बा बंद खाद्य व्यंजनों का सेवन न कर स्वयं ही घर में बनाने का प्रयास करें, जिससे शुद्धता व पोषणता प्राप्त हो। कोई भी शारीरिक समस्या होने पर घर-परिवार व पड़ोस की बुजुर्ग महिलाओं से सलाह लें या गंभीर बीमारी की स्थिति में डॉक्टर की सलाह लें। महिलाओं की गिरती सेहत एक गहन चिंता का विषय है। इनकी सेहत में सुधार के लिये मुफ़्त दूध-फल वितरण की योजना हो।

महिलाएं परिवार की धुरी हैं। अपने घर–परिवार के ध्यान रखने के चक्कर में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाती हैं। गरीब, मजदूर ,मध्यम वर्ग,ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के मामले में समाज और परिवार भी पूरी अनदेखी करता है। सरकार की अधिकांश योजनाएं भी उन्हें आर्थिक संबल प्रदान करने वाली हैं। न कि स्वास्थ्य की सुविधाएं देने वाली। सरकार, समाज, सामाजिक संगठन को महिलाओं के विशेष कैम्प लगाकर उन्हें जागरूक किए जाने की जरूरत है। महिलाओं को अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित बनाए रखना चाहिए। अपने दैनिक घरेलू कार्यों को नियमित रूप से स्वयं ही करना चाहिए जिससे शारीरिक व मानसिक श्रम होगा व सेहत अच्छी बनी रहेगी। बाजार व डिब्बा बंद खाद्य व्यंजनों का सेवन न कर स्वयं ही घर में बनाने का प्रयास करें, जिससे शुद्धता व पोषणता प्राप्त हो। कोई भी शारीरिक समस्या होने पर घर-परिवार व पड़ोस की बुजुर्ग महिलाओं से सलाह लें या गंभीर बीमारी की स्थिति में डॉक्टर की सलाह लें। महिलाओं की गिरती सेहत एक गहन चिंता का विषय है। इनकी सेहत में सुधार के लिये मुफ़्त दूध-फल वितरण की योजना हो। नीचे तबके और झुग्गियों में रहने वाली महिलाओं को अस्पतालों में दवायें भी मुफ़्त दी जानी चाहिए। महिला कामगारों के लिये मुफ़्त भोजन देने की व्यवस्था हो। महिलाओं को घरेलू कामकाज के बाद थोडा आराम लेना चाहिए। स्वयं अपने स्वास्थ्य की चिंता करें। अच्छा खानपान लें। बीमारी में डॉक्टर को दिखाने में लापरवाही न बरतें। मन से मजबूत बनें। किसी परेशानी में बडों के अनुभव से सीखना अच्छा रहता है। अच्छा साहित्य पढें। परिवार में सभी लोगों से अच्छे संबंध बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। महिलाएं नियमित व्यायाम की आदत डालें। साथ ही समय समय पर पौष्टिक आहार लें। घरेलू कामकाज के बाद पर्याप्त नींद लें। इससे तनाव और चिंताओं से दूर रखने में मदद मिलेगी। डॉक्टर से नियमित जांच करवाती रहें। महिलाओं को अच्छे स्वास्थ्य के लिए जागरूक भी करना चाहिए कि यदि स्वस्थ रहेंगी तो उनका परिवार भी खुशहाल और स्वस्थ रहेगा। महिलाएँ परिवार की धुरी हैं अतः परिवारजन तो उनके खानपान, व्यायाम, स्वास्थ्य के साथ उनके शौक, इच्छाओं व खुशियाँ को तवज्जो दें ही, वे भी स्वयं के प्रति जागरूक रहें, लापरवाह न हों। महिला की सेहत में सुधार के लिए छोटी छोटी गलतियां सुधारनी होगी। काम में वे शरीर का ध्यान रखने में लापरवाही बरतती हैं, जिससे बीमारी बाद में गंभीर बन जाती है। समय पर भोजन करना, पर्याप्त रूप से अपने को आराम देना। गर्मी में खूब पानी पीना। महिलाएं सिरदर्द व कमर दर्द के? लिए पैरासिटा?मॉल टेबलेट ले लेती है, इसके साइड इफैक्ट होते हैं। इनसे बचना चाहिए। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को पुरुष पर ही निर्भर रहना पड़ता है। उन्हें कई सामाजिक, मानसिक और शारीरिक दुर्बलताओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन लोकलाज के भय से वे कह नहीं पाती और समस्या को नजरअंदाज कर देती हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

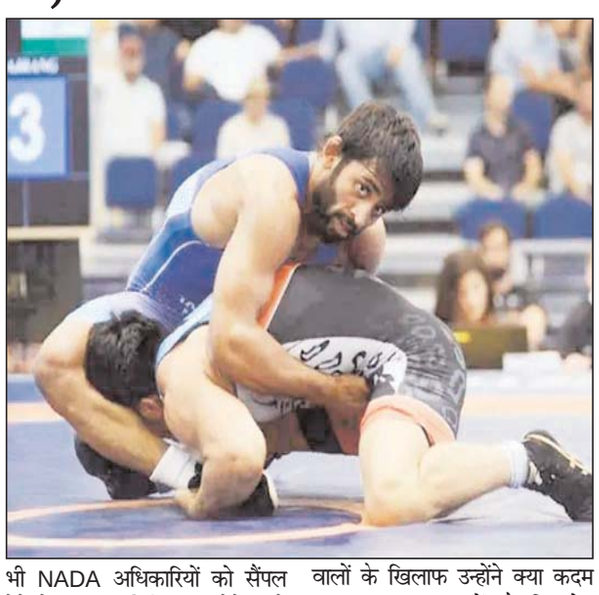

एंटी-डोपिंग एजेंसी ने पहलवान बजरंग को सस्पेंड किया, एजेंसी बोली- सैंपल नहीं दिया

नई दिल्ली। नेशनल एंटी-डोपिंग एजेंसी ने पहलवान बजरंग पूनिया को अनिश्चितकाल के लिए सस्पेंड कर दिया है। बजरंग पूनिया ने डोप टेस्ट के लिए अपना सैंपल नहीं दिया था, जिसके बाद NADA ने यह एक्शन लिया है। 10 मार्च को ओलिपिंक गेम्स में हिस्सा लेने के लिए हुए एशियन क्वालिफायर्स के नेशनल ट्रायल्स के दौरान NADA ने बजरंग से सैंपल देने के लिए कहा था। लेकिन, बजरंग ने सैंपल देने से इनकार कर दिया। NADA को विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (NADA) को बताना था कि एक एथलीट ने अपना सैंपल क्यों नहीं दिया। 23 अप्रैल को NADA ने बजरंग को नोटिस दिया और 7 मई तक जवाब देने को कहा था। बजरंग ने अभी तक जवाब नहीं दिया है और इसलिए उन्हें निलंबित कर दिया गया है। बजरंग पूनिया ने पोस्ट करके इसका जवाब दिया। उन्होंने लिखा- मैंने कभी

भी NADA अधिकारियों को सैंपल देने से इनकार नहीं किया, उन्होंने पहले मेरा सैंपल लेने के लिए एक्सपायरी किट दी थी। एक्सपायरी किट देने वालों के खिलाफ उन्होंने क्या कदम उठाए। इसका जवाब दें और फिर मेरा डोप टेस्ट ले लीजिए। दो महीने पहले ओलिपिंक गेम्स में भाग लेने के लिए हुए ट्रायल में बजरंग पूनिया को फ्री-स्टाइल 65 चत्त वेट कैटेगरी में रोहित ने 9-1 से मात दी थी। सेमीफाइनल में हारने के बाद बजरंग पूनिया गुस्से में तुरंत भारतीय खेल प्राधिकरण केंद्र से चले गए। राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी के अधिकारियों ने पूनिया के डोप सैंपल लेने की कोशिश की, लेकिन वह सैंपल नहीं दिए। बजरंग पूनिया को पिछले साल चीन के हांगझोउ एशियन गेम्स के सेमीफाइनल मैच में हार मिली थी। इतना ही नहीं, ब्रॉन्ज मेडल मैच में भी बजरंग को जापानी पहलवान के. यामागुची ने 10-0 से हरा दिया था। उनकी हार के बाद सोशल मीडिया पर कई लोग भड़क उठे थे, क्योंकि एशियन गेम्स में भाग लेने से पहले उन्होंने किसी प्रतिस्पर्धी मुकाबले में हिस्सा नहीं लिया था। पहलवानों ने ङ्खस्नढ्ढ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण पर महिला रेसलर्स के यौन शोषण के आरोप लगाए थे।

चेन्नई ने पंजाब को 28 रन से हराया जडेजा ने 43 रन बनाकर 3 विकेट लिए

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स ने आईपीएल-2024 के प्लेऑफ की उम्मीदें मजबूत कर ली है। टीम ने मौजूदा सीजन के 53वें मुकाबले में पंजाब किंग्स को 28 रन से हराया। चेन्नई की पंजाब के खिलाफ लगातार पांच हार के बाद यह पहली जीत है। इस जीत से ष्टस्य्य पॉइंट्स टेबल में तीसरे नंबर पर आ गई है। चेन्नई के पास 11 मैचों के बाद 12 अंक हैं। धर्मशाला मैदान पर रविवार को पंजाब ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला किया। चेन्नई ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 167 रन बनाए। जवाब में पंजाब 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 139 रन बना सकी। रवींद्र जडेजा ने दोहरा प्रदर्शन किया। उन्होंने 26 बॉल पर 43 रन की पारी खेली। इतना ही नहीं, 3 विकेट भी हासिल किए। चेन्नई ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट

खोकर 167 रन बनाए और पंजाब को 168 रन का टारगेट दिया। चेन्नई की तरफ से सबसे ज्यादा 43 रन रवींद्र जडेजा ने बनाए। ष्टस्य्य के पूर्व कप्तान एमएस धोनी पहली ही बॉल पर बोल्ड हो गए। उन्हें हर्षल पटेल ने आउट किया। ऋतुराज गायकवाड ने 32 और डेरिल मिचेल ने 30 रन की पारी खेली। मोईन अली और शार्दूल ठाकुर ने 17-17 रन का योगदान दिया। पंजाब की ओर से राहुल चाहर और हर्षल पटेल ने 3-3 विकेट लिए।

मथीश पथिराना हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण श्रीलंका लौटेंगे

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स ने रविवार, 5 मई को घोषणा की कि उनके स्टार तेज गेंदबाज मथीश पथिराना हैमस्ट्रिंग की चोट से रिकवरी के लिए श्रीलंका लौटेंगे। CSK ने जारी बयान में कहा, मथीश पथिराना हैमस्ट्रिंग की चोट से जूझ रहे हैं और आगे की रिकवरी के लिए श्रीलंका लौटेंगे। चेन्नई सुपर किंग्स पथिराना के जल्द रिकवर होने की कामना करती है। मथीश पथिराना आईपीएल 2024 में 6 मैचों में 13 विकेट के साथ CSK के दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले खिलाड़ी हैं। बांग्लादेश के मुस्तफिजुर रहमान 14 विकेट के साथ टॉप पर हैं। पथिराना के साथ ही मुस्तफिजुर रहमान भी चेन्नई सुपर किंग्स के साथ नहीं होंगे, क्योंकि बांग्लादेश के तेज गेंदबाज स्वदेश लौट आए हैं। 2 जून से शुरू होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप 2024 से पहले जिम्बाब्वे के खिलाफ 5 टी-20 मैचों की सीरीज में हिस्सा

लेंगे। मुस्तफिजुर और पथिराना घर लौट आए हैं, वहीं, ष्टस्य्य के वरिष्ठ तेज गेंदबाज दीपक चाहर हैमस्ट्रिंग चोट के साथ कुछ समय के लिए बाहर हो गए हैं। दीपक ने पंजाब किंग्स के खिलाफ चेन्नई में केवल 3 गेंदें ही फेंकी।CSK के लिए रविवार को एक अच्छी खबर आई जब तुषार देशपांडे बॉलिंग अटैक में लौट आए हैं।

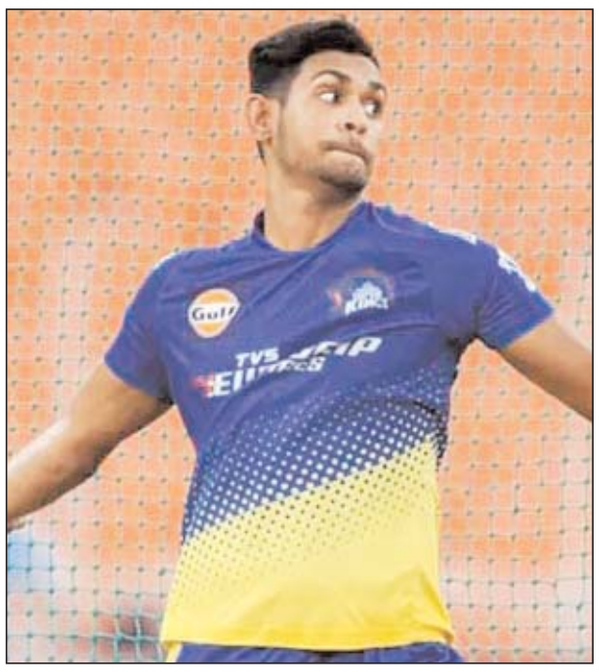

CSK ने पथिराना को 2022 में IPL के मेगा ऑक्शन में 20 लाख रुपए में अपने साथ जोड़ा था। इससे पहले पथिराना को 2020 में दिल्ली कैपिटल्स ने खरीदा था। मथीशा पथिराना को जूनियर मलिंगा के नाम से जाना जाता है। पथिराना का बॉलिंग एक्शन एकदम लसिथ मलिंगा के जैसा है। इस गेंदबाज का एक्शन भी स्लिंग है और मलिंगा की तरह ही गेंद उनके हाथ से छूटती है। इस वहज से उन्हें जूनियर मलिंगा और लिटिल मलिंगा भी कहते हैं।

....शेष पृष्ठ एक का

यह चुनाव श्रीराम विरोधी और सनातनी संस्कृति के बीच में है : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

कांग्रेस और इसके घमंडिया गठबंधन में कूट-कूटकर अहंकार भरा हुआ है। ये अहंकारी अब तक भगवान श्रीराम के दर्शन करने नहीं पहुंचे हैं। ऐसे अहंकारियों को तो देश की जनता ही सबक सिखाएगी।

बीना से कांग्रेस विधायक निर्मला सप्रे ने ली भाजपा की सदस्यता

सागर लोकसभा सीट के राहतगढ़ में आयोजित जनसभा के दौरान सागर जिले की एकमात्र कांग्रेस विधायक श्रीमती निर्मला सप्रे ने भी भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उन्हें भाजपा का गमछा पहनाकर उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई एवं पार्टी में स्वागत किया। इस दौरान उनके साथ बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भी भाजपा का दामन थामा।

क्षेत्र से मेरा और मेरे परिवार का आत्मीय संबंध - श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया

गुना लोकसभा क्षेत्र के मुंगावली में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री व भाजपा प्रत्याशी श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि मेरा इस क्षेत्र की जनता से आत्मीय संबंध है। मेरे पूज्य पिता जी ने मुझे सिखाया था कि याद रखना सिंधिया परिवार का मतलब माता-पिता, पत्नी, बेटा-बेटी नहीं होता, सिंधिया परिवार का मलतब है ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की पूरी जनता। मेरा इस क्षेत्र की पूरी जनता से आत्मीय संबंध है। मैं क्षेत्रवासियों के साथ उनके हर सुख-दुख में हमेशा साथ रहता हूं। पूज्य पिता के निधन के बाद 2002 में जब मैं इस क्षेत्र में आया तो जनता ने मुझे भरपूर प्यार, स्नेह व आशीर्वाद प्रदान किया। मुंगावली में पहले सड़कें नहीं थीं, जो थीं, सिर्फ नाम-मात्र की थीं। इसके बाद यहां सड़कों को सुधरवाने के साथ सड़कों का जाल बिछाया। मुंगावली में ट्रेनें नहीं रूकती थीं, मैंने प्रयास करके यहां लंबी दूरी की ट्रेनों का स्टॉपेज करवाया।

सरकार के साथ मिलकर कोरोना काल में एक-एक व्यक्ति की जान बचाने का प्रयास किया

श्री सिंधिया ने कहा कि कोरोना संक्रमण काल में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के साथ मिलकर इस क्षेत्र के एक-एक व्यक्ति की जान बचाने के लिए पूरा प्रयास किया है। महामारी के दौरान झारखंड से वायुसेना के विमान के जरिए टैंकरों से ऑक्सीजन मंगवाकर क्षेत्र की अस्पतालों में पहुंचाई हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुना-शिवपुरी लोकसभा क्षेत्र में कई विकास कार्य किए गए हैं। आने वाले दिनों में सिंचाई की एक बड़ी परियोजना भी पूरी होने जा रही है, जिससे इस क्षेत्र के अधिकांश गांवा में सिंचाई की सुविधा भी सुनिश्चित हो जाएगी। आप सभी श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

.......शेष पृष्ठ एक का

भाजपा जनता की सेवा करती है, कांग्रेस अपने लिए अवसर तलाशती है: व्ही.डी. शर्मा

लिए कार्य कर रहे हैं। आप सभी श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार ऐतिहासिक मतों से प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा प्रत्याशी को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। भाजपा सांसद इस पूरे क्षेत्र का विकास सुनिश्चित करेंगे। 2003 के पहले मुरैना सहित पूरे मध्यप्रदेश में स?क, बिजली, पीने के लिए पानी और सिंचाई की सुविधा के क्या हाल थे, आप सभी जानते हैं। 2003 में मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद और 2014 में केंद्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश और प्रदेश ने विकास की रफ्तार पक? ली है। विकास की इस गति को बनाए रखने के लिए भाजपा को अपना आशीर्वाद दें। भाजपा ही मध्यप्रदेश और देश का विकास कर सकती है। इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री आशीष उषा अग्रवाल, विधायक श्रीमती रीति पाठक, जिला अध्यक्ष डॉ. योगेश पाल गुप्ता, श्री रघुराज सिंह कंसाना, श्री बलवीर सिंह दंडोतिया, पूर्व विधायक श्री गिरिराज दंडोतिया, श्री अनूप सिंह भदौरिया, श्री नरेश यादव सहित जिला पदाधिकारी उपस्थित रहे।

श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर प्रधानमंत्री बनाने मांगा जनता से आशीर्वाद*

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने वरिष्ठ नेता व न्यू ज्वाइनिंग टोली के प्रदेश संयोजक डॉ. नरोत्तम मिश्रा के साथ डबरा में ग्वालियर लोकसभा क्षेत्र से पार्टी प्रत्याशी श्री भारत सिंह कुशवाह के समर्थन में रोड शो में शामिल होकर जनता का अभिवादन किया और श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार ऐतिहासिक बहुमत से प्रधानमंत्री बनाने के लिए जनता से आशीर्वाद मांगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर से प्रधानमंत्री बनाने, भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र तथा विश्व गुरू बनाने के लिए पार्टी प्रत्याशी को जिताने की अपील की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने रोड शो के माध्यम से जनता से पार्टी प्रत्याशी श्री भारत सिंह कुशवाह को ऐतिहासिक बहुमत से विजयी बनाने की अपील करते हुए आशीर्वाद मांगा। रोड शो के दौरान डबरा की स?कें फिर एक बार मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार के नारों से गूंज उठीं। रोड शो का जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। लोग अपने घरों के बाहर ख? होकर, कुछ छतों व पहली मंजिल से पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। रोड शो में पार्टी प्रत्याषी श्री भारत सिंह कुषवाह, पूर्व मंत्री श्रीमती इमरती देवी, ग्वालियर ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री कौषल शर्मा एवं श्री विरेन्द्र जैन ने भी रथ पर सवार होकर जनता का अभिवादन किया।

भिंड में रोड में पार्टी प्रत्याशी को विजय बनाने की अपील

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने भिंड में माधवगंज हाट से रोड शो प्रारंभ कर महाजनसंपर्क करते हुए किला गेट, हनुमान बजरिया, गोल मार्केट, सदर बाजार, परेड चौराहा तक जनता का अभिवादन करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार ऐतिहासिक बहुमत से प्रधानमंत्री बनाने पार्टी प्रत्याशी श्रीमती संध्या राय को प्रचंत मतों से विजयी बनाने की अपील की। रोड शो का स्थानीय लोगों, व्यवसायियों और सामाजिक संगठनों के लोगों ने स्थान-स्थान पर पुष्पाहार और पुष्पवर्षा कर ऐतिहासिक स्वागत किया गया। रोड शो के साथ हजारों की संख्या में स्थानीय लोग अबकी बार 400 पार और फिर एक बार मोदी सरकार के नारे लगाते हुए चल रहे थे। रोड शो पर स्थानीय लोगों ने अपने घरों, और छतों से भी पुष्पवर्षा कर रहे थे।

भिंड में आयोजित रोड में में सांसद व पार्टी प्रत्याशी श्रीमती संध्या राय, पार्टी के प्रदेश मंत्री श्री लोकेन्द्र पाराशर, विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह, जिला अध्यक्ष श्री देवेन्द्र सिंह नरवरिया, जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री कामना भदौरिया, लोकसभा संयोजक श्री अवधेश सिंह कुशवाहा सहित पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ग्वालियर-समाचार

चुनावी शोरगुल थमा, मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस में

ग्वालियर। लोकसभा चुनाव के तहत तीसरे चरण का मतदान सात मई को होना है। वहीं इसको लेकर रविवार सायं को चुनावी शोरगुल थम गया। तीसरे चरण के चुनाव में मध्य प्रदेश की आठ लोकसभा सीटों मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल और राजगढ़ पर मतदान कराया जाएगा। इनमें से ग्वालियर चंबल अंचल की गुना हॉट सीट है जहां से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की चुनावी किस्मत का फैसला होगा।

यहां बता दें कि गुना सिंधिया परिवार की पारंपरिक सीट है जिस पर 2019 में ज्योतिरादित्य को हार का सामना करना पड़ा था। तब उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा था। उन्हें बीजेपी के केपी यादव ने हराया था। अब ज्योतिरादित्य बीजेपी का हिस्सा हैं। यहां ज्योतिरादित्य का मुकाबला कांग्रेस के राव यादवेंद्र सिंह यादव से है जिनके पिता देशराज सिंह के खिलाफ2002 में सिंधिया ने चुनाव जीता था। वहीं मुरैना श्योपुर लोकसभा सीट पर त्रिकोणीय मुकाबला है। मुरैना में कांग्रेस से नीटू सिकरवार, भाजपा से शिवमंगल सिंह तोमर और बसपा से रमेश गर्ग के बीच कांटे की टक्कर है। इसी प्रकार भिंड दतिया लोकसभा सीट पर कांग्रेस के विधायक फूल सिंह बरैया और भाजपा की वर्तमान सांसद संध्या राय में मुख्य मुकाबला है। जबकि बसपा से कांग्रेस के बागी आशीष जरारिया चुनाव लड़ रहे है। इसी तरह ग्वालियर लोकसभा सीट भी चर्चा का केन्द्र बनी हुई है। यहां दो हारे विधायकों में मुख्य मुकाबला है। कांग्रेस से पूर्व विधायक प्रवीण पाठक जहां मैदान में है। वहीं भाजपा से पूर्व राज्यमंत्री भारत सिंह कुशवाह चुनावी ताल ठोंक रहे है। दोनों ही नेता पहली बार लोकसभा में किस्मत आजमा रहे है। प्रचार के आखिरी दिन ग्वालियर चंबल अंचल की चारों सीटों पर प्रत्याशियों और उनके समर्थकों ने जनता जनार्दन का दिल जीतने के लिये पूरी आजमाईश की। ग्वालियर में कांग्रेस प्रत्याशी प्रवीण पाठक ने जहां रविवार को लंबा रैला निकालकर आमजनों से विजयी बनाने के लिये आग्रह किया। वहीं भाजपा प्रत्याशी भारत सिंह ने भी जनता के दरबार में पहुंचकर हाजिरी लगाई। चंबल अंचल में भाजपा प्रत्याशियों के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ, केन्द्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव, पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने प्रचांर किया। वहीं कांग्रेस प्रत्याशियों के लिये पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी, पूर्व सांसद राज बब्बर, राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी, विधानसभा में विपक्षा का नेता उमंग सिंघार, राज्यसभा सांसद अशोक सिंह ने प्रचार किया।

अमरनाथ यात्रा 29 जून से, अग्रिम पंजीयन करा सकते हैं भक्त

ग्वालियर। अमरनाथ यात्रा इस बार 29 जून से शुरू होगी। यह यात्रा 52 दिनों की होगी और 19 अगस्त तक चलेगी। यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालु अपना अग्रिम पंजीयन पहलगाम आनलाईन बालटाल के लिये करा सकते है। श्राईन बोर्ड द्वारा आनलाईन पहलगाम व बालटाल से 500-500 यात्रा परमिट और बढाये गये है। जम्मू उधमपुर श्रीनगर एयरपोर्ट पर भी करंट पंजीयन होंगे।

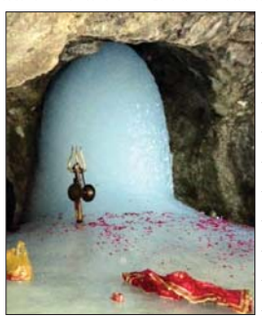

ग्वालियर स्थित पंजाब नैशनल बैंक में बैंक अधिकारी अनुराग ने बताया कि पंजीयन शुल्क 150 रुपये श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड रखा है। नया बाजार में यात्रा के पंजीयन बायोमेट्रिक पद्धति से कराये जा रहे है। समिति के संरक्षक महेंद्र भदकारिया, रामशरण गुप्ता, संतकुमार गुलाटी, अध्यक्ष लोकेश शर्मा ने बताया कि इस मनीग्राम भंडारे के लिये सभी सेवादारों ने भंडारे की सामग्री एकत्रित करना शुरू कर दी है। बाबा बर्फानी समिति सचिव पन्नालाल गौड़, कोषाध्यक्ष भरत कुमार ढींगरा ने बताया कि पहलगांव मार्ग से भक्त ज्यादा जाना पंसद कर रहे हैं, क्योंकि प्राकृतिक सुंदरता इसी मार्ग में है इसलिये पंजीयन पहलगाम से ज्यादा कराये जा रहे है। श्याम लहरिया, सुनील बिरला, सुनील शिवहरे ने कहा कि ग्वालियर के भक्तों के सहयोग से बाबा बर्फानी समिति द्वारा तीसरा विशाल भंडारा मनीग्राम बैस कैंप जम्मू कश्मीर में 28 जून से भंडारा शुरू होगा, क्योंकि अमरनाथ यात्रा पर एक दिन पहले बालटाल पहुंचना शुरू हो जाते है। पहला जत्था 25 जून को अध्यक्ष लोकेश शर्मा, श्याम लहारिया, सुनील के नेतृत्व में 51 सदस्यों का जत्था 25 जून को जायेगा।

सेवानिवृत्त कर्मचारी के बैग से 20 हजार पार

ग्वालियर। शहर में यात्री वाहनों में चोरी और जेबकटी की वारदातें थमने का नाम नहीं ले रही है। बैंक से पेंशन के रूपये निकालकर घर आ रहे रिटायर्ड कर्मचारी की जेब से अज्ञात चोर 19 हजार 500 रुपए निकाल लिए। घटना बहोड़ापुर थाना क्षेत्र के एटीएम तिराहे के पास की है। घटना को अंजाम संदेही महिलाओं ने दिया है। वारदात के बाद पीडित थाने पहुंचा और मामले की शिकायत पुलिस से की। बहोड़ापुर थाना क्षेत्र के विनय नगर सैक्टर तीन निवासी देवसिंह कुशवाह पुत्र परसराम कुशवाह पीएचई से रिटायर्ड कर्मचारी है और बीते रोज वह इंदरगंज स्थित बैंक से पेंशन के रूपये निकालने आए थे और खाते से बीस हजार रुपए निकालने के बाद पांच सौ रुपए ऊपर की जेब में रखने के बाद शेष रुपए बैंग में रख लिए। एटीएम तिराहे पहुंचने पर उनकी नजर बैग पर पड़ी तो उनके बैग की चेन खुली हुई थी और उसमे रखी रकम गायब थी। मामला समझ में आते ही पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और उनकी शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। पीडित ने बताया कि उनके बगल में दो महिलाएं बैठी थी और संभवतः उन्होंने ही वारदात को अंजाम दिया है।

विघुत कनेक्शन काटने पर कर्मचारी को पीटा

ग्वालियर। बिल जमा नहीं करने पर बिजली कर्मचारियों ने कनेक्शन काटा तो आरोपियों ने उन पर हमला कर दिया। गोला का मंदिर हनुमान बगिया निवासी शिवम सूर्यवंशी पुत्र शालिगराम सूर्यवंशी बिजली विभाग में सहायक प्रबंधक है। बीते रोज वह बिजली बिल की वसूलीकरने के लिए गुढ़ा गली नंबर चार निवासी दयावती चौहान व रणवीर सिंह चौहान के घर पहुंचे, क्योंकि उन पर बिजली बिल का 76 हजार 362 रुपए बकाया था। कई बार गेट खटखटाने के बाद अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उनके साथ आए कर्मचारियों की मदद से उनका कनेक्शन काट दिया। कनेक्शन कांटे जाने के बाद जब लाइट बंद हुई तो दयावती चौहान के परिजन बाहर आए और बिजली कर्मचारियों से उलझ गए और बिजलीकर्मियों से अभद्रता कर मारपीट पर उतर आए। घबराए कर्मचारियों ने मामले की सूचना पुलिस को दी।

बाहर से आए राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं को जिले से बाहर जाने के आदेश

ग्वालियर । भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित लोकसभा निर्वाचन कार्यक्रम के तहत चुनावी प्रचार का शोरगुल रविवार 5 मई को शाम 6 बजे थम गया। निर्धारित कार्यक्रम के तहत ग्वालियर लोकसभा क्षेत्र में 7 मई को प्रातः 7 बजे से सायंकाल 6 बजे तक मतदान होगा।

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान एवं पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने स्पष्ट किया है कि चुनावी शोरगुल थमने के बाद कोई भी राजनैतिक दल, प्रत्याशी या समूह के लोग एकत्रित होकर कोई जुलूस, जनसम्पर्क या रैली नहीं निकाल सकेंगे। आदेश के उल्लंघन की दशा में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा-133 एवं अन्य कानूनी प्रावधानों के तहत सख्त कार्रवाई की जायेगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती चौहान ने बाहर से आये विभिन्न राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को जिले की सीमा से बाहर चले जाने के आदेश दिये हैं। उन्होंने कहा है कि इसका सख्ती से पालन कराया जायेगा। होटल, लॉज, सामुदायिक भवन व धर्मशाला आदि का निरीक्षण कर देखा जायेगा कि वहाँ कौन-कौन से व्यक्ति ठहरे हुये हैं। अधिकारी द्वय ने साफ किया है कि जो ग्वालियर जिले के मतदाता नहीं हैं ऐसे कार्यकर्ताओं को हर हाल में जिले की सीमा से बाहर जाना होगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने यह भी स्पष्ट किया है कि चलचित्र, टेलीविजन व अन्य माध्यमों द्वारा जनता के समक्ष चुनाव संबंधी सचित्र प्रचार-प्रसार नहीं कर सकेगा। इसी तरह संगीत या नाट्य, अभिनय या अन्य कोई आमोद-प्रमोद के जरिए मतदाताओं को लुभाने के प्रयास नहीं किए जा सकेंगे। यदि कोई इस आदेश का उल्लंघन करेगा तो उसे दो सजा भुगतनी होगी।

तेज रफ्तार ट्रक में लगी आग, मचा हड़कंप

ग्वालियर। तेज रफ्तार हाइवे पर जा रहे एक ट्रक में अचानक आग लग गई। आग तेजी से फैल रही थी और चालक व परिचालक को इसका पता हीं नहीं था। वहां से गुजर रहे वाहन चालकों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस की एफ्आरवी मौके पर पहुंची और ओवरटेक कर ट्रक को रूकवाया और किसी तरह ड्राइवर व उसके साथी को बाहर निकाला।

बिलौआ थाना प्रभारी अभय सिंह परमार ने बताया कि बीती रात हाइवे पर जा रहे एक ट्रक में आग लग गई। आग लगने का चालक व उसके साथी को पता नहीं चला और वह अपनी धुन में अपना वाहन दौड़ाते जा रहे थे। इसी बीच वहां से निकल रहे वाहन चालकों ने उनको सूचना दी तो तुरंत ही बिलौआ थाने की मोबाइल पर तैनात एएसआई सुरेश सरवाईया तथा एफ्आरवी पर तैनात प्रधान आरक्षक बृजेन्द्र जाट, आरक्षक सुनील मांझी और पायलट रामनिवास बघेल को मौके पर पहुंचाया, एफ्आरवी और मोबाइल ने भी चालक को रोकने का प्रयास किया, लेकिन वह अपनी धुन में था, इसके बाद एफ्आरवी ने ट्रक को ओवर टेक कर रूकवाया और दमकल की मदद से आग बुझवाई, लेकिन तब तक ट्रक का काफी हिस्सा जलकर खाक हो गया था। पुलिस पूछताछ में चालक गुरुनाम सिंह सिख ने बताया कि वह स्क्रेप लेकर पंजाब जा रहे थे। हाइवे पर आग से घिरे ट्रक को देखकर वहां से निकल रहे वाहन चालकों में हड़कंप मच गया और सुरक्षा को देखते हुए अपने वाहन साइड से पार्क कर लिए।

मतदान केन्द्रों पर सभी व्यवस्थाएं चॉक-चौबंद, आज पहुंचेगे मतदान दल, कल होगी वोटिंग

मुरैना-श्योपुर संसदीय क्षेत्र में 20,04,688 मतदाता करेंगे अपने मताधिकार का प्रयोग

श्योपुर, लोकसभा निर्वाचन के तहत 7 मई को वोट डाले जायेगे, इसे दृष्टिगत रखते हुए मतदान केन्द्रों पर सभी प्रकार की व्यवस्थाएं चॉक-चौबंद कर ली गई है। निर्वाचन सामग्री एवं ईव्हीएम मशीनो के साथ मतदान दल आज अपने-अपने निर्धारित मतदान केन्द्रों पर पहुंच जायेगे तथा निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार सभी प्रक्रियाओ का पालन करते हुए कल 7 मई को मतदान की प्रक्रिया संपन्न करायेगे।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन के तहत जिले के सभी 656 मतदान केन्द्रों पर सभी प्रकार की आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध करा दी गई है। मतदाताओं के लिए पेयजल, छाया, प्रसाधन, बैठक व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, आदि के इंतजाम भी पर्याप्त रूप से किये गये है। ग्रीष्मकाल को दृष्टिगत रखते हुए मतदान केन्द्रों पर पंखे, कूलर तथा ठंडे पानी के मटको की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है। उन्होने बताया कि सभी पोलिंग पार्टियों को आज 6 मई को मतगणना स्थल पालीटेक्निक कॉलेज से श्योपुर एवं विजयपुर विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्रो पर रूट अनुसार रवाना किया जायेगा। पोलिंग पार्टियों को सुबह 6 बजे शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज पहुंचने के निर्देश दिये गये है। उन्होने बताया कि 656 मतदान केन्द्रो के लिए 10 प्रतिशत रिजर्व सहित 722 मतदान दलो का गठन किया गया है, जिन्हे चरणबद्ध तरीके से मतदान प्रक्रिया का प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। 70 सेक्टर अधिकारी बनाये गये है, महिला प्रबंधित बूथो के लिए 14 महिला अधिकारियों को आवश्यक सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया है। श्योपुर विधानसभा क्षेत्र में 09 तथा विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में 05 प्रभारी अधिकारी बनाये गये है।

मतदान दलो को केन्द्र तक पहुंचाने के लिए 154 रूट निर्धारित किये गये है। लोकसभा निर्वाचन के तहत 100 मतदान केन्द्र महिला अधिकारियो, कर्मचारियों द्वारा प्रबंधित बनाये गये है, इन मतदान केन्द्रों पर निर्वाचन की समस्त प्रक्रिया महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा संपन्न कराई जायेगी। इसके अलावा सुरक्षाकर्मी के रूप में भी महिला पुलिसकर्मी रहेगी। इसके साथ ही 50 मतदान केन्द्रों को आदर्श मतदान केन्द्र के रूप में बनाया गया है। 05 दिव्यांग बूथ भी बनाये गये है, जिनका संचालन दिव्यांग मतदान अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया जायेगा।

श्योपुर एवं विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में 5 लाख 14 हजार 234 वोटर

मुरैना-श्योपुर संसदीय क्षेत्र से कुल 15 प्रत्याशी चुनाव मैदान में है। मुरैना-श्योपुर संसदीय क्षेत्र में 20 लाख 4 हजार 688 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग 7 मई को करेंगे। इसके लिये संसदीय क्षेत्र की 8 विधानसभा क्षेत्रों में 2 हजार 362 मतदान केन्द्र बनाये गये है। जिनमें मुरैना जिले की 6 विधानसभा क्षेत्रों में 1706 मतदान केन्द्र और श्योपुर जिले की 2 विधानसभा क्षेत्रों में 656 मतदान केन्द्र निर्धारित है।

इन मतदान केन्द्रों पर 10 लाख 70 हजार 467 पुरूष मतदाता और 9 लाख 34 हजार 198 महिला मतदाता एवं 22 थर्ड जेण्डर मतदाता है। मुरैना संसदीय क्षेत्र में इपिक रेश्यो 60.99 और जेण्डर रेश्यो 890 है।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड ने बताया कि मुरैना- श्योपुर संसदीय क्षेत्र अंतर्गत शामिल श्योपुर जिले की दो विधानसभा क्षेत्रों में 5 लाख 14 हजार 234 वोटर्स है। जिसमें 02 लाख 67 हजार 674 पुरूष मतदाता तथा 02 लाख 46 हजार 557 महिला मतदाता तथा 03 थर्ड जेण्डर वोटर्स शामिल है, इसके अलावा 157 सर्विस वोटर भी है, जिनमें 153 पुरूष एवं 04 महिला सर्विस वोटर है।

श्योपुर विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 59 हजार 304 कुल मतदाता है, जिनमें 1 लाख 33 हजार 933 पुरूष तथा 01 लाख 25 हजार 370 महिला एवं एक थर्ड जेण्डर मतदाता है। इसके अलावा 54 सर्विस वोटर है, जिनमें 53 पुरूष तथा 01 महिला मतदाता शामिल है।

विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 54 हजार 930 कुल मतदाता है, जिनमें 1 लाख 33 हजार 741 पुरूष तथा 1 लाख 21 हजार 187 महिला एवं दो थर्ड जेण्डर मतदाता है। इसके अलावा 103 सर्विस वोटर है, जिनमें 100 पुरूष तथा 03 महिला मतदाता शामिल है।

श्योपुर जिले की दोनो विधानसभा क्षेत्रो में 656 मतदान केन्द्र बनाये गये है, इनमें 15 मतदान केन्द्र ऐसे है, जहां 300 से कम मतदाता है। 300 मतदाताओ से 1100 मतदाताओ की संख्या वाले मतदान केन्द्र 565 है, 41 मतदान केन्द्र 1100 से 1200 तक की मतदाता संख्या वाले है। 09 मतदान केन्द्रों में मतदाताओ की संख्या 1300 से 1400 के बीच है तथा 1400 से 1500 के बीच वाले मतदान केन्द्र 03 है।

मतदान के दौरान कडी रहेगी सुरक्षा व्यवस्था

पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन के तहत सभी मतदान केन्द्रों पर कडी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। 130 क्रिटीकल मतदान केन्द्रों पर सीआरपीएफ के 1-4 का गार्ड तैनात रहेगा। उन्होने बताया कि निर्वाचन को दृष्टिगत रखते हुए सीआरपीएफ की एक कंपनी तथा एसएएफ की दो कंपनियों के जवान मतदान केन्द्रो पर तैनात रहेंगे। इसके साथ ही राजस्थान से मिले 500 होमगार्ड के जवान सहित उमारिया से आये 50 होमगार्ड को तैनात किया जायेगा। जीआरपी के 165 जवान भी तैनात रहेंगे। इसके साथ ही जिला पुलिस बल के 700 जवान एवं 750 के लगभग विशेष पुलिस अधिकारी सुरक्षा व्यवस्था का जिम्मा संभालेगे। मतदान के दौरान मोबाइल तथा क्यूआरटी टीमे भी लगातार गश्त पर रहेगी।

75 फीसदी मतदान केन्द्रों पर रहेगी कैमरो की नजर पोल-डे पर हर गतिविधि की होगी रिकार्डिग तथा लाइव वेब कास्टिंग कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड ने कहा है कि लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत श्योपुर एवं विजयपुर विधानसभा क्षेत्रो के 75 फीसदी मतदान केन्द्रों को कैमरो से कवर किया गया है, यहां होने वाली हर गतिविधि कैमरो के राडार पर रहेगी। मतदान केन्द्र में मतदान बूथ को छोडकर अन्दर-बाहर का परिसर कैमरो की निगरानी में रहेगा। श्योपुर एवं विजयपुर विधानसभा क्षेत्र के 492 मतदान केन्द्रो पर वेब कैमरे तथा सीसी टीवी कैमरे लगाये गये है, वेब कैमरो के माध्यम से लाइव टेलीकास्टिंग कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में लगाई जाने वाली स्क्रीनो पर देखी जा सकेगी। मतदान केन्द्र के बाहर 100 मीटर तक की परिधि को कैमरो के राडार में रखने के इंतजाम किये गये है। कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड ने कहा कि श्योपुर जिले की दोनो विधानसभा क्षेत्रो के क्रिटीकल, वलनेरेवल मतदान केन्द्रों को इसमें शामिल किया गया है, इसके अलावा बार्डर क्षेत्र के 75 मतदान केन्द्र, 1000 से अधिक मतदाता संख्या वाले मतदान केन्द्र सहित आयोग के निर्देशानुसार चिन्हित अन्य मतदान केन्द्रों को वेब कैमरो तथा सीसी टीवी कैमरो से कवर किया गया है। कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड ने कहा कि जिले की दोनो विधानसभा क्षेत्रो में 656 मतदान केन्द्र है। उन्होंने कहा कि मतदान के दिन मतदान केन्द्र के अन्दर मतदान बूथ को छोडकर तथा मतदान के परिसर की निगरानी के लिए यह कैमरे लगाये जा रहे है। किसी भी प्रकार की अवांछित गतिविधियां सामने आने पर तत्काल कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने मतदाताओ से अपील की है कि स्वतंत्रता पूर्वक निर्भिक होकर उत्साह के साथ अधिक से अधिक संख्या में मतदान प्रक्रिया में भाग लेकर लोकतंत्र की मजबूती में अपनी सहभागिता निभाये। शांतिपूर्ण मतदान के लिए प्रशासन द्वारा सभी प्रकार की व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई है।

जीपीएस सिस्टम से रहेगी वाहनो की निगरानी

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड के नेतृत्व में लोकसभा निर्वाचन की प्रक्रिया के तहत श्योपुर जिले की विधानसभा श्योपुर और विजयपुर में चुनाव कराने के लिए कुल 533 वाहन लगेंगे, सेक्टर अधिकारियों, मतदान दलो एवं अन्य निर्वाचन सामग्री को लेकर जाने वाले सभी वाहन जीपीएस सिस्टम के माध्यम से ऑनलाइन निगरानी में रहेंगे। निर्वाचन के दौरान परिवहन व्यवस्था के लिए 43 मिनी बस, 156 बडी बसे, 260 जीप, 22 ट्रक, 40 ट्रेक्टर, 12 टाटा मैजिक वाहनो की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। यह वाहन सेक्टर अधिकारियों, पुलिस बल, मतदान दलो तथा निर्वाचन सामग्री के परिवहन में उपयोग होंगे। सेक्टर अधिकारियों सहित मतदान दल एवं ईव्हीएम मशीनो को लेकर मतदान केन्द्रो तक जाने वाले वाहनो एवं अन्य निर्वाचन सामग्री के परिवहन में उपयोग होने वाले सभी वाहनों को जीपीएस ट्रेकिंग पर रखा जायेगा। जिससे सभी वाहनो की ऑनलाइन ट्रेकिंग हो सकेगी। उन्होने कहा कि सेक्टर अधिकारियों के वाहनो में जीपीएस सिस्टम लगा दिये गये है। श्योपुर विधानसभा क्षेत्र में नियुक्त 33 तथा विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में नियुक्त 37 सभी सेक्टर अधिकारियों के वाहनो में यह सिस्टम लगा दिये गये है। लोकसभा निर्वाचन करायेगे 9 हजार के लगभग अधिकारी, कर्मचारी

कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड ने बताया कि

लोकसभा चुनाव को निर्विघ्न एवं शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए लगभग 9 हजार अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य सहयोगी व्यक्ति लगाये गये है। मतदान दलो में 4 हजार अधिकारी, कर्मचारी लगे है, वही सुरक्षा व्यवस्था में 3 हजार के लगभग पुलिस अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य पुलिस बल लगाया गया है। इसके अलावा 656 बीएलओ, 500 वाहन चालक, 250 सामग्री वितरण करने वाले कर्मचारी, सेक्टर अधिकारी, नोडल अधिकारी, एसएसटी, एफएसटी, वीएसटी, वीएटी, व्यय निर्वाचन, जिला स्तरीय कन्ट्रोलरूम, एमएसीसी तथा विभिन्न प्रकार की टीमो में शामिल

अधिकारी, कर्मचारी शामिल है।

निर्वाचन संबंधी कोई समस्या, शिकायत हो तो दे सूचना कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड ने कहा है कि श्योपुर जिले में निर्वाचन से संबंधित कोई शिकायत अथवा समस्या हो तो कोई भी मतदाता, आम नागरिक या अन्य व्यक्ति सी-विजिल एप पर सूचना दे सकते है। उन्होने कहा कि लोकसभा निर्वाचन-2024 को मद्देनजर रखते हुए जिला स्तरीय कन्ट्रोलरूम स्थापित किया गया है। यह कन्ट्रोलरूम 24 घंटे कार्यरत है, कन्ट्रोलरूम का दूरभाष नंबर 07530-221459, 0730-222631 तथा टोल फ्री नंबर 1950 है। विधानसभा स्तरीय कन्ट्रोलरूम भी बनाये गये है। सी-विजिल एप के अतिरिक्त इस नंबरो पर भी समस्या या शिकायत होने पर सूचना दी जा सकती है।

भारतीय स्टेट बैंक द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत कार्यालय एवं वाकाथन का आयोजन

भोपाल। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा भोपाल संसदीय क्षेत्र में होने वाले लोकसभा चुनाव में नागरिकों को अपने लोकतांत्रिक अधिकार का उपयोग करने और मतदान को प्रोत्साहित करने के लिए रविवार को भोपाल में वृहद स्तर पर मतदाता कार रैली, नुक्कड़ नाटक एवं वाकाथान काआयोजन किया गया।

कार रैली का शुभारंभ टीटी नगर स्थित अटल पथ से प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुपम राजन, जिलाधिकारी कौशलेंद्र विक्रम सिंह एवं मुख्य महाप्रबंधक चंद्रशेखर शर्मा के द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया ।इस कार रैली में लगभग 70 से अधिक चार पहिया वाहनों का काफिला शामिल था, जो कि सड़क के मुख्य मार्गों से होता हुआ भारत माता चौराहा, व्ही आई पी रोड, कलेक्टर कार्यालय,कमला पार्क, व्यापम चौराहा एवं विट्ठल मार्केट होते हुए शाहपुरा झील पर इसका समापन किया गया। रैली में शामिल प्रत्येक चार पहिया वाहन पर नागरिकों से अपना वोट डालने की अपील करने के साथ-साथ मतदान के महत्व को बताते हुये जागरूक करने संबंधी स्लोगन के बैनर प्रदर्शित किए गए थे। रैली रवाना होने से पूर्व मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुपम राजन द्वारा मतदान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि स्वतंत्र, निष्पक्ष,निर्विघ्न एवं शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव संपन्न कराने को लेकर आयोग पूरी तरह सतर्क और गंभीर है। एसबीआई द्वारा चलाए जा रही इस मतदाता जागरूकता कार रैली सहित नुक्कड़ नाटक एवं वाकाथान के आयोजन की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस राष्ट्रीय पर्व में सहयोग देने के लिए एसबीआई का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर एसबीआई भोपाल सर्कल के मुख्य महाप्रबंधक श्री चंद्रशेखर शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय स्टेट बैंक देश के सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे बड़ी बैंक होने के साथ-साथ भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया का समर्थन करने और नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति सचित करने हेतु प्रतिबद्ध है । मतदान के द्वारा हम हमारे देश में जनप्रतिनिधि एवं सरकार चुनते हैं, यही हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती है। उन्होंने आगे कहा कि इस मतदाता जागरूकता रैली के माध्यम से हमारा उद्देश्य अपने नागरिकों को मतदान करने हेतु प्रेरित करना है, जिससे वे हमारे राष्ट्र के भविष्य को आकार दे सके। इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने भी सभी नागरिकों से अधिक से अधिक मतदान करने की अपील की। रैली के समापन पर शाहपुरा झील पर एक नुक्कड़ नाटक बैंक कर्मियों द्वारा किया गया, जिसके माध्यम से व्यापक स्तर पर अपना वोट देने की अपील लोगों से की गई, तत्पश्चात एक रैली निकालकर वहां उपस्थित नागरिकों एवं दुकानदारों से मतदान केंद्र में परिवार सहित उपस्थित होकर बड़ी संख्या में वोट देने की पुरजोर अपील की। कार्यक्रम में महाप्रबंधक कुंदन ज्योति, अजिताभ परासर, नीरज प्रसाद एवं एसबीआई महिला क्लब की अध्यक्ष श्रीमती गीतू शेखर शर्मा सहित बैंक के अन्य वरिष्ठ अधिकारी व स्टाफ सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में उपमहाप्रबंधक एवं मंडल विकास अधिकारी दीपक कुमार झा ने वहां उपस्थित लोगों को कार्यक्रम की सफलता में सहयोग देने हेतु धन्यवाद देते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

स्वाती शर्मा ने शेयर किया शेमारू उमंग के शो 'चाहेंगे तुम्हें इतना' में अपने ब्राइडल सीक्वेंस की शूटिंग के दौरान हुआ एक दिल छू लेने वाला वाकया

शेमारू उमंग के शो 'चाहेंगे तुम्हें इतना' ने अपने हर एपिसोड के साथ दर्शकों का ध्यान खींचा है। जैसे-जैसे सिद्धार्थ (भरत अहलावत द्वारा अभिनीत किरदार) और आशी (स्वाति शर्मा द्वारा अभिनीत किरदार) शादी का सीक्वेंस का बहुप्रतीक्षित क्षण करीब आ रहा है, वैसे ही दर्शकों का उत्साह भी बढ़ता दिखाई दे रहा है, जो शो में आगे की कहानी जानने और सिद्धार्थ और आशी की मैरिड लाइफ केमिस्ट्री देखने के लिए उत्सुक हैं। हाल ही में इस शादी सीक्वेंस को लेकर अभिनेत्री स्वाति शर्मा से हुई खास बातचीत में उन्होंने दुल्हन के लिबास में अपने शूटिंग के भावूक क्षणों को साझा किया।

स्वाति शर्मा ने कहा, 'मैंने दर्शकों के सबसे बहुप्रतीक्षित सीक्वेंस की शूटिंग शुरू कर दी है, जहां आशी और सिद्धार्थ आखिरकार शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। इस शो का सेट इस वक्त शादी के मंडप से सजकर बहुत खूबसूरत नज़र आ रहा है जो बहुत वास्तविक लग रहा है। दर्शकों के लिए इस शो में शादी का सीक्वेंस बहुत महत्वपूर्ण है और आने वाले एपिसोड्स में उन्हें बहुत सारा ड्रामा, ट्विस्ट और टर्न्स देखने को मिलने वाला है, जो बहुत रोचक होगा।'

वह आगे कहती हैं, 'यह खास सीन मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखता है क्योंकि, शूटिंग के दौरान, मैं दुल्हन के रूप में तैयार थी और मेरा परिवार एक साथ यह एपिसोड देख रहा था। मैंने अपने पिता की आँखों में आंसू देखे और एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। उन्हें दुखी देखकर मैं यह नहीं समझ पा रही थी मैं इसे लेकर अपनी क्या प्रतिक्रिया दूं। उन्होंने मुझसे कहा कि यह सीन वास्तविकता को दर्शाता है, यह जानते हुए कि एक दिन मैं दुल्हन के रूप में दूसरे के घर चली जाउंगी। उनके शब्दों से मेरी आँखों में आँसू आ गए और हमने एक भावुक क्षण साझा किया। हालाँकि, मुझे खुद को और उन्हें यह याद दिलाना पड़ा कि यह शूटिंग का सिर्फ एक हिस्सा है और मैं वास्तव में नहीं जा रही, उस पल की यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी। दर्शक बेहद जरूरी ड्रामे से भरी इस शादी की गहराई और इसके उत्साह को जरूर महसूस करेंगे।'

देखिए 'चाहेंगे तुम्हें इतना' हर सोमवार से शनिवार, रात 9 बजे केवल शेमारू उमंग पर।

एडवेंचर गेमों के साथ 23 दिन मचेगा धमाल

शोभा शिक्षा एवं समाज कल्याण पर्यावरण समिति एवं जीवाजी क्लब के सहयोग से समर कैंप 2 का होगा आगाज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। 23 दिन तक एडवेंचर से भरे गेमों के साथ बच्चों को धमाल मचाने का मौका मिलेगा, यह मौका शोभा शिक्षा एवं समाज कल्याण पर्यावरण समिति एवं जीवाजी क्लब के सहयोग से 10 मई से शुरू हो रहे समर कैंप 2 में मिलेगा। समिति की अध्यक्ष डॉ. पूजा सिंह ने बताया कि पिछली बार के समर कैम्प से उत्साहित होकर इस बार कैम्प आयोजित किया जा रहा है। यह कैम्प 2 जून तक चलेगा और इसमें 4 साल से 18 साल तक बच्चों को विभिन्न गेमों को खिलाया जाएगा, जिसमें बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षक खेलों का प्रशिक्षण देंगे। इस कैम्प में भाग लेने के लिये 09 मई तक रजिस्ट्रेशन कराना होगा। इसके फॉर्म जैन एक्स शिवाजी टॉवर, फूलबाग आनंदमिनी मार्ट सिटी सेन्टर, केडिएल ललितपुर कॉलोनी एवं जीवाजी क्लब में मिलेंगे।

इस कैम्प में शूटिंग, फेंसिंग, योगा, डांस, स्केटिंग, स्वीमिंग, सेल्फ डिफेंस, हॉर्स राइडिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रेकिंग, डीजे बिथ बॉर्न फायर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अध्यक्ष डॉ. पूजा सिंह ने बताया कि इस कैम्प के लिए बच्चों को टी-शर्ट, कैम्प और आई.डी. कार्ड दिया जाएगा। इस कैम्प में प्रवेश हेतु फीस 3,500/- रूपये और बच्चों के लिये वाहन व्यवस्था के लिए 1,500/- रूपये अतिरिक्त देय होगी।

पृष्ट एक का शेष- रोहित वेमुला मामले में कांग्रेस ने...

लेकर देश और पूरे दलित समाज को भ्रमित करने, गुमराह करने का पाप किया है। कांग्रेस देश में जातियों के नाम पर बंटवारा कर राज करना चाहती है। रोहित वेमुला पर नोटंकी करने वाले राहुल-प्रियंका एक दलित महिला श्रीमती इमरती देवी के अपमान पर मौन क्यों हैं। राहुल गांधी अपने इस पाप के लिए देश की जनता से माफी मांगें।

दलितों, ओबीसी के हितों पर डाका डालना चाहती है कांग्रेस

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता में आने पर मुस्लिमों को आरक्षण देने का वादा किया है। कांग्रेस पार्टी ऐसा करके कर्नाटक की कहानी पूरे देश में दोहराना चाहती है। वह दलितों और ओबीसी समाज का आरक्षण छीन कर उनके हितों पर डाका डालना चाहती है। श्री शर्मा ने कहा कि कांग्रेस की इस हथकंडेबाजी से हमारे दलित और ओबीसी समाज को घबराने की जरूरत नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की गारंटी है कि एससी, एसटी और ओबीसी का आरक्षण कोई छीन नहीं सकता।

औरंगजेब की तरह जजिया कर लगाना चाहती है कांग्रेस

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में विरासत टेक्स की बात कही है। एक तरफ मोदी जी विरासत के संरक्षण की बात करते हैं, दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी हमारे पुरखों की विरासत पर डाका डालना चाहती है। हमारे पुरखों ने जो गहने और संपत्ति अपने जीवन में एकत्रित की थी, उसका सिर्फ 25 प्रतिशत हमारे पास रहेगा, बाकी सरकार ले लेगी। श्री शर्मा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी वैसा ही जजिया कर लगाना चाहती है, जिस तरह औरंगजेब ने लगाया था। कांग्रेस की मानसिकता आज भी गुलामी की है और उसके खून में आज भी अंग्रेजों की मानसिकता है।

7 और 13 तारीख को कमल का बटन दबाकर कांग्रेस पर रस चढ़ाना है

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री कांग्रेस के नेता चाहे मि. बंटाढार दिग्विजय सिंह हों, या कमलनाथ हों, महिलाओं के प्रति अभद्र टिप्पणियां करते रहे हैं। हाल ही में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने हमारी दलित बहन श्रीमती इमरती देवी के प्रति जिस तरह के शब्दों का प्रयोग किया है, उन्हें कहने में भी शर्म आती है। श्री शर्मा ने कहा कि लड़की हूं, लड़ सकती हूं का नारा देने वाली प्रियंका गांधी के मुंह से जीतू पटवारी के बयान को लेकर एक शब्द नहीं निकला। लेकिन भारतीय जनता पार्टी और मातृशक्ति ने यह तय किया है कि नारी शक्ति के प्रति कांग्रेस का यह रवैया अब चलने नहीं देंगे। आने वाली 07 और 13 तारीख को कमल का बटन दबाकर कांग्रेस पर इतने जोर से रस चढ़ना है कि रस की बात करने वाले कांग्रेसी याद रखेंगे। श्री शर्मा ने कहा कि कांग्रेस के नेता सुनिश्चित हार की खीझ के कारण जानबूझकर अनाप-शनाप बयानबाजी कर रहे हैं, ताकि मीडिया में बने रहें।

''सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-और सबका प्रयास'' के मंत्र पर बढ़ रही भाजपा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ''सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास'' के मंत्र को लेकर आगे बढ़ रही है। यही बात पार्टी के संकल्प पत्र में भी दिखाई देती है। गरीबों के चेहरों पर खुशी लाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने प्रधानमंत्री आवास योजना शुरू की थी, जिसमें देश में करोड़ों लोगों को पक्के घर मिले हैं। भाजपा ने ऐसे 3 करोड़ और आवास देने का लक्ष्य रखा है। कोई गरीब इलाज से वंचित न रहे, इसके लिए आयुष्मान भारत योजना शुरू की गई, जिसके माध्यम से करोड़ों लोग पांच लाख रुपये तक मुफ्त उपचार का लाभ ले रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी 3.62 करोड़ लोग इसका लाभ ले रहे हैं। अब इस योजना के अंतर्गत किसी भी जाति, धर्म, समाज के 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को पांच लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की सुविधा दी जाएगी। पत्रकार-वार्ता के दौरान मध्यप्रदेश शासन के मंत्री नारायण सिंह कुशवाह, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, प्रदेश महामंत्री सरतेन्दु तिवारी, संभाग प्रभारी विजय दुबे, प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल, जिला अध्यक्ष अभय चौधरी, प्रदेश प्रवक्ता मिलन भार्गव, अजय धवले, मुरैना लोकसभा प्रभारी जयप्रकाश राजौरिया, नगर निगम सभापति मनोज तोमर आदि उपस्थित रहे।

पृष्ट एक का शेष- मैं नेता नहीं, भैया और मामा हूँ...

पर बैंक वाले कई किसानों की मोटर और ट्रैक्टर जब्त कर ले जाते थे। भाजपा की सरकार आई, मैं मुख्यमंत्री बना तो तय कर दिया कि, 18 प्रतिशत नहीं बल्कि 0 प्रतिशत पर किसानों को कर्ज मिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी जी किसानों को 6 हजार रूपए सम्मान निधि दे रहे हैं, हमने भी तय कर लिया कि, 6 हजार राज्य सरकार देगी। आज किसानों के खाते में सीधे 12 हजार रूपए सम्मान निधि आ रही है। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए सीएम राइज़ स्कूल खोले, लैपटॉप, स्कूटी देने की योजना बनाई और मेडिकल, इंजीनियरिंग की फीस भी माता-पिता नहीं बल्कि राज्य सरकार भर रही है। पूर्व सीएम ने कहा कि, अब विकास कार्यों को आगे बढ़ाना है।

मोदी जी के नेतृत्व में नए भारत का निर्माण

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, मोदी जी ने अद्भुत काम किए हैं। मोदी जी के नेतृत्व में एक गौरवशाली, वैभवशाली, शक्तिशाली, सम्पन्न और समृध्द भारत का निर्माण हो रहा है। कांग्रेस की सरकार में तो छोटे-छोटे देश हमें डराते थे, लेकिन मोदी जी ने कह दिया कि, हम किसी को छेड़ेंगे नहीं, और हमें किसी ने छेड़ा तो हम छोड़ेंगे भी नहीं। एक ही उदाहरण देखिए कि, रूस और यूक्रेन के बीच युध्द चल रहा था। भारत के बच्चे भी वहां फंसे हुए थे। मोदी जी ने एक फोन रूस के राष्ट्रपति को किया और एक फोन यूक्रेन के राष्ट्रपति को कर कहा कि, जब भारत के बच्चे हाथों में तिरंगा लेकर निकले तो रूस ने भी युध्द बंद कर दिया और यूक्रेन ने भी युध्द रोक दिया और हमारे बच्चे सुरक्षित निकल आए। पूर्व सीएम ने कहा कि, भारतीय जनता पार्टी नंबर वन पार्टी है और मोदी जी दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। इसलिए मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है।

रोड-शो में उमड़ा जनसैलाब

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन विदिशा लोकसभा की इछावर विधानसभा के बिल्किसगंज और बुधनी विधानसभा के गोपालपुर में रोड-शो किया। इस दौरान रोड-शो में जनसैलाब उमड़ पड़ा। बडी संख्या में बहनें भी उपस्थित रहीं। रोड-शो जहां-जहां से गुजरा लोगों ने फूल-मालाओं से शिवराज का भव्य स्वागत किया। बहनों ने पूर्व सीएम को तिलक लगाकर उनकी आरती उतारी और सिर पर हाथ रख उन्हें विजयी भवः का आशीर्वाद दिया तो बच्चें मामा-मामा कहकर शिवराज से लिपट गए। पूरा नगर शिवराजमय नज़र आ रहा था और चारों तरफ आंधी नहीं तूफान हैं, शिवराज सिंह चौहान है के नारे लग रहे थे। पूर्व सीएम ने भी दोनों हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर जनता-जनार्दन का अभिवादन किया।

चुनाव प्रचार थमा, कल होगा मतदान

शांतिपूर्ण मतदान के लिए कलेक्टर और एसपी ने किये सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

- निःशुल्क ई रिक्शा चलेंगे मतदान केंद्रों तक चिकित्सा परामर्श निःशुल्क रहेगा, -694 मतदान केन्द्रों के आसपास जेसीवी भी तैनात रहेगी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। आने वाली 07 मई को लोकसभा चुनाव के मतदान के लिए कलेक्टर अंकित अस्थाना और पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये जा चुके हैं। इसी के साथ रविवार शाम से धारा 144 लागू कर दी गई है। रैली, आम सभाएं सभी प्रतिबंधित रहेगी। वहीं शत प्रतिशत मतदान करने के लिए कलेक्टर और एसपी ने लोगों से अपील भी की है। सभी निर्भय होकर मतदान करें।

जानकारी के अनुसार रविवार को चुनाव प्रचार पूरी तरह से थम चुका है। अब प्रत्याशी केवल व्यक्तिगत जनसंपर्क ही कर सकते हैं। उनके लिए आमसभा करने पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। धारा 144 लागू कर दी गई है, यही नहीं जो भी बाहरी लोग हैं उन्हें भी रविवार को जिले से बाहर जाने के निर्देश दिये जा चुके हैं। यह बात कलेक्टर अंकित अस्थाना ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों के समक्ष कही। कलेक्टर ने कहा कि विधानसभा चुनावों की ही तरह लोकसभा चुनावों में भी पंचायत से लेकर हर पोलिंग बूथ पर पुलिस व प्रशासन मुस्तैदी के साथ तैनात रहेगा। वहीं प्रत्येक पोलिंग बूथ पर सीसीटीव्ही कैमरे की भी व्यवस्था रहेगी। इसके अलावा जो संवेदनशील और अतिसंवेदनशल मतदान केन्द्र चिन्हित किये गये हैं, वहां भी सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस व एसएफ बल तैनात रहेगा। इसके बाद भी अगर कोई अप्रिय घटना घटित होती है तो उसके लिए पुलिस अधीक्षक व कलेक्टर द्वारा मोबाईल नंबर 7049101040, 07532-233700, 233701, 233702 जारी किये हैं। जिन पर तुरंत सूचना दी जा सकती है। वहीं प्रचार प्रसार थमने के बाद बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। इसके लिए जिले की सीमाओं पर भी चैकिंग की जा रही है। अब संवेदनशील 694 मतदान केंद्रों के इर्द-गिर्द जेसीबी मशीन रखी गई है। किसी भी प्रकार की गलत गतिविधि के लिए यह तैयार रखी गई है। मतदान के समय किसी भी प्रकार की गलत गतिविधि करने वालों को नहीं बक्शा जायेगा। पुलिस और प्रशासन शक्ति से निपटेगा।

पांच हजार सुरक्षाकर्मी की निगरानी में होगी मुरैना की वोटिंग: पुलिस अधीक्षक

पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि लोकसभा चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए करीब पांच हजार सुरक्षाकर्मी तैनात किये गये हैं। जो हर एक पोलिंग बूथ पर अपनी नजर रखेंगे। इसके अलावा जो संवेदनशील और अति संवेदनशील मतदान केन्द्र हैं, उन पर भी अतिरिक्त पुलिस व एसएफ बल तैनात रहेगा।

स्वीप गतिविधि के तहत छाछ और आम पना की भी होगी सुविधा

कलेक्टर अंकित अस्थाना ने प्रेसवार्ता में बताया कि मतदान के लिए आने वाले मतदाताओं को गर्मी को देखते हुए छाछ और आम पना की भी सुविधा दोपहर 12 से 4 बजे तक दी जायेगी। इसके अलावा चिकित्सक श्री देव गर्ग द्वारा भी वोटिंग करने के बाद आने वाले लोगों को फ्री में चिकित्सकीय परामर्श दिए जाने की पहल की है। इसके साथ ही ई रिक्शा चालकों ने भी इस मतदान में सहयोग करने का निर्णय लिया है। मतदान करने वाले जो भी ज़रूरतमंद लोग है, उनको निशुल्क उनके मतदान केंद्र पर ले जाएँगे और वापस घर तक पहुंचाएंगे। यदि कोई बुजुर्ग एवं गर्भवती ज़रूरतमंद चिकित्सा केंद्रों तक जाना चाहते है उनको भी वहाँ पहुँचाने में उनकी मदद करेंगे।

694 मतदान केन्द्रों के आस पास तैनात रहेंगी जेसीव्ही

कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने संयुक्त रूप से प्रेसवार्ता में बताया कि 694 मतदान केन्द्रों पर इस बार जेसीव्ही तैनात की जायेगी। यह जेसीव्ही इसलिए तैनात की गई हैं कि यदि कोई भी व्यक्ति मतदान प्रक्रिया को बाधित करता है या मतदाताओं को धमकाता है तो उसके घर को तुरंत धाराशाई कर दिया जायेगा। यह ऐसे लोगों के लिए कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक द्वारा एक चेतावनी के तौर पर है। जिससे कोई भी व्यक्ति मतदान प्रक्रिया को बाधित न कर सके।

भाजपा झूठ, फरेब की राजनीति करती है, युवाओं का भविष्य अंधकारमय किया: नीटू सिकरवार

लोकतंत्र और संविधान बचाने के लिए कांग्रेस को जिताएं

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मुरैना और श्योपुर से कांग्रेस प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार (नीटू) ने कहा है कि आपका एक-एक वोट क्षेत्र के विकास और प्रगति में नई इबारत लिखेगा। आज भाजपा हर मामले में झूठ और फरेब की राजनीति कर लोगों को गुमराह करने में लगी है। भाजपा संविधान बदलकर दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग का आरक्षण खत्म करना चाहती है। यह पार्टी गरीबों की नहीं है,ये पूंजीपतियों की पार्टी है। अग्निवीर योजना लाकर युवाओं का भविष्य अंधकारमय बना दिया है। भाजपा लोगों को जाति और धर्म के नाम पर बांटने का काम करती रही है।क्षेत्र के विकास के लिए कुछ नहीं किया। में आपको भरोसा दिलाता हूं कि आपकी भावनाओं के अनुरूप में क्षेत्र का विकास करूंगा और जीवन की आखरी सांस तक आपकी सेवा करने में कोई कसर नहीं छोडूंगा।

कांग्रेस प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार नीटू ने आज कई गांव का दौरा करते हुए आम जनता से सीधा संवाद किया और कहा कि मेरे पिताजी गजराज सिंह सिकरवार ने जनसेवा करते हुए आपकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी, वैसे ही में जनसेवा करते हुए क्षेत्र के विकास को गति दूंगा। कांग्रेस पार्टी महिलाओं ओर युवाओं को हर साल एक-एक लाख रुपए देगी और किसानों को एमएसपी का लाभ देते हुए कर्ज माफ करेगी। भूमिहीन लोगों को जमीन मिलेगी और नौकरी में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देगी। कांग्रेस के घोषणा पत्र में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं हैं। इनसे भाजपा घबराई हुई है। आज चंबल की जनता बिजली, पानी, सड़क ओर पेयजल की समस्या से जूझ रही है और भाजपा आंख बंद किए बैठी है। भाजपा के राज में लूट, खसोट मची है, माफिया राज चल रहा है। कंट्रोल की दुकानों से गरीबों को राशन ठीक से नहीं मिल रहा है। चारों तरफ भ्रष्टाचार चरम पर है। ऐसी भाजपा क्या जनता का भला कर पाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा लोकतंत्र और संविधान के लिए खतरा बनी हुई है।

शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार की योजनाओं के लिए सरकार के भरोसे नहीं रहेंगे हम: रमेश गर्ग

बहुजन समाज पार्टी ने शहर में निकाली विशाल रैली

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार की जो योजनाएं हम गिना रहे हैं उन्हें पूरा करके दिखायेंगे। किसी भी योजना के लिए हम सरकार के भरोसे नहीं रहेंगे। व्यापारी भाईयों के सहयोग से इन योजनाओं पर अमल किया जाएगा। यह बात बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी रमेशचंद गर्ग ने रविवार को विशाल रैली को संबोधित करते हुए कही। रैली में आई भीड़ को देखकर हर कोई हैरान था क्योंकि नीला झंडा लिए हजारों लोग सड़कों पर उतर आए थे।

जीवाजीगंज स्थित अग्रसेन पार्क से प्रारंभ हुई रैली शहर के प्रमुख मार्गों से निकली और पार्क में ही समापन किया गया। रविवार को निकली इस रैली को जनमानस द्वारा अभी तक की सबसे विशाल रैली बताया जा रहा है। रैली में केवल पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बसपा के समर्थन में नारे लगाते हुए यह रैली जब शहर से निकली तो कहीं पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया तो कहीं आइसक्रीम, कोल्डड्रिंग्स, छाछ सहित अन्य कई तरह की चीजों से रैली में आए हर व्यक्ति का स्वागत किया। बसपा प्रत्याशी रमेशचंद गर्ग ने रैली में आए लोगों से कहा कि वह चुनाव जीतकर उनकी उम्मीदों पर खरे उतरेंगे। जो भी वायदे किए जा रहे हैं उन पर चुनाव जीतते ही अमल शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए हमारी प्लानिंग यह है कि हम व्यापारियों से कहकर स्कूलों को गोद दिलवाएंगे ताकि जो व्यापारी उस स्कूल की जिम्मेदारी लेगा वहां की शिक्षा संसाधन उपलब्ध कराना उसकी जिम्मेदारी रहेगी। जब सारे संसाधन होंगे तो शिक्षा का स्तर सुधरेगा। स्वास्थ्य सेवाओं के लिए गरीब जरूरतमंदों को अकसर भटकते देखा जाता है। इन लोगों को सहज व सीधे तरीके से इलाज मुहैया हो इसके लिए दिल्ली की तरह मुरैना में मोहल्ला क्लीनिक खोले जाएंगे ताकि हर व्यक्ति को अपने नजदीक ही प्राथमिक उपचार मिल सके। इसके बाद भी यदि उसे और अच्छे ईलाज के आवश्यकता होगी तो उसका इंतजाम भी करवाया जाएगा। यहां का युवा बेरोजगार नहीं रहे इसके लिए उद्योग लगवाने का प्लान भी बनाया गया है। बाहर के व्यापारियों को हम सुरक्षा व्यवस्था का भरोसा दिलाकर यहां उद्योग स्थापित करवाएंगे ताकि युवाओं के लिए रोजगार की व्यवस्था होगी। शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार यह हमारे प्रमुख मुद्दे हैं। इसके अलावा अपने यहां पुरातात्विक धरोहर जो कि विश्व प्रसिद्ध हैं उनका प्रचार-प्रसार इस प्रकार किया जाएगा जिससे पर्यटक यहां आने लगें इससे भी रोजगार के साधन बढेंगे। रैली में पूर्व मंत्री रुस्तम सिंह भी मौजूद रहे। उन्होंने फिर से लोगों से अपील की कि रमेशगर्ग अपनी बात पर डटे रहने वाले व्यक्ति हैं। दमदार हैं आपकी समस्याओं को सुलझा सकते हैं इसलिए हर हाल में इन्हें अपना समर्थन देकर विजयी बनाना हैं।

आप पार्षद रमेश उपाध्याय ने पुनः ली भाजपा की सदस्यता

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भाजपा जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष डॉ.योगेशपाल गुप्ता व लोकसभा चुनाव प्रभारी अनूप सिंह भदौरिया के समक्ष आम आदमी पार्टी के पार्षद एमआईसी सदस्य रमेश उपाध्याय ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता गृहण की। इस अवसर वरिष्ठ नेता रामकुमार माहेश्वरी उपस्थित रहे।

नशा चाहे बीड़ी, शराब, पद या धन का- ये सेवा भक्ति को नहीं छोड़ेंगे किसी काम का : राजकुंवर जू

- हमारा वोट सबसे अनमोल- वोट डाल करेंगे राष्ट्र धर्म का पालन
- बड़ी संख्या में वितरित हुए वस्त्र, साड़ी सूट एवं चश्मे
- परमार्थ शिविर में 210 मरीज और 24 सेवक हुए उपस्थित

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मेजर रामकुमार शर्मा परमार्थ न्यास में प्रभु श्री सीताराम जी की पूजा अर्चना, रामचरित मानस का पाठ, एवं विनय पत्रिका एवं भक्तमाल की कथा हुई इसके साथ ही 210 मरीजों ने अपना परीक्षण करा के उपचार कराया। विषय बार मरीजो की संख्या इस प्रकार रही -दन्त रोग 68 स्व. जगदीश प्रसाद गुप्ता मेडिसिन कक्ष में 64, नाक, कान, गला 40, सर्जरी 35, अस्थि रोग 40, नैत्र रोग 14, अन्य उक्त शिविर में विशेष रूप से निम्न कार्य सम्पादित किये गए -दांतों के सेट 0, ब्लड प्रेसर की जाँच 30, ई.सी.जी 01, इंडियन डेंटल एसोसिएशन के तहत तम्बाखू, बीड़ी, सिगरेट, शराब से ग्रसित मरीज 30, नशा छोड़ने का संकल्प लिया 14, फिजियोथेरेपी मशीन से उपचार 19, एम्स में पंजीयन 0 इसके अलावा स्व. अंकित जैन स्मृति दन्त चिकित्सा कक्ष में- दांत शल्य क्रिया 44, अल्ट्रासोनिक मशीन से पायरिया का इलाज 14, परमार्थ न्यास में आँखों की डिजिटल जांच की सुविधा स्व. प्रकाश शर्मा स्मृति कक्ष मे प्रारंभ हुई जिसमें आँखों की जाँच 08 एवं इलेक्ट्रिकल लैंप के माध्यम से चश्मे का नंबर प्रदान किये, निष्काम भाव से सेवकों ने सेवा की। डॉ. एस.के. शर्मा, डॉ. एस.के. गुप्ता, डॉ. बी.एल. राजपूत, प्रदीप शर्मा, जूली प्रजापति, राजश्री, कस्तूरी, ओमवती, ममता, गुड्डी, मनीराम, अनुपम जी, भगवान शर्मा, रमेश बाऊजी, श्याम शर्मा, दीपू तोमर, पवन शर्मा, मयूर अग्रवाल, होत्तम, हाकिम सिंह, सूरज शर्मा, भूरा, विकास आदि ने निःशुल्क सेवाएं प्रदान कीं।

प्रत्येक रविवार की तरह सभी समाजसेवियों ने अपनी सेवाये परमार्थ न्यास में यथावत प्रदान की। भगवान स्वरूप में पधारे हुये सभी मरीजों ने अपना इलाज कराया। परमार्थ न्यास में प्रत्येक रविवार की तरह सभी सेवकों ने उपस्थित होकर पूजा पाठ रामचरितमानस पाठ भकात्मल कथा विनय के पद रामरक्षा स्त्रोत का पाठ आरती एवं संकीर्तन किया एवं श्रवण लाभ लिया।

आज परमार्थ न्यास में राज कुंवर जू पधारे। आपने यहाँ पूजा में शामिल होकर रामचरित मानस पाठ भक्तमाल कथा रामरक्षास्तोत्र पाठ का श्रवण किया तथा परमार्थ न्यास के सभी सेवकों द्वारा की जा रही निःस्वार्थ सेवा का स्वरूप देखकर हृदय से प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।

भक्ति और समर्पण का संबंध माला में बंधे हुए धागे और मोती की भाँति है । यदि समर्पण की भावना ही नही होगी भक्ति में, तो फिर भक्ति का मूल्य ही क्या रहेगा।

अपने आप को अपने आराध्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कर देना ही समर्पण की भावना है और यही भक्ति भी है । एक प्रकार से भक्ति और समर्पण एक दूसरे के पूरक हैं । समर्पित भाव से भक्ति करना ही भक्ति की पूर्णता है । इसी समर्पित भाव को भक्ति के साथ दीन दुखियों की सेवा में यदि लगा दिया जाए तब यही समर्पित भाव वाली भक्ति अजर अमर हो जाती है सेवा भक्ति का स्वरूप सबसे अलग होता है जो ईश्वर को अतिसय प्रिय है। इससे आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण मानव कल्याण भी होता है ईश्वर की बनाई इस अलौकिक रचना में सहयोग प्राप्त होता है।

आज मेजर रामकुमार शर्मा परमार्थ न्यास में मैने देखा कि समस्त सेवक जिस उदार भाव व वाणी से सेवा करते हैं उसे देखकर मैं हृदय से अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ एवं जन मानस से आग्रह करता हूँ कि यहाँ प्रभु के दीन स्वरूप की सच्ची सेवा का लाभ ले। मैं सभी को आशीष, शुभकामनाएं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि परमार्थ न्यास के सभी सेवकों में जन मानस की सेवा सत्कर्म का भाव सदैव इसी प्रकार बना रहे। और यह सेवा सत्कर्म निरंतर चलता रहे

जरूरमंदों के लिए एक पहल

हमारा परमार्थ न्यास किचन रेस्टोरेंट के बगल में शर्मा डेंटल क्लिनिक के ऊपर हर रविवार गरीबों व जरूरतमंदो को निःशुल्क उपचार, दवाईयां और कपड़े उपलब्ध कराता है। अगर किसी के घर में जो दवाईयां और कपड़े उपयोग में ना हो वो लोग गरीबों व जरूरतमंदो के उपयोग हेतु हमें प्रदान कर सकते हैं या स्वयं शर्मा डेंटल क्लिनिक या परमार्थ न्यास पर आकर स्वयं दान दे सकते हैं। आपकी एक पहल जरूरतमंदो के बहुत काम आएगी।

सभी शहर वासियों से निवेदन है कि शव को सुरक्षित रखने हेतु डीप फ्रीजर का उपयोग आवश्यकता होने पर किसी भी समय परमार्थ न्यास से संपर्क किया जा सकता है एवं अत्याधुनिक एंबुलेंस जिसमे कार्डियक् मॉनिटर लगा हुआ है की आवश्यकता होने पर किसी भी समय परमार्थ न्यास से संपर्क किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर इन नंबरों 9827090180, 8602434147, 9300701002 पर संपर्क कर सकते हैं।

पहावली व नायकपुरा में तीन गौवंश कुएं में गिरे, एक की मौत, दो को गौसेवकों ने सुरक्षित निकाला

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। सुमावली थाना क्षेत्र के पहावली गाँव में एक गौवंश कुएं में गिर गया, जिसकी सूचना नगर निगम के गाड़ी अड्डा प्रभारी रवि घुरैया ने जय बजरंग गौसेवा समिति के गौसेवक रुद्रप्रताप सिंह को दी। सूचना मिलते ही गौसेवक रुद्रप्रताप सिंह अपनी टीम को नगर निगम की गौ एम्बुलेंस व रेस्क्यू का सामान लेकर पहावली गाँव पहुंचे, फिर गौसेवकों ने कुएं में सीढ़ी डाली। फिर गौसेवक सुदामा कुशवाह कुएं में घुसे और गौवंश को रस्सो के सहारे बांधा, फिर गौवंश को बाहर खिंचा। लेकिन रस्सा टूट गया। फिर क्रेन या बुलडोजर मंगाने के लिए गौसेवकों ने पुलिस कंट्रोल रूम व थाना प्रभारी सुखदेव सिंह को कॉल किया और थाने के द्वारा पुलिस के जवान भेजे। जब तक क्रेन आती फिर गौसेवकों ने और रस्से मंगाकर गौवंश को द्वारा खींचा और उसे सुरक्षित बहार निकाला।

दूसरी घटना सरायछौला थाना क्षेत्र की है, जहाँ सराय के पुरा में 2 गौवंश आपस मे झगड़ते हुए 100 फीट गहरे कुएं में गिर गए, जिसकी सूचना गाँव के मान सिंह व पप्पी बरेठा ने दी। सूचना मिलते ही रात्रि में दोनों लोग गौसेवकों व क्रेन को मुरैना से लेकर गाँव पहुंचे। गौसेवकों में रुद्रप्रताप सिंह, सुदामा कुशवाह, बबलू राठौर, आकाश रजक, विनोद कुशवाह गाँव पहुंचे साथ मे रेस्क्यू का समान भी लेकर पहुंचे। रात्रि अधिक होने के कारण अंधेरे में कुएं में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, फिर लाइट की व्यवस्था की और गौसेवक सुदामा कुशवाह कुए में घुसे तो देखा कि एक गौवंश उल्टा पड़ा हुआ था जिसकी मौत हो चुकी थी। फिर काले गौवंश को कड़ी मशक्कत करके बांधा और उसे सुरक्षित बाहार निकाल लिया।

सार्वजनिक सभाओं एवं लाउड स्पीकर के उपयोग पर प्रतिबंध

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित अस्थाना ने मुरैना-श्योपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में 7 मई को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से मतदान संपन्न कराने तथा लोक शांति व लोक सुरक्षा बनाए रखने के दृष्टिगत दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधात्मक आदेश पारित किया है। जिसके तहत मतदान समाप्ति के 48 घंटे पूर्व से मतदान संपन्न होने तक मतदान, निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित सार्वजनिक सभाओं और राजनैतिक प्रचार के लिए लाउड स्पीकर का प्रयोग प्रतिबंधित रहेगा।

इसके अलावा निर्वाचन क्षेत्र में 5 से अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने एवं अवैध जमाव पर भी प्रतिबंध लगाया गया है।

प्रभु समर्पण ही जीवन परिवर्तन का आधार है: कृष्णा दीदी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ब्रह्माकुमारी पाठशाला रामनगर मुरैना में प्रभु समर्पण दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी जी ने सभी को समर्पण दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि हर वह व्यक्ति प्रभु समर्पण कर सकता है जो अपने अंदर से सभी कमी -कमजोरी-बुराइयों को खत्म करता है चाहे वह गृहस्थी हो, सन्यासी हो या कोई युवा हो। समर्पण अर्थात अपना सबकुछ उस ईश्वर के लिए न्योछावर कर देना और उसके बताए हुए सदमार्ग , शिक्षाओं को जीवन में धारण करना । आज की युवा पीढ़ी व्यसन -फैशन जैसे नशे में लगी हुई है आगे बढ़ने की दौड़ में अपने स्वयं की पहचान से पीछे हो चुकी है,अपने असली अस्तित्व को भूल दिखावटी दुनिया के नशे में लगी हुई है और ऐसे में कभी भी भविष्य का नवनिर्माण नहीं हो सकता। इसलिए इस संस्था में कुछेक भाई बहनों ने अपने जीवन की बागडोर प्रभु को समर्पित कर दी है। जिससे वह अपने आज के साथ अपना भविष्य भी सुनहरा बना रहे हैं और राम राज्य की परिकल्पना को साकार कर रहे हैं । जिसमें किसी भी तरह का नकारात्मक वातावरण, दुःख, कलह, क्लेश नहीं होगा, मानव का जीवन शुद्ध- पवित्र और सुखद होगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उद्योगपति मीता गर्ग (डायरेक्टर नील वर्ल्ड स्कूल मुरैना), डॉ. विनीता जी, हेमा अग्रवाल (समाज सेविका) उपस्थित रहे। इनके द्वारा ही ब्रह्माकुमार नितेश भाई, शुभम भाई, ब्रह्माकुमारी निकेता बहन, प्रियंका बहन का सम्मान किया गया एवं ग्वालियर से आई हुई अवनेश माताजी ने सभी को प्रभु समर्पण दिवस की शुभकामनाएं दीं।

मैं नेता नहीं, भैया और मामा हूं, हम सब एक हैं: शिवराज सिंह

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन विदिशा लोकसभा के बिल्किसगंज, भैरूंदा और गोपालपुर में जनसभाओं को संबोधित किया

पूर्व सीएम के बिल्किसगंज और गोपालपुर में आयोजित रोड-शो में उमड़ा जनसैलाब, लोगों ने फूलों की वर्षा कर किया भव्य स्वागत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन रविवार को विदिशा लोकसभा की दो विधानसभा इछावर और बुधनी में चुनाव प्रचार किया। इछावर विधानसभा के बिल्किसगंज और बुधनी विधानसभा के भैरूंदा और गोपालपुर में पूर्व सीएम ने विशाल जनसभाओं को संबोधित किया। वहीं पूर्व सीएम ने बिल्किसगंज और गोपालपुर में रोड-शो भी किया। इस दौरान श्री चौहान ने कहा कि, ये चुनाव अद्भुत हो गया है, इतनी गर्मी और तेज़ धूप भी जनता मुझे सुनने आ रही है। बहनें मुझे तिलक लगाती है, और चुनाव लड़ने के लिए हाथ में 10-10 रूपए देती हैं। मैं जहां जाता हूं मेरी बहनें पैसे निकालकर देती हैं, कई जगह तो बहनें गेहूं दे रही है। चुनाव के बाद गेहूं के पैसों से कन्या भोज कराएंगे और मैं भी उनसें शामिल रहूंगा। बच्चे मुझे मामा-मामा कहकर गुल्लक दे देते हैं। मैं धन्य हो गया हूं, आप सभी को बारंबार प्रणाम करता हूं।

नेता नहीं, भैया और मामा हूं

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, मैं नेता नहीं, भैया और मामा हूं। हम सब एक परिवार है। ये दिल, मन और आत्मा के रिश्ते हैं। मैं चुनाव जीतने नहीं बल्कि आपकी जिंदगी बदलने आया हूं। पूर्व सीएम ने कहा कि, पार्टी ने मुझे विधायक बनाया तो विधायक बनकर काम किया, सांसद बनाया तो सांसद बनकर जनता की सेवा की। फिर आप सभी के आशीर्वाद से मुख्यमंत्री बना तो जनता की जिंदगी बदलने का काम किया। अब दिल्ली जा रहा हूं, वहां से भी सेवा करूंगा। श्री चौहान ने कहा कि, ये संदेश देने का चुनाव है, अगर कोई अच्छा काम करें तो उसे ऐसा आशीर्वाद दो कि, दुनिया देखती रह जाए। ये देश को बताने का चुनाव है कि, आप अपने मामा और भैया से कितना प्यार करते हो। दूसरें भी सोचेंगे की अच्छा काम करोगे तो जनता कितना प्यार देती है। पूरे हिंदुस्तान का रिकॉर्ड तोड़ दो और 100 प्रतिशत मतदान करो। बहनें भी घर से निकल जाएं, भाई भी घर से निकलें और चुनाव प्रचार में जुट जाएं। घर-घर जाकर संपर्क करो और भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करने के लिए लोगों को प्रेरित करो। आप प्रेम और आशीर्वाद का रिकॉर्ड बनाओ और मैं सेवा और विकास का रिकॉर्ड बनाऊंगा।

विधायक के रूप में मेरी विदाई है

पूर्व सीएम ने कहा कि, आज मैं भावुक भी हूं, क्योंकि ये विदाई की बेला है, मैं विधायक के रूप में विदा होने वाला हूं। मैंने विधायक के नाते दिन और रात आपकी सेवा की, कोई कसर नहीं छोड़ी। कभी किसी को निराश नहीं किया, लेकिन कुछ दिनों बाद मैं आप लोगों का विधायक नहीं रहूंगा। जो भी मेरी भूमिका रहेगी उसमें काम करूंगा। आज मैं एक बात कहने आया हूं। मेरे लिए ये चुनाव प्रेम की परीक्षा है। अगर मैंने ईमानदारी से आपकी सेवा की है, अगर मैंने बहनों की सेवा की है, अगर मैंने लाखों बेटियों की शादी करवाई है, अगर मैंने लाखों बीमारों का इलाज कराया है, अगर लाखों बच्चों की फीस भरवाई है, उनको पढ़ने-लिखने के योग्य बनाया है। अगर गरीबों की जींदगी बेहतर बनाने की कोशिश की है, अगर किसानों का जीवन बेहतर बनाने का प्रयास किया है, तो ये आपके शिवराज के प्रेम की परीक्षा है। ये चुनाव हार-जीत का चुनाव नहीं है। मुझे विदाई दो तो ऐसी दो कि, पूरा हिंदुस्तान देखें कि, अगर प्रेम होता है तो ऐसा होता है।

लखपति दीदी का लक्ष्य

पूर्व सीएम ने कहा कि, मैंने बचपन में बेटा-बेटी में भेदभाव होते देखा था, बहनों की तकलीफ दुख-दर्द देखा था। तब मन में बहुत पीड़ा होती थी। जब मुख्यमंत्री बना तो सबसे पहले लाड़ली लक्ष्मी योजना बनाई क्योंकि बेटी बोझ नहीं वरदान है। आज मुझे कहते हुए गर्व है कि, मध्यप्रदेश की धरती पर 50 लाख से भी ज्यादा लाड़ली लक्ष्मियां है। फिर कन्या विवाह योजना बनाकर लाखों बेटियों की शादी और निकाह करवाए। मध्यप्रदेश, देश का ऐसा पहला राज्य है जहां बहनों को स्थानिय निकायों में 50 प्रतिशत रिज़र्वेशन दिया गया ताकि बहनें भी चुनाव लड़ सकें। फिर आई लाड़ली बहना योजना। एक झटके में 1 करोड़ 32 लाख बहनों के खाते खुलवाकर उसमें पैसे डाले, इस योजना ने तो बहनों का आत्मविश्वास और सम्मान बढ़ा दिया, लेकिन ये सफर यहीं रूकेगा नहीं, अब लाड़ली बहना से लखपति बहना बनाना है। लखपति दीदी का मतलब साल में बहनों की आमदनी 1 लाख रूपए से ज्यादा हो। स्व-सहायता समूह के माध्यम से बहनों को लखपति बनाना मेरे जीवन का लक्ष्य है।

कांग्रेस का विकास से कोई लेना-देना नहीं

पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि, कांग्रेस का विकास और जनता से कोई लेना-देना नहीं है। कांग्रेस के जमाने में न सड़कें थी, न बिजली थी और पानी की कोई व्यवस्था थी। पता ही नहीं चलता था कि, सड़कों में गड्ढें हैं या फिर गड्ढों में सड़क। पूरे प्रदेश को तबाह और बर्बाद कर दिया था। कांग्रेस के समय किसानों को 18 प्रतिशत ब्याज पर कर्ज मिलता था। पैसे नहीं भरने शेष पृष्ठ 6 पर...

लोकसभा चुनाव प्रचार के अंतिम दिन शिवराज सिंह चौहान के प्रमुख कार्यक्रम

- पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी ने रविवार को सबसे पहले अपने विवाह वर्षगांठ पर पत्नी श्रीमती साधना सिंह जी के साथ किया पौधरोपण। - शिवराज सिंह चौहान ने इछावर विधानसभा के ग्राम बिल्किसगंज में भव्य रोड-शो कर जनसभा को संबोधित किया। - पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी विधानसभा में रोड शो और भैरूंदा में जनसभा को संबोधित किया। - शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी विधानसभा के गोपालपुर में आदिवासी समाज के साथ रोड-शो, नृत्य और गायन कर मंच साझा किया और विशाल जनसभा को संबोधित किया। - पूर्व सीएम शिवराज सिंह ने रोड-शो के दौरान बहनों से मुलाकात की और उनका आशीर्वाद लिया। - पूर्व सीएम ने भैरूंदा में दिव्यांग भांजी सविता से भेंट की। भांजी ने पूर्व मुख्यमंत्री को चुनाव लड़ने दिए 100 रूपए। - शिवराज सिंह चौहान ने जनसभाओं से पहले जनता-जनार्दन पर फूलों की वर्षा कर उनका अभिनंदन किया। - पूर्व सीएम शिवराज सिंह ने बिल्किसगंज के माँ महिशासुर मर्दनी मंदिर झागरिया में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। - रोड-शो के दौरान पूर्व सीएम ने वीरांगना बनी भांजियों से भेंट की। कोई भांजी रानी लक्ष्मी बाई बनी थी तो कोई भारत माता। - शाम 6 बजे के बाद पूर्व सीएम ने गोपालपुर के कुछ घरों में जनसंपर्क किया

एमसीएमसी की बैठक में शामिल हुईं कलेक्टर व पत्रकार

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। जिला निर्वाचन अधिकारी व कलेक्टर आईएएस श्रीमती रुचिका चौहान के साथ निर्वाचन आयोग की महत्वपूर्ण एमसीएमसी कमेटी की बैठक में सदस्य के रूप में शामिल हुए। बैठक जिला कलेक्टर कक्ष में आयोजित हुई बैठक में जनसंपर्क विभाग के अधिकारी मधु शोलापुरकर, हितेन्द्र भदौरिया, वरिष्ठ पत्रकार विनय अग्रवाल, प्रदीप माढरे व राज दुबे भी शामिल हुए।

सामग्री वितरण जमा स्थल पर रहेगा अस्थाई अस्पताल

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। मुरैना-श्योपुर लोकसभा क्षेत्र के निर्वाचन के लिए 6 मई को मतदान सामग्री का वितरण होगा।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अंकित अस्थाना ने बताया कि तेज गर्मी को देखते हुए अधिकारी-कर्मचारियों के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राकेश शर्मा को निर्देशित किया गया कि शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज में सामग्री वितरण स्थल एवं जमा स्थल पर अस्थाई अस्पताल स्थापित किया जाए।

पूर्व महापौर समीक्षा गुप्ता ने किया मतदान पर्चियों का वितरण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। ग्वालियर में लोकसभा के 17 ग्वालियर दक्षिण विधानसभा के हेमू कॉलानी मण्डल में 'मतदान पर्ची के घर-घर वितरण अभियान' में पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने सम्मानित वरिष्ठ नेताओ के साथ घर घर मतदान वितरण कर शुभारंभ किया।

इस अवसर पर विवेक जोशी, महेन्द्र श्रीवास्तव, मुरारी मित्तल, अरूण बंसल, अनूप उदेनिया, जितेन्द्र जायसवाल, राजकुमार गुप्ता, योगेश मिश्रा, राजकुमार, अंकुर गोयल सहित सम्मानित वरिष्ठ जन उपस्थित रहे। इस दौरान उन्होंने सभी मतदाताओं से आग्रह किया कि वे 07 मई को भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करें।

जिन्होंने प्राण प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराया,उन्हें ठुकरा दो: सुरेश पचौरी

पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने प्रबुद्धजनों की बैठक में कहा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। कांग्रेस पार्टी के अंदर राजनैतिक निर्णय गलत लिए जा रहे हैं। सर्जिकल स्ट्राइक के बहाने कांग्रेस के नेता देश की सेना की वीरता पर सवाल उठा रहे है। 500 सालों के संघर्ष के बाद अयोध्या में रामलला का मंदिर बना, लेकिन कांग्रेस नेताओं ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के महोत्सव के आमंत्रण को भी ठुकरा दिया। रामलला का अपमान करने वाली कांग्रेस को तुम लोग भी नकार दो। यह बात, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने कही। श्री पचौरी रविवार को भाजपा प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर के समर्थन में होटल सिद्धार्थ में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में विप्रजनों को

संबोधित करते हुए श्री पचौरी ने कहा कि ब्राह्मण का कर्म समाज को शिक्षित और संस्कारवान बनाकर राष्ट्र के नवनिर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन करना होता है। वर्तमान हालात में पीएम नरेन्द्र मोदी भारत का विश्व गुरू बनाने के लिए काम कर रहे है। उनके नेतृत्व में भारत का दुनिया में मान-सम्मान बढ़ा है। ऐसे में सशक्त राष्ट्र निर्माण और भारत का विश्व गुरू बनाने के लिए नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना जरूरी है। श्री पचौरी ने कहा कि मोदी सरकार ने उज्जवला, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि, पीएम आवास योजना, संबल जैसी योजनाओं से समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया है। सम्मेलन में विधायक रीति पाठक ने कहा कि पूर्ण समर्पित भाव से भारतमाता की सेवा के कार्य में जुटे नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए चुनावी यज्ञ में ब्राह्मण समाज आहूति देकर अपनी भूमिका का निर्वहन करें। सम्मेलन में पूर्व विधायक परशुराम मुदगल, रामनेरश शर्मा, चारुकृष्ण डण्डौतिया, राहुल कंषाना, बालकृष्ण शर्मा सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

मतदान सामग्री लेकर आज रवाना होंगे मतदान दल

ग्वालियर। ग्वालियर संसदीय क्षेत्र में शामिल जिले के सभी 6 विधानसभा क्षेत्रों के समस्त 1680 मतदान केन्द्रों में मतदान कराने के लिये तैनात किए गए मतदान दलों को ईवीएम सहित सभी प्रकार की मतदान सामग्री वितरित करने की सभी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं। मतदान दलों को आज 6 मई को एमएलबी कॉलेज से मतदान सामग्री का वितरण किया जायेगा। मतदान सामग्री वितरण के लिए कुल 123 सेक्टर बनाए गए हैं।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने बताया कि आज 6 मई को प्रातः 5 बजे प्रत्याशियों एवं उनके अभिकर्ताओं की मौजूदगी में ईवीएम के स्ट्रांग रूम खोले जायेंगे। गर्मी के मौसम को ध्यान में रखकर मतदान सामग्री वितरण स्थल पर विशेष सुविधायें जुटाई गई हैं। जिसमें शीतल हवा व फुहार देने वाले पंखे, स्प्रिंकलर की तर्ज पर ठण्डी फुहार की बारिश, बड़े-बड़े कूलर, हर सेक्टर में पर्याप्त शीतल जल और अन्य बुनियादी व्यवस्थायें की गई हैं। साथ ही सामग्री वितरण स्थल पर पर्याप्त कैन्टीन भी स्थापित की गई हैं। लोकसभा निर्वाचन कार्यक्रम के तहत 7 मई को मतदान के बाद एमएलबी कॉलेज में ही ईवीएम व मतदान सामग्री प्राप्त कर विधानसभा क्षेत्रवार बनाए गए स्ट्रांग रूम में कड़ी सुरक्षा के बीच रखी जायेगी। ज्ञात हो लोकसभा आम निर्वाचन कार्यक्रम के तहत ग्वालियर लोकसभा क्षेत्र में 7 मई को प्रातः 7 बजे से सायंकाल 6 बजे तक मतदान होगा। मतदान सामग्री वितरण के लिये एमएलबी कॉलेज में सभी 6 विधानसभा क्षेत्रों के लिये अलग-अलग स्थल निर्धारित किए गए हैं। विधानसभा क्षेत्रवार कलर कोडिंग भी की गई है, जिससे मतदान दल आसानी से अपने विधानसभा क्षेत्र में पहुँच सकें।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं मतदान सामग्री वितरण प्रभारी विवेक कुमार ने बताया कि प्रथम चरण में ईवीएम सहित सभी प्रकार की मतदान सामग्री वितरित करने के लिये विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र ग्वालियर ग्रामीण, भितरवार व डबरा (अजा) के मतदान दलों को प्रातरू 5 बजे बुलाया गया है। दूसरे चरण में प्रातः 8 बजे विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र ग्वालियर, ग्वालियर पूर्व व ग्वालियर दक्षिण के मतदान दलों को बुलाया गया है। मतदान दलों की हर सुविधा का ध्यान जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा रखा गया है। सभी मतदान दलों के लिये जिला निर्वाचन कार्यालय ने नगर निगम के सहयोग से वैलकम किट तैयार कराई जा रही हैं।

मतदान केन्द्रवार हुआ मतदान दलों का निर्धारण

ग्वालियर । जिले के सभी मतदान केन्द्रों पर मतदान कराने के लिये रविवार को मतदान दलों का फायनल रेण्डमाइजेशन किया गया। यहाँ कलेक्ट्रेट के सभागार में प्रेक्षककृष्णा आदित्य की मौजूदगी में कलेक्टर एवं

जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत रेण्डमाइजेशन कराया। रेण्डमाइजेशन के बाद यह तय हो गया है कि जिले के सभी 1680 मतदान केन्द्रों पर कौन-कौन से मतदान दल मतदान करायेंगे। मतदान दलों के रेण्डमाइजेशन के बाद माइक्रो ऑब्जर्वर्स का भी रेण्डमाइजेशन किया गया। ज्ञात हो क्रिटिकल मतदान केन्द्रों पर माइक्रो ऑब्जर्वर तैनात रहेंगे।

विधानसभा क्षेत्रवार मतदान दलों का रेण्डमाइजेशन किया गया है। साथ ही प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिये 10 प्रतिशत अतिरिक्त मतदान दलों का रेण्डमाइजेशन भी किया गया है। रेण्डमाइजेशन की कार्रवाई के दौरान जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार एवं जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों के एआरओ मौजूद थे। जिला सूचना विज्ञान अधिकारी सुश्री अभिलाषा जैन ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित सॉफ्टवेयर के माध्यम से रेण्डमाइजेशन की कार्रवाई को अंजाम दिया। विधानसभा क्षेत्रवार किए गए रेण्डमाइजेशन को प्रेक्षक श्री कृष्णा आदित्य की सहमति से लॉक किया गया।

प्रेक्षक आदित्य ने मतदान सामग्री वितरण स्थल का लिया जायजा

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा ग्वालियर संसदीय क्षेत्र में चुनाव पर निगरानी रखने के लिये नियुक्त प्रेक्षककृष्णा आदित्य ने रेण्डमाइजेशन की कार्रवाई के बाद एमएलबी कॉलेज पहुँचकर मतदान सामग्री वितरण के लिये विधानसभा क्षेत्रवार बनाए गए सभी सेक्टर का जायजा लिया।

मशाल थामकर मतदान की अलख जगाने निकले विद्यार्थी, जवान एवं अधिकारी

ग्वालियर । लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदाताओं की भागीदारी के उद्देश्य को लेकर शहर के हृदय स्थल महाराज बाड़ा से विशाल

मशाल यात्रा निकली। रविवार की सांध्य बेला में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान और पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीर सिंह के नेतृत्व में हाथों में मशाल थामकर शहर के एक दर्जन से अधिक महाविद्यालयों के विद्यार्थी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल व जिला पुलिस बल के जवान, प्रबुद्ध व जागरूक नागरिक एवं अधिकारी-कर्मचारी आगे बढ़े।

मतदाता जागरूकता अभियान के तहत निकली यह मशाल यात्रा महाराज बाड़ा से शुरू हुई और सराफा बाजार, गश्त का ताजिया, डीडवाना ओली, राम मंदिर, पाटनकर बाजार व दौलतगंज होकर गुजरी। मशाल यात्रा के माध्यम से यहाँ के व्यवसाइयों, रहवासियों एवं खरीददारी करने आए शहरवासियों को मतदान करने के लिये प्रेरित किया गया। जिले में स्वीप के तहत आयोजित हो रहे मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला में रविवार की शाम यह मशाल यात्रा निकाली गई। पूरी मशाल यात्रा के दौरान कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान एवं पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह पैदल चले। मशाल यात्रा का समापन ऐतिहासिक महाराज बाड़े पर हुआ। इस अवसर पर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती चौहान ने महाराज बाड़े पर बड़ी संख्या में मौजूद लोगों को 7 मई को अपने-अपने मतदान केन्द्र पर पहुँचकर लोकतंत्र की मजबूती के लिये मतदान करने की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार, उप जिला निर्वाचन अधिकारी संजीव जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक केएम सियाज व अपर आयुक्त नगर निगम मुनीष सिकरवार सहित जिला प्रशासन, नगर निगम व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। मशाल यात्रा में पेट्रोल पम्प यूनियन के लोगों ने भी सहभागिता की। इस आयोजन में नगर निगम की सहायक खेल अधिकारी श्रीमती विजेता चौहान व शिशिर श्रीवास्तव सहित नगर निगम के अन्य अधिकारियों का विशेष सहयोग रहा।

उठावनी

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी पूज्यनीय माताजी

श्रीमती शारदा देवी

धर्मपत्नी स्व. श्री राजनाथ शिवहरे (हवेली वाले)

कसाई पाड़ा बाड़ी जिला धौलपुर का स्वर्गवास दिनांक 5 मई 2024 को हो गया है जिनकी उठावनी दिनांक 06 मई 2024 को शाम 4:00 बजे से 5:00 बजे तक श्री राम वाटिका पीडब्लूडी के पास बायपास रोड बाड़ी पर संपन्न होगी।

शोकाकुल परिवार :- नवल-संगीता, राकेश-राधा, मुकेश-साधना, दीपक-गीता, विजय-निर्मला, विष्णु-कृष्णा, मोहन-नीतू, गोविंद-वैशाली (पुत्र पुत्रवधू) श्रीमति रजनी धर्मपत्नी स्व. श्री अवधेश गुप्ता आगरा (पुत्री)

एवं समस्त शिवहरे परिवार (हवेली वाले) बाड़ी जिला धौलपुर

9351539517, 9785645657, 9351861966,

स्वामित्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए श्रीसिद्धीविनायक प्रिन्टर्स, 26 बी, प्रेस कॉम्पलेक्स जोन -1 एम.पी. नगर भोपाल मध्यप्रदेश से मुद्रित एवं 5-अपूर्वा एन्क्लेव, अयोध्या बाईपास, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। आर.एन.आई नं. MPHIN/2007/18768
संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे 94251-26060, संयुक्त संपादक- नीरज शिवहरे 9827359400, सहायक संपादक- संजय माकवे 9425375149, भोपाल कार्यालय- 5 अपूर्वा एन्क्लेव, अयोध्या बाईपास, भोपाल सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा।